हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 8, अंकः 209, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 31 जनवरी, 2024 दिन बुधवार गाजीपुर/वाराणसी

फसलों के नुकसान का मुआवजा देने में लापरवाही बरतने पर सीएम योगी ने 17 जिलों के एडीएम से मांगी जानकारी

आपदाओं से क्षतिग्रस्त हुई फसलों के मुआवजे और अन्य राहत को लेकर की समीक्षा

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक बार फिर लापरवाह अधिकारियों के खिलाफ कड़ा एक्शन लिया है। क्षतिग्रस्त फसलों का मुआवजा देने में लापरवाही बरतने पर सीएम योगी ने नाराजगी जताते हुए 17 जिलों के अधिकारियों से जवाब तलब किया है। दरअसल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में विभिन्न आपदाओं से क्षतिग्रस्त हुई फसलों के मुआवजे और अन्य राहत को लेकर समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने त्रुटियों के कारण फसलों के नुकसान के दोबारा सत्यापन में लापरवाही और मुआवजा नहीं देने पर नाराजगी जताई और अधिकारियों को ऐसे मामलों में तत्काल सत्यापन कराकर किसानों को मुआवजा राशि प्रदान करने के स्पष्ट निर्देश दिये हैं। मालूम हो कि फसलों के नुकसान का सत्यापन करने के बाद प्रदेश सरकार की ओर से किसानों को मुआवजा राशि व अन्य राहत प्रदान की जाती है, लेकिन कुछ मामलों में तकनीकी कमियों के कारण कुछ किसानों की फसलों का सत्यापन पूर्ण नहीं हो सका। वहीं दोबारा उनका सत्यापन नहीं किया गया, जिससे कुछ किसान सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली राहत और मुआवजा राशि प्राप्त नहीं कर सके। इसी को लेकर सीएम योगी ने सख्ती जताते हुए अधिकारियों से जवाब तलब करने के साथ ही वंचित किसानों को तत्काल मुआवजा देने के निर्देश दिये हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने समीक्षा बैठक में पाया कि वित्तीय वर्ष 2021-22 और वर्ष 2022-23 में आपदाओं से क्षतिग्रस्त फसलों से प्रभावित हजारों किसानों को डाटा फिडिंग के दौरान आधार, खाता संख्या और डुप्लीकेसी के कारण मुआवजे का भुगतान नहीं किया जा सका जबकि उन्होंने अधिकारियों को दोबारा सत्यापन करा मुआवजे से वंचित किसानों को सहायता राशि देने के निर्देश दिये थे। सीएम योगी के निर्देश के बाद भी प्रदेश के कई जिलों के अधिकारियों ने क्षतिग्रस्त फसलों से प्रभावित किसानों का सर्वे नहीं कराया। इसकी वजह से समय से किसानों को मुआवजा नहीं मिल सका। इस पर उन्होंने नाराजगी जाहिर करते हुए कड़ी फटकार लगाई। इतना हीं नहीं उन्होंने लापरवाह 17 एडीएम एफआर से जवाब तलब करते हुए कड़ा एक्शन लेने के निर्देश दिये। सीएम योगी की नाराजगी के बाद हरकत में अधिकारियों ने अपने-अपने जिले में मुआवजे से वंचित किसानों का दोबारा सर्वे कराकर शासन से बजट की डिमांड की है। अपर मुख्य सचिव राजस्व सुधीर गर्ग ने बताया कि प्रदेश के विभिन्न जिलों से क्षतिग्रस्त फसलों से प्रभावित वंचित किसानों को तत्काल मुआवजा देने के लिए डिमांड के अनुसार धनराशि उपलब्ध कराई जा रही है। अभी तक 35 करोड़ से अधिक की धनराशि का भुगतान किया जा चुका है। साथ ही विभिन्न जिलों के जिलाधिकारियों को जल्द से जल्द मुआवजे से छुटे किसानों का सत्यापन कराकर धनराशि के डिमांड के निर्देश दिये गये हैं ताकि कोई भी किसान इससे वंचित न रह जाए।

अपर मुख्य सचिव राजस्व ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर 17 जिलों के एडीएम एफआर से लापरवाही पर जवाब तलब किया गया है। इनमें अलीगढ़, हाथरस, बाराबंकी, मऊ, बरेली, बदांयू, अंबेडकरनगर, शाहजहांपुर, महोबा, देवरिया, कुशीनगर, महाराजगंज, झांसी, ललितपुर, गाजियाबाद, बिजनौर और कौशांबी के एडीएम एफआर शामिल हैं। सभी एडीएम को एक हफ्ते में अपना जवाब शासन को उपलब्ध कराने के निर्देश दिये गये हैं। उन्होंने बताया कि सभी एडीएम से जवाब मिलते ही रिपोर्ट मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

बापू की पुण्यतिथि पर सीएम योगी ने किया याद, दी श्रद्धांजलि; बोले- मानवता के अप्रतिम प्रतीक

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर जीपीओ स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। इस दौरान बच्चों ने बापू की पुण्यतिथि पर स्वरांजलि दी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर लखनऊ के जीपीओ पार्क में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इससे पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोशल मीडिया पर बापू को याद किया। उन्होंने अपने एक्स हैंडल पर लिखा, 'मानवता के अप्रतिम प्रतीक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दी। पूज्य बापू के विचार 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' और 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प की सिद्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उनकी दी गई शिक्षा में रामराज्य और विश्व शांति की कामना का भाव अंतर्निहित है। कार्यक्रम में डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, मंत्री स्वत्रंतदेव सिंह, मेयर सुषमा खर्कवाल, एमएलसी महेंद्र सिंह आदि ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर जीपीओ पार्क, लखनऊ स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

सऊदी अरब में गाजीपुर निवासी दो युवकों की फैक्ट्री में जलकर मौत

प्रखर गाजीपुर। जिले के खानपुर निवासी आजाद अली (38) और उसके पड़ोसी अबरार अंसारी (40) सउदी अरब के रियाद में एक कंपनी में काम करते थे। दोनों करीब 22 माह पहले ही घर से नौकरी करने के लिए गए थे और ईद पर घर आने की बात कर रहे थे। जानकारी के अनुसार सऊदी अरब के रियाद स्थित एक फैक्ट्री में रविवार को आग लग गई थी। जहां काम कर रहे खानपुर

नौ बच्चों के सिर से उठा पिता का साया

निवासी दो युवकों की झुलसकर मौत हो गई। दोनों पड़ोसी हैं। घटना की जानकारी देर रात मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया है। परिजन शव लाने की कोशिश में लगे हैं। खानपुर निवासी आजाद अली (38) और उसके पड़ोसी अबरार अंसारी (40) सउदी अरब के रियाद में एक कंपनी में काम करते थे। परिजनों के मुताबिक, दोनों करीब 22 माह पहले ही घर से नौकरी करने के लिए गए थे और ईद पर घर आने की बात कह रहे थे। परिजनों के मुताबिक रविवार को फैक्ट्री में आग लग गई, जिसमें दोनों की झुलसकर मौत हो गई। सूचना पर वहां नौकरी कर रहे आजाद अली के बहनोई जमालुद्दीन और अबरार का भाई मौके पर पहुंचकर दोनों की शिनाख्त की। साथ ही परिवार के लोगों को फोन से घटना की जानकारी दी। मौत की सूचना मिलते ही दोनों के घर कोहराम मच गया। आजाद के पड़ोसी शमशेर अली ने बताया की दोनों नौकरी के लिए करीब 22 माह पहले ही गए थे। ईद पर दोनों अपने घर आने वाले थे। शव लाने के लिए आजाद के बहनोई जमालुद्दीन और अबरार के भाई कानूनी कार्रवाई करने का प्रयास कर रहे हैं। पूर्ण होने पर शव वहां से यहां लाया जाएगा। आजाद और अबरार की मौत से परिवार में जहां कोहराम मचा हुआ है, वहीं गांव में मातमी सन्नाटा पसर गया है। दोनों की मौत से नौ बच्चों के सिर से पिता का साया उठ गया है, जिनके भविष्य को लेकर गांव के भी लोग चिंतित हैं।आजाद दो भाइयों में सबसे बड़ा है। छोटा भाई घर पर ही रहता है। पिता बद्रे आलम की पहले ही मौत हो चुकी है। परिवार की जिम्मेदारी आजाद पर ही थी। उधर, मौत की खबर सुनकर उसकी पत्नी सुल्तान, मां मेहरूनिशा और उनकी पांचों पुत्रियां हैं। वहीं, अबरार चार भाइयों में सबसे बड़ा है। उसके पिता मुख्तार अंसारी की पहले मौत हो चुकी है। पत्नी सन्नो बेगम, मां अमीना बेगम के अलावा दो बेटे और दो बेटियां है, जो घर पर ही रहते थे। घटना की जानकारी के बाद दोनों के परिवार के लोगों का रो-रोकर बुरा हाल है। नायब तहसीलदार सैदपुर विजय कांत पांडेय ने बताया कि खानपुर गांव के दो युवकों के सऊदी अरब के रियाद में जलकर मरने की सूचना मिली है। लेखपाल को गांव भेजकर रिपोर्ट तैयार कराई गई है। यदि शासन से दोनों के संबंध में कोई रिपोर्ट मांगी जाएगी तो तत्काल उपलब्ध करा दिया जाएगा।

इमरान खान और शाह महमूद कुरैशी को 10 साल जेल की सजा, गोपनीय सूचना लीक करने के दोषी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान और पूर्व विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी को गोपनीय सूचना लीक करने के मामले 10-10 साल जेल की सजा सुनाई गई है। दोनों को ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट के तहत गठित की गई विशेष अदालत ने गोपनीय सूचना लीक करने का दोषी पाया। इमरान खान (71 वर्षीय) और शाह महमूद कुरैशी (67 वर्षीय) रावलपिंडी की अडियाला जेल में बंद हैं। जेल से ही इमरान खान और शाह महमूद कुरैशी अदालत की सुनवाई में वर्चुअली शामिल हुए। इमरान खान की पार्टी पीटीआई ने इस फैसले की कड़ी आलोचना की है। पीटीआई ने बयान जारी कर कहा है कि उनकी कानूनी टीम इस फैसले को उच्च अदालत में चुनौती देगी। पार्टी ने आरोप लगाया कि इस मामले की सुनवाई के दौरान मीडिया या आम जनता को शामिल नहीं होने दिया गया और जल्दबाजी में फैसला सुनाया गया है। पीटीआई ने कहा कि मार्च-अप्रैल 2022 को जो हुआ, उसे कोई भी अदालती सुनवाई नहीं बदल सकती। इस मामले में कानून का मजाक उड़ाया गया है। पार्टी ने लोगों से 8 फरवरी को होने वाले आम चुनाव में 'हकीकी आजादी' के लिए वोट करने की अपील की। पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ पार्टी के चीफ इमरान खान को एक जनसभा के दौरान गोपनीय कूटनीतिक दस्तावेज को सार्वजनिक करने का दोषी पाया गया। इमरान खान के प्रधानमंत्री पद पर रहने के दौरान यह घटना घटी थी। जिस दस्तावेज को सार्वजनिक किया गया, उसे अमेरिका स्थित पाकिस्तानी दूतावास द्वारा भेजा गया था। इमरान खान के पास से वह दस्तावेज कथित तौर पर बरामद नहीं हुआ है। इमरान खान ने गोपनीय दस्तावेज सार्वजनिक करते हुए आरोप लगाए थे कि अमेरिका के इशारे पर उनकी सरकार को गिराने की साजिश रची जा रही है। इस घटना के कुछ समय बाद ही अप्रैल 2022 में इमरान खान की सरकार को अविश्वास मत के जरिए सत्ता से बेदखल कर दिया गया था। इमरान खान के सत्ता से बाहर होने के बाद से उनके खिलाफ अब तक 150 से ज्यादा मामले दर्ज हो चुके हैं।

स्कूल वैन, कैंटर और रोडवेज बस की भिड़ंत छात्र समेत तीन की मौत, छह बच्चे घायल

बदायूं। उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले में भीषण सड़क हादसा हुआ है। उझानी कोतवाली क्षेत्र में बरेली-मथुरा हाईवे पर मंगलवार को बच्चों को स्कूल ले जा रही वैन सामने से आ रहे कैंटर से टकरा गई। इसी दौरान रोडवेज बस भी पीछे से टकरा गई। हादसे में स्कूल वैन चालक उमेश और उसका डेढ़ साल का बेटा दुष्यंत, स्कूल के छह वर्षीय छात्र आलेख की मौत हो गई। छह बच्चे घायल हुए हैं। घायलों को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। सूचना मिलते ही डीएम, एसएसपी ने मेडिकल कॉलेज पहुंच कर घायल बच्चों का हाल जाना। जानकारी के मुताबिक गांव जुनैया निवासी उमेश (28) उझानी स्थित कैप्टन गजराम सिंह इंटर कॉलेज की वैन चलाता था। मंगलवार सुबह वह फूलपुर गांव से वैन से बच्चों को लेकर स्कूल जा रहा था। करुआ पुल से पहले वैन की टक्कर सामने आ रहे कैंटर से हो गई। इसी दौरान पीछे से आई रोडवेज बस भी दोनों वाहनों से टकरा गई। हादसा होते ही चीख-पुकार मच गई। राहगीरों की सूचना पर थाना पुलिस पहुंची। घायलों को मेडिकल कॉलेज में भिजवाया। मेडिकल कॉलेज में चिकित्सकों ने स्कूल वैन चालक उमेश, उसके पुत्र दुष्यंत और छात्र आलेख पुत्र तेजपाल निवासी फूलपुर को मृत घोषित कर दिया। बताया गया है कि वैन चालक उमेश की गोद में उसका बेटा था। हादसे में छह बच्चे

घायल हुए हैं। इनमें स्वाति नाम की बच्ची की हालत बेहद नाजुक है। उसे सैफई मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। एसएसपी आलोक प्रियदर्शी ने बताया कि स्कूल वैन चालक और उसके डेढ़ साल के बेटे समेत एक अन्य छात्र की मौत हुई है। वैन, कैंटर व रोडवेज बस को पुलिस में कब्जे में लिया है। घटना की जांच कराई जा रही है।

हेमंत सोरेन के दिल्ली आवास से भारी मात्रा में नकदी बरामद, ईडी ने जब्त की लग्जरी कार

नई दिल्ली। ईडी ने सोमवार को झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन के दिल्ली स्थित आवास पर छापेमारी की थी। इस छापेमारी के दौरान झारखंड सीएम हेमंत सोरेन को मौके पर नहीं मिले, लेकिन ईडी की टीम ने भारी मात्रा में बंगले से नकदी बरामद की है। ईडी के अधिकारियों ने बताया कि हेमंत सोरेन के बंगले से 36 लाख रुपये नकद बरामद किए गए, साथ ही दो लग्जरी कार भी जब्त की गई हैं। ईडी ने दक्षिणी दिल्ली स्थित हेमंत सोरेन के बंगले पर छापेमारी की और ईडी की टीम करीब 13 घंटे तक बंगले में मौजूद रही। ईडी की टीम झारखंड में जमीन घोटाले में हुई कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में पूछताछ के लिए हेमंत सोरेन के बंगले पर पहुंची थी। ईडी ने बंगले से नकदी के साथ ही एक हरियाणा नंबर की बीएमडब्लू कार और एक अन्य कार के साथ ही कुछ अहम दस्तावेज भी बरामद किए हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, हेमंत सोरेन ने ईडी को बताया है कि वह बुधवार को रांची स्थित आवास पर मिलेंगे। झारखंड की सत्ताधारी पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपने सभी विधायकों को रांची नहीं छोड़ने को कहा है। साथ ही जेएमएम ने राज्य के मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य पर चर्चा के लिए मंगलवार को रांची में अहम बैठक भी बुलाई है। वहीं भाजपा ने झारखंड सीएम हेमंत सोरेन को भगोड़ा बता दिया है और सीएम के बारे में जानकारी देने वाले को 11 हजार रुपये इनाम देने का भी एलान कर दिया है। भाजपा ने सीएम राज्य की इज्जत मिट्टी में मिलाने का भी आरोप लगाया। जमीन घाटाले में पूछताछ के लिए ईडी हेमंत सोरेन को कई बार समन जारी कर चुकी है। हालांकि कई समन जारी होने के बाद भी हेमंत सोरेन ईडी के सामने पेश नहीं हुए। बीते दिनों ईडी की टीम ने हेमंत सोरेन से रांची स्थित उनके सरकारी आवास पर कई घंटे पूछताछ की थी। इसके बाद ईडी ने फिर से समन जारी कर 29 या 30 जनवरी को पूछताछ के लिए पेश होने को कहा था। शनिवार को हेमंत सोरेन के दिल्ली पहुंचने की जानकारी सामने आयी, जिसके बाद ईडी की टीम दिल्ली स्थित हेमंत सोरेन के आवास पर उनसे पूछताछ के लिए पहुंची थी, लेकिन हेमंत सोरेन वहां भी नहीं मिले।

लालू के बाद अब तेजस्वी यादव पहुंचे ईडी के दफ्तर समर्थकों ने कार को घेरा, समर्थन में नारेबाजी की

पटना। नौकरी के बदले जमीन घोटाला मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के सवालों का जवाब देने के लिए पूर्व डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव पहुंचे चुके हैं। तेजस्वी यादव अपने आवास से सीधा ईडी के दफ्तर पहुंचे। यहां राजद समर्थकों ने उनकी गाड़ी को घेर लिया और उनके समर्थन में नारेबाजी करने लगे। काफी मशक्कत के बाद तेजस्वी यादव ईडी के दफ्तर पहुंचे। तेजस्वी नौकरी के बदले जमीन घोटला मामले में ईडी के सवालों का जवाब देंगे। कहा जा रहा है ईडी की टीम ने 60 से अधिक सवालों की लिस्ट तैयार की है। एक दिन पहले यानी सोमवार को तेजस्वी यादव के पिता और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के पटना स्थित दफ्तर में पेश होना पड़ा था। सोमवार को भी राजद समर्थक ईडी दफ्तर के बाहर जुट गए थे और केंद्र सरकार के विरोध में नारेबाजी करने लगे थे। राजद समर्थकों ने आरोप लगाया कि लालू यादव बीमार हैं। उन्हें जान बूझकर परेशान करने की कोशिश हो रही है। पूरे 10 घंटे तक बाहर यह डर कायम था कि कहीं उन्हें गिरफ्तार तो नहीं कर लिया जाएगा। दरअसल, नौकरी के बदले जमीन घोटाला केस में पूछताछ के लिए लालू प्रसाद और उनके बेटे तेजस्वी यादव को पूछताछ के लिए बुलाया था। लालू को 29 जनवरी और तेजस्वी यादव को 30 जनवरी को पेश होने कहा गया था।

आरोप है कि रेल मंत्री रहते हुए लालू यादव इस घोटाले में शामिल थे। यह घोटाला 2004 से 2009 के बीच किया गया था, जहां कई लोगों को रेलवे के विभिन्न जोनों में ग्रुप-डी के पदों पर नौकरियां दी गई थीं। बदले में इन लोगों ने अपनी जमीन तत्कालीन रेलवे मंत्री लालू यादव के परिवार के सदस्यों और एक संबंधित कंपनी एके इंफोसिस्टम के नाम कर दी थी।

स्लीपर वंदे भारत-अमृत भारत ट्रेन पर रहेगा फोकस, गाड़ियों में लगेगी टक्कर विरोधी तकनीक

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण एक फरवरी को अंतरिम बजट पेश करने जा रही हैं। इस बजट में वित्त मंत्री भारतीय रेलवे को लेकर भी कुछ बड़े एलान कर सकती हैं। आम यात्रियों को तेज, सुरक्षित और आरामदायक सफर के लिए दोनों प्रकार की वंदे भारत ट्रेनों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। रेलवे से जुड़े सूत्रों का कहना है कि स्लीपर वंदे भारत ट्रेन चलाने के लिए आईसीएफ चेन्नई में कोच निर्माण का काम तेजी से चल रहा है। रेलवे की प्रीमियम राजधानी एक्सप्रेस ट्रेनों की जगह पर स्लीपर वंदे भारत ट्रेन चलाई जाएगी। जबकि शताब्दी एक्सप्रेस के स्थान पर वंदे भारत ट्रेन पहले ही चलाई जा रही है। अभी 80 से ज्यादा वंदे भारत दौड़ रही है। रेलवे पुश-पुल तकनीक वाली अमृत भारत ट्रेनों की संख्या बढ़ाने के लिए इनके कोच और नए इंजनों का उत्पादन करेगी। रेलवे के सूत्रों ने कहा कि पिछले बजट में कुल पूंजीगत व्यय 2.60 लाख करोड़ रुपये था। इस अंतरिम बजट में 3.2 लाख करोड़ रुपये का पूंजीगत व्यय का प्रावधान हो सकता है। यह पिछले वर्ष के बजट की इसी अवधि की तुलना में लगभग 33 फीसदी अधिक है। रेलवे

अफसरों का कहना है कि दिसंबर 2023 तक पूंजीगत व्यय से 1,95,929.97 करोड़ रुपये के काम किए गए हैं। 3.2 लाख करोड़ रुपये की बजटीय सहायता से दिल्ली-मुंबई, दिल्ली-कोलकाता सहित अन्य व्यस्त रेलमार्गों पर टक्कर विरोधी तकनीक कवच लगाने का काम किया जाएगा। इसके अलावा उक्त दोनों रेलमार्गों पर वंदेभारत ट्रेनों को सेमी हाई स्पीड 160 से 200 किलोमीटर प्रति घंटा पर चलाने के लिए सुधार किया जाएगा। देश की पहली सेमी हाई स्पीड स्लीपर वंदेभारत ट्रेन इन दोनों पर चलाने की योजना है। इसके अलावा इस बजटीय सहायता से रेलवे के बुनियादी ढांचे को मजबूत बनाने के कार्य जैसे नई रेल लाइनें, लाइनों का दोहरीकरण, तिहरीकरण आदि के कार्य किए जाएंगे। इससे यात्री ट्रेनों की रफ्तार गति पकड़ेगी।

खरगे के बयान पर भड़के भाजपा सांसद, कहा- पंडित नेहरू बिना वोट पाए बने थे प्रधानमंत्री

नई दिल्ली। कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए एक बयान जारी किया है। उनके इस बयान के बाद भाजपा ने पलटवार किया है। दरअसल, मल्लिकार्जुन खरगे ने अपने बयान में कहा कि अगर 2024 में भी पीएम मोदी सत्ता में रहे तो भारत में कभी चुनाव नहीं होगा। उनके इस बयान के बाद भाजपा सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने प्रतिक्रिया दी है। सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा, मल्लिकार्जुन खरगे ने जो भी कुछ कहा, 'उसका वास्तविक अर्थ यह है कि लोकतंत्र की आड़ में मतदाताओं ने जिन्हें पिछले चुनाव में पूरी तरह से नकार दिया था, उनपर अब ग्रहण लग गया है। अब सच्चे लोकतंत्र का उदय होने वाला है। पंडित नेहरू जीरो वोट पाकर प्रधानमंत्री बने थे, श्रीमती इंदिरा गांधी और राजीव गांधी कैसे प्रधानमंत्री बने थे, ये भी सबको मालूम है।' उन्होंने आगे कहा, '2019 के लोकसभा चुनावों में उत्तर से दक्षिण तक देश की प्रबुद्ध जनता ने जो लोकतंत्र के नाम पर राजतंत्र चला रहे थे, उन्हें सबक सिखाने का काम किया। कश्मीर में अब्दुल्ला या मुफ्ती परिवार, चुनाव हार गए। पंजाब में बादल परिवार चुनाव हारा, हरियाणा में हुड्डा परिवार चुनाव हारा, अशोक गहलोत जी का बेटा चुनाव हारा, उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव की पत्नी चुनाव हारीं, चौधरी अजीत सिंह और उनके बेटे चुनाव हारे, बिहार में लालू प्रसाद यादव जी की बेटी चुनाव हारीं,

तेलंगाना में केसीआर जी की बेटी चुनाव हारीं।' सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि हाल में संपन्न विधानसभा चुनावों में पूरी तरह ध्वस्त होने के बाद विपक्ष के इस तथाकथित इंडिया गठबंधन की यारी अब छिन्न-भिन्न हो गई है। इस बौखलाहट में अब कांग्रेस पार्टी आपत्तिजनक बयान देने पर आ गई है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने आधारहीन और अनर्गल बयान दिया है।

संपादकीय

सहज न्याय की राह

यह सुखद ही है कि देश की न्यायपालिका व कार्यपालिका इस बात को लेकर प्रतिबद्ध हैं कि अदालतों पर मुकदमों का बोझ घटाकर आम लोगों को सहज-सरल न्याय उपलब्ध कराया जाए। न्यायिक तंत्र में वंचित समाज व महिलाओं को न्यायसंगत प्रतिनिधित्व मिल सके। यह सुखद संकेत सुप्रीम कोर्ट की 75वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम से मिला, जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डी.वाई. चंद्रचूड़ ने न्यायिक व्यवस्था में विश्वास बढ़ाने और मुकदमों का दबाव घटाने पर बल दिया। प्रधानमंत्री के इस तर्क से सहमत हुआ जा सकता है कि सशक्त न्याय व्यवस्था से न केवल लोकतंत्र को मजबूती मिलती है, बल्कि विकसित भारत को इससे आधार मिलेगा। न्यायपालिका और कार्यपालिका इस बात को लेकर गंभीर नजर आ रही हैं कि कैसे अदालतों में लंबित मुकदमों का बोझ घटे और आम आदमी को शीघ्र न्याय मिल सके। निस्संदेह, पिछले वर्ष केंद्र सरकार द्वारा तीन नये आपराधिक न्याय कानून बनाए जाने से भारतीय न्यायिक व्यवस्था मौजूदा चुनौतियों से मुकाबले में सक्षम हुई है। यह विडंबना है कि हम आजादी के सात दशक बाद भी देश प्रेमियों के खिलाफ बनाये गये ब्रिटिश कानूनों का बोझ ढोते रहे हैं। निस्संदेह, इस कदम से भारत की कानूनी, पुलिस और जांच प्रणाली न्यायिक प्रक्रिया को गति दे सकेगी। हालांकि, सरकार दावा कर रही है कि इस दिशा में क्षमता निर्माण और कानूनों के न्यायपूर्ण ढंग से क्रियान्वयन के लिये सरकारी कर्मियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके बावजूद नये कानूनों के उपयोग व सीमाओं से आम लोगों को अवगत कराना जरूरी है। निश्चित रूप से भारतीय न्यायिक व्यवस्था के प्रति भरोसा जगाने के लिये न्यायिक प्रणाली की विसंगतियों को दूर करने की जरूरत भी है। जिस ओर 75वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य न्यायाधीश ने ध्यान दिलाया। उन्होंने कहा भी कि एक संस्था के रूप में प्रासंगिक बने रहने के लिये न्यायपालिका की क्षमता का विस्तार जरूरी है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने इस मौके स्थगन की संस्कृति और लंबी छुट्टियों के मुद्दे की ओर भी ध्यान खींचा। साथ ही उन्होंने वंचित समाज के लोगों को न्यायिक व्यवस्था में प्रतिनिधित्व दिये जाने की जरूरत बतायी। हालांकि, देश की शीर्ष न्यायिक व्यवस्था में महिलाओं का प्रतिनिधित्व पर्याप्त नहीं है, लेकिन मुख्य न्यायाधीश ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि जिला न्यायपालिका में महिलाओं की 36 फीसदी भागीदारी सुनिश्चित हुई है। जो कालांतर में शीर्ष स्तर पर लैंगिक समानता की राह बनाएगी। बहरहाल, राजग सरकार ने न्यायिक प्रणाली के प्रति भरोसा जगाने के लिये कई बदलावकारी फैसले लिये हैं। जिनमें जन विश्वास बिल का प्रधानमंत्री ने बार-बार जिक्र किया है। कहा जा रहा है कि इससे भविष्य में भारतीय न्यायिक प्रणाली पर बोझ कम हो सकेगा। बीते साल केंद्रीय कैबिनेट ने जन विश्वास विधेयक में संसदीय समिति द्वारा दिए गए सुझावों को मंजूरी प्रदान की थी। दरअसल, जन विश्वास (प्रावधान संशोधन) विधेयक 2023 को जीवन व कारोबार सुगमता को बढ़ावा देने वाला बताया जा रहा है। इसके अंतर्गत 42 अधिनियमों में 183 प्रावधानों में संशोधन करके छोटी गलतियों को अपराध की श्रेणी से हटाने का प्रावधान किया गया है। इसके अंतर्गत 19 मंत्रालयों से जुड़े अधिनियमों के प्रावधानों में संशोधन की बात कही गई है। संसद की संयुक्त समिति ने विधायी और विधि मामलों के विभागों के अलावा 19 मंत्रालयों से प्रावधानों को हटाने को लेकर विस्तृत चर्चा की थी। दरअसल, संसदीय समिति ने केंद्र सरकार को कारोबार तथा जीवनयापन को सुगम बनाने के लिये जन विश्वास विधेयक की तर्ज पर छोटे मामलों को अपराध की सूची से बाहर निकालने का सुझाव दिया था। जिसके लिये राज्यों व केंद्रशासित प्रदेशों को प्रोत्साहन देने का सुझाव भी दिया था। समिति का सुझाव था कि इन प्रावधानों में संशोधन पिछली तिथियों से हो ताकि न्यायालय को लंबित मामलों को निपटाने में सहायता मिल सके। संसदीय समिति का अन्य सुझाव था कि मुकदमों में बढ़ोतरी से बचने के लिये कारावास के बजाय मौद्रिक दंड का प्रावधान किया जाए। साथ ही, छोटे-मोटे मामलों को अपराध की श्रेणी से बाहर किया जाए।

आकर्षक पैकेज में रोगवर्धक प्रोसेस्ड फूड

जब भी मैंने कृषि उपज के लिए गारंटीशुदा कीमत का सवाल उठाया, ट्रोल के एक वर्ग ने हमेशा मुझे यह कहते हुए घेर लिया कि उपभोक्ता को खराब गुणवत्ता वाले कृषि उत्पादों के लिए भुगतान क्यों करना चाहिए। बड़े पैमाने पर शहरी आबादी में किसानों के प्रति अंतर्निहित दुराग्रह के अलावा, शायद वे जिस मुद्दे को उठाने की कोशिश कर रहे हैं वह यह है कि सारी कृषि उपज समान गुणवत्ता वाली नहीं होती है जो न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदे जाने के काबिल हों। दरअसल, वे यह नहीं जानते कि एमएसपी की डिलीवरी भी किसानों की उपज की गुणवत्ता पर आधारित है। उदाहरण के लिए, बेहतरीन चावल की कीमत सामान्य किस्मों की तुलना में अधिक है। इसी तरह चीनी की हाई रिकवरी वाले गन्ने के लिए, चीनी मिलें तुलनात्मक रूप से अधिक रेट देती हैं। यहां तक कि ए-ग्रेड के अंडों की कीमत भी सामान्य ग्रेड वालों से अधिक है। इसके लिए अभी भी और अधिक किया जा सकता है, लेकिन कम से कम यह उतना मामूली नहीं है जितना शहरी शिक्षित लोग हमें विश्वास दिलाना चाहते हैं। फिर भी, जो लोग किसानों को सही कीमतों से वंचित करने के लिए बार-बार कृषि उपज की क्वालिटी की बात करते हैं, वे ही लोग हैं जिन्हें खराब गुणवत्ता के लिए भुगतान करने के लिए खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों द्वारा धोखा दिया जाता है। वास्तव में, वे निम्न गुणवत्ता वाले उत्पाद बहुत ज्यादा कीमत पर खरीदते हैं, जो प्राथमिक उत्पादक को उनके द्वारा भुगतान की गई कीमत से कई गुणा अधिक होता है। केवल इसलिए कि प्रोसेस्ड फूड आकर्षक पैकेज में आता है, शायद कोई फिल्म स्टार या क्रिकेटर उस उत्पाद का विज्ञापन भी करता है, इसका मतलब यह नहीं है कि उपभोक्ता जो खरीदता है वह गुणवत्ता मानकों पर खरा उतरता है। यह वास्तव में बहुत बुरी बात है। औसत उपभोक्ता, जो स्वास्थ्यवर्द्धक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की तलाश में मॉल्स या सुपरमार्केट में जाता है, यह अनुभव करने में नाकाम रहता है कि प्रोसेस्ड फूड प्रोडक्ट्स में से अधिकांश जो अलमारियों में लाइनों में सजा है झ्र एक सुपर मार्केट स्टोर में लगभग 40,000 ऐसे प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ हैं- वे अंततः जो खरीदते हैं वह सेहत को नुकसान पहुंचाने वाला है। अगर मुझे खराब क्वालिटी का कहने की अनुमति दी जाए तो यह अक्सर समाज में होने वाली अधिकांश बीमारियों की जड़ है। जैसा कि मैंने अक्सर कहा है कि यदि बतौर विक्रेता आप जहर को आकर्षक पैकेजिंग के साथ पेश करना जानते हैं तो संभावना है कि उपभोक्ता इसे खरीदने के लिए इच्छुक मिलें! एक आंखें खोलने वाला अध्ययन जो ओपन-एक्सेस ट्रांसडिसिप्लिनरी जर्नल, ग्लोबलाइजेशन एंड हेल्थ में 1 दिसंबर, 2023 को प्रकाशित हुआ, मैं चाहता हूं कि हर उपभोक्ता इसे पढ़े। उस अध्ययन के तहत लॉरेन एट अल ने यह पता लगाने के लिए एक पद्धति विकसित की है कि प्रसंस्कृत भोजन और पेय की बिक्री की कितनी मात्रा सेहत के लिए फायदेमंद की श्रेणी में आती है और कितनी अस्वास्थ्यकर की कैटेगरी में। उन्होंने शीर्ष 20 वैश्विक खाद्य दिग्गज कंपनियों द्वारा निर्मित 1,294 ब्रांडों के 35,550 उत्पाद चुने। ये कंपनियां सात देशों- अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया से ली गई थीं- और आम तौर पर कोई भी यह मानेगा कि इन देशों की बेचे जा रहे प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता पर पैनी नजर होगी।

अहिंसा का विश्वप्रसिद्ध महानतम अग्रदूत अंततः हिंसा का शिकार हो गया

अपने मन, मस्तिष्क और हृदय में प्रतिष्ठित मानवतावादी, सर्वग्राही , सर्वत्रव्यापी और सर्वत्र प्रचलित नैतिक मूल्यों, आदर्शो, मूल्यों, मान्यताओं विचारों और सिद्धांतों के लिए सतत संघर्ष करने वाले महात्मा गांधी ने अपने समस्त सामाजिक, राजनीतिक और वैचारिक संघर्षो , आन्दोलनो और परिवर्तनों के लिए सत्याग्रह को रामबाण की तरह अचूक रणनीति के रूप में अपनाया। एक सच्चे, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ सत्याग्रही के रूप में सत्य और अहिंसा को औजार बनाकर सत्याग्रह के माध्यम से आजीवन संघर्ष करने वाले महात्मा गाँधी अंततः कायरतापूर्ण हिंसा के शिकार हो गये। सत्याग्रह ही वह अचूक रणनीति थी जिसके बल पर महात्मा ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को जनता का आंदोलन बना दिया। इन समस्त आन्दोलनो से अंग्रेज किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये और भारत छोड़कर अपने देश वापस चलें गये। महात्मा गांधी ने सर्वप्रथम रंगभेद नीति के विरुद्ध सत्य और अहिंसा के माध्यम से दक्षिण अफ्रीका से सत्याग्रह आरम्भ किया। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद नीति के विरुद्ध संघर्ष से लेकर भाईचारा को समर्पित नोआखाली के आंदोलन तक एवं सम्पूर्ण भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, तथा अपने प्रत्येक मानवतावादी आन्दोलन और व्यापक सामाजिक परिवर्तनों के लिए किए गए आन्दोलनों में सत्य के साथ अहिंसा को सर्वोपरि महत्व दिया। वस्तुतः संसार के हर मनुष्य के मन, मस्तिष्क और हृदय से क्रूरता हिंसा,बर्बरता और दरिन्दगी जैसी पाशविक प्रवृत्तियों को पूरी तरह मिटाकर संसार के हर मनुष्य के मन ,मस्तिष्क और हृदय में दया, करूणा, परोपकार, समता ,ममता और सद्भावना का भाव भरने की पवित्र मंशा, संकल्पना और दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ सामाजिक और राजनीतिक जन-जीवन में पदार्पण करने वाले महात्मा गांधी अपनी राजनीतिक जीवन की अवसान बेला पर अंततः एक सिरफिरे, बहशी, दरिन्दे, संकीर्ण 'सतही' संकुचित एवं साम्प्रदायिक सोच के एक अतिउत्साहित, उन्मादी नाथूराम गोडसे की गोलियों के शिकार हो गये। हमारी सनातन परम्पराओ और पौराणिक मान्यताओं में किसी भी निहत्थे को छल, कपट प्रपंच और धोखे से मारना तीसरे दर्जे की कायरता, निर्लज्जता और निकृष्टता माना जाता है। सिरफिरे नाथूराम गोडसे जैसे कायरो को यह पता नहीं था कि-जो व्यक्तित्व , कृतित्व , आचरण और व्यवहार जब विचारधारा , संकल्पना, और सिद्धांत बन जाते हैं वे गोली बम बन्दूक तोप तलवार और मिसाइल से नहीं मरा करते हैं। सत्य अहिंसा दया करूणा परोपकार पर आधारित जब तक सभ्य सुसंस्कृत समरस समाज बनाने के लिए विश्व के किसी कोने में मानवतावादी आन्दोलन चलते रहेंगे तब तक उस आन्दोलन की चेतना और संकल्पना में महात्मा गाँधी जीवंत रहेंगे। महात्मा गांधी के अनुसार पवित्र साध्यों की प्राप्ति पवित्र साधनों से ही हो सकती है। साध्य के साथ साधन की पवित्रता पर बल देने के कारण महात्मा गांधी दुनिया के अन्य संघर्ष कताओं और क्रांतिकारियों से अलग नजर आते हैं। शारीरिक , सामरिक तथा शक्ति आधारित विजय के बजाय महात्मा गांधी हृदय परिवर्तन द्वारा नैतिक और स्थाई विजय पर विश्वास करते थे।

सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित , स्थापित, संचालित समस्त धर्मो में निहित मानवतावादी मूल्यों, मान्यताओं, आदर्शों और सिद्धांतों को पूरी ईमानदारी और निष्ठा से हृदयंगम और आत्मसात करने वाले महात्मा गाँधी घृणा हिंसा क्रूरता दरिन्दगी ईर्ष्या द्वेष कलह कलुष जैसी दुष्प्रवृत्तियो को पशुता का द्योतक मानते थे । जबकि दया करूणा परोपकार सहानुभूति सहकार सहयोग साहचर्य सहिष्णुता और आपसदारी जैसी नैतिक प्रवृत्तियों को मनुष्यता का द्योतक मानते थे। इसलिए सम्पूर्ण वैश्विक इतिहास में महात्मा गाँधी इकलौते ऐसे लडाके थे जो अपने देश की स्वाधीनता के साथ-साथ वैश्विक स्तर मानवतावादी मूल्यों की रक्षा के लिए भी संघर्ष कर रहे थे। विगत दो शताब्दियो में मानवता के लिए संघर्ष करने वाले वैश्विक महायोद्धाओ और महापुरुषों में अग्रपांक्तेय महात्मा गांधी के निधन से पुरी दुनिया शोकलहर में

डूब गयी। उनके निधन पर दुनिया के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि- महात्मा गांधी जिस अहिंसा की राजनीति के लिए आजीवन कृतसंकल्पित रहे उसी अहिंसा की राजनीति के शिकार हो गये। उस दौर के गहमा-गहमी और दंगा-फसाद से भरे माहौल और हिंसा -प्रतिहिंसा के वातावरण में भी महात्मा गाँधी ने व्यक्तिगत सुरक्षा लेने से मना कर दिया था। क्योंकि किसी भी प्रकार के बलप्रयोग को वह अनैतिक और पशुता का परिचायक मानते थे। तर्क बुद्धि विवेक और प्रज्ञा के आधार पर ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में चमत्कार और आविष्कार करने वाले सर आइजक न्यूटन और जेम्स मैक्सवेल की तस्वीर अपने पोर्ट्रेट में रखने वाले अल्बर्ट आइंस्टीन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलनों से इस कदर प्रभावित थे कि- महात्मा गाँधी के 75वें जन्म दिवस के अवसर पर उन्होंने कहा था कि- "आने वाली नस्लें शायद मुश्किल से ही विश्वास करेंगीं कि- हाड मांस से बना हुआ कोई ऐसा व्यक्ति इस धरती पर चलता-फिरता था"। अल्बर्ट आइंस्टीन महात्मा गांधी के महान मानवतावादी मूल्यों और सिद्धांतों और अहिंसा के आधार पर मानव मुक्ति के लिए उनके संघर्ष के तौर-तरीकों से गहरे रूप से प्रभावित थे। इसलिए अल्बर्ट आइंस्टीन ने सर आइजक न्यूटन और जेम्स मैक्सवेल की तस्वीर की जगह "अल्बर्ट श्वाइटजर और महात्मा गांधी " की तस्वीर अपने पोर्ट्रेट में लगा दी। उन्नीसवीं शताब्दी में होने वाले दो विश्व युद्धों की तबाहियों और बर्बादियों के वीभत्स दृष्यों ने भी अल्बर्ट आइंस्टीन के हृदय में महात्मा गाँधी व्यक्तित्व में आकर्षण पैदा किया था। आज जब राजनीति में लोगों की निष्ठा हासिल करने के लिए नेताओ द्वारा छल कपट प्रपंच, तरह-तरह के प्रलोभन ,नाना प्रकार की चतुराईयॉ और भावनात्मक धोखाधड़ी का खेल खेला जा रहा है तब ऐसे समय में महात्मा गांधी के ऊपर अल्बर्ट आइंस्टीन का यह विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि लोगों की निष्ठा राजनीति धोखेबाजी के धूर्ततापूर्ण खेल से नहीं जीती जा सकती बल्कि वह नैतिक रूप से उत्कृष्ट जीवन का जीवंत उदाहरण बन कर भी हासिल की जा सकती है। वस्तुतः छल कपट प्रपंच और धूर्तताओ से परिपूर्ण राजनीति में भी महात्मा गाँधी ने नैतिकता और सचरित्रता की वकालत किया और इसीलिए महात्मा गाँधी सम्पूर्ण वैश्विक राजनीति में इकलौते ऐसे राजनेता थे जो एक साथ भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महायोद्धा महानायक और महात्मा थे। उस दौर में दुनिया की सबसे ताकतवर हूकूमत ब्रिट्रिश सरकार से महात्मा बन कर भारतीय स्वाधीनता संग्राम का रण जीतने वाले वैश्विक मानवता के आधुनिक अग्रदूत महात्मा गाँधी को उनकी शहादत दिवस पर सत्य , अहिंसा, करूणा, दया, परोपकार और अन्य मानवतावादी मूल्यों में आस्था तथा निष्ठा रखने वाला हर हृदय स्मरण कर रहा हैं।

सामाजिक कुरीतियों, कुप्रथाओं और शासन प्रशासन द्वारा अधिरोपित कुरीतियों के विरुद्ध महात्मा गांधी द्वारा अपनाई गई संघर्ष की रणनीति सत्याग्रह को सबसे कारगर औजार माना जाता है। सम्पूर्ण विश्व में दूसरे गाँधी के नाम से मशहूर दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति डॉ नेल्सन मंडेला ने महात्मा गांधी द्वारा आविष्कृत सत्याग्रह के माध्यम से ही दक्षिण अफ्रीका में नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया और दक्षिण अफ्रीका में लोकतंत्र बहाल करने में सफल रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग साठ के दशक में मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने महात्मा गांधी के विचारों और संघर्ष की रणनीति से प्रभावित होकर अश्वेत समुदाय के साथ होने वाले भेदभावों के खिलाफ और उनके नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए सशक्त आंदोलन चलाया। जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमरीका में अश्वेत लोगों को गरिमामय जीवन की सुनिश्चितता प्राप्त हुई।महात्मा गांधी के सत्याग्रह की राजनीति और रणनीति की पुरी दुनिया आज भी कायल हैं। आधुनिक , आत्मनिर्भर, सर्वसमावेशी और खुशहाल भारत बनाने में महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता, महत्ता तथा सार्थकता आज भी बनी हुई हैं। उनकी सत्याग्रह की रणनीति को ईमानदारी अपनाकर समाज में विद्यमान विभिन्न विसंगतियों, कुप्रथाओं और कुरीतियों को दूर कर बेहतर समाज बना सकते हैं।

मनोज कुमार सिंह प्रवक्ता
लेखक/ साहित्यकार/उप-सम्पादक
कर्मश्री मासिक पत्रिका

निराशा को आशाजनक अवसरों में बदलने की खिड़की है 'परीक्षा पे चर्चा'

ललित गर्ग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा परीक्षा पे चर्चा के दौरान दिया गया उद्बोधन एवं गुरु मंत्र छात्रों के लिये ऐसा आलोक स्तंभ है जो भविष्य की अजानी राहों एवं परीक्षा के जटिल क्षणों में पांव रखते समय उस आलोक को साथ में रख लिया गया तो उनके मार्ग में कहीं भी अवरोध, तनाव एवं संकट नहीं आ सकेगा। क्योंकि मोदी के ये गुरुमंत्र उनकी समर्थता, सिद्धता, अनुभव एवं साधना से उपजे हैं जो छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों और अभिभावकों के लिये भी रामबाण औषधि की तरह हैं। बोर्ड परीक्षाओं को लेकर छात्रों के अंदर डर और तनाव दोनों होता है, ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बच्चों के भीतर से इस डर और तनाव को समाप्त करने के लिए हर साल परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम करते हैं। इस वर्ष भारत मंडपम, आईटीपीओ, नई दिल्ली में हुए इस अनूठे एवं प्रेरक कार्यक्रम में जहां तकरीबन 4,000 छात्रों ने हिस्सा लिया, वहीं लगभग 2.26 करोड़ रजिस्ट्रेशन हुए थे, जो एक रिकॉर्ड है। यह परीक्षा पर चर्चा का 7वां संस्करण है, जिसमें छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों के साथ प्रधानमंत्री मोदी ने बातचीत करते हुए परीक्षाओं को तनाव का कारण न बनने देने की सीख दी। इस विलक्षण प्रयोग एवं उपक्रम में छात्रों ने अपनी जिज्ञासाओं के पंख खोले। वे परीक्षा से जुड़े अनेक संदेहों, शंकाओं एवं डर को लेकर यहां आये, लेकिन लौटते समय उन चेहरों पर संतोष की झलक थी। उन्होंने कुछ अद्भुत या मौलिक, समाधानकारी एवं प्रभावी पाया या नहीं, लेकिन जितना पाया वह उनकी उम्मीद से अधिक था। वे ही नहीं, भारत के असंख्य छात्रों एवं परीक्षार्थियों के लिये यह आयोजन नवऊर्जा एवं नयी दिशाओं के उद्घाटन का माध्यम बना है, जहां से छात्रों के जीवन में व्यापक परिवर्तन, उत्साह एवं जिजीविषा की ज्योति प्रज्ज्वलित हुई है।

प्रधानमंत्री इस बात को बखूबी समझते हैं कि पढ़ाई और परीक्षा का तनाव छात्रों के लिए अभिशाप है। वे शिक्षा के स्तर को तो सुधार ही रहे हैं, लेकिन परीक्षा पे चर्चा के माध्यम से छात्रों का मनोबल भी बढ़ा रहे हैं ताकि परीक्षा तनावमुक्त हो और मोदी के गुरु मंत्रों का सीधा फायदा छात्रों को मिले। परीक्षा पे चर्चा की विशेषता यह है कि इससे जुड़े प्रतिभागी किसी खास वर्ग, क्षेत्र, उम्र, जाति या धर्म के न होकर भारत के सभी राज्यों से लेकर विदेश तक के जूनियर और सीनियर कक्षाओं के विद्यार्थी के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं के अभ्यर्थी होते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के संवाद की व्यापकता विद्यार्थियों द्वारा पूछे प्रश्नों के उत्तर में अपनी बात को केवल परीक्षा तक ही सीमित न कर उसे जीवन से जोड़ देती है। विद्यार्थी जीवन में आने वाली अनेक समस्याएं प्रायः किसी न किसी रूप में जीवन के दूसरे पड़ाव में भी जरूर आती हैं।

नरेन्द्र मोदी के शब्दों का जादू

और भारत की शिक्षा को ऊंचाई तक ले जाने की तड़प ने एक-एक छात्र एवं शिक्षक को भीतर तक हिला दिया। इस अभिक्रम को देख कुछ लोग तो आश्चर्य में डूब गये क्योंकि मोदी ने शुरूआत में ही कहा कि छात्र पहले से कहीं अधिक नवोन्मेषी हो गए हैं, इसलिये यह कार्यक्रम मेरे लिए भी एक परीक्षा की तरह है। उन्होंने माता पिता से कहा कि आपको किसी बच्चे की तुलना किसी दूसरे से नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह उसके भविष्य के लिए हानिकारक हो सकता है। कुछ माता-पिता अपने बच्चे के रिपोर्ट कार्ड को अपना विजिटिंग कार्ड मानते हैं, यह ठीक नहीं है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि प्रतिस्पर्धा और चुनौतियां जीवन में प्रेरणा का काम करती हैं, लेकिन प्रतिस्पर्धा स्वस्थ होनी चाहिए। इसके लिये उन्होंने प्रेरणा, आत्मविश्वास, एकाग्रता, आशा, उत्साह, समय और तनाव प्रबंधन आदि ऐसे अनेक विषयों पर बोला जो विद्यार्थी से लेकर आम व्यक्ति के जीवन को उजालने के लिये जरूरी है।

परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के दौरान मोदी से सवाल हुआ कि छात्रों को प्रेरित करने में शिक्षकों की क्या भूमिका होनी चाहिए और छात्रों को किस तरह से तनावमुक्त रखना चाहिए? मोदी ने कहा कि किसी भी शिक्षक और छात्र के बीच परीक्षा को लेकर सिर्फ नाता नहीं होना चाहिए, अगर ऐसा है तो उसे ठीक करने की जरूरत है। शिक्षक और छात्र का नाता पहले दिन से ही निरंतर प्रगाढ़ता से बढ़ते रहना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो परीक्षा के दिनों में तनाव की नौबत ही नहीं आएगी। उन्होंने कहा कि बच्चों के तनाव को कम करने में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। इसलिए शिक्षक और छात्रों के बीच हमेशा सकारात्मक रिश्ता रहना चाहिए। शिक्षक का काम सिर्फ जॉब करना नहीं, बल्कि जिंदगी को संवारना है, जिंदगी को सामर्थ्य देना है, यही परिवर्तन लाता है। उन्होंने कहा कि शिक्षक को सिलेबस से आगे बढ़कर छात्रों से संग रिश्ता बनाना चाहिए। इसी से छात्रों के उन्नत, सक्षम, प्रखर एवं चरित्रसम्पन्न जीवन की संभावनाओं का धरातल मजबूत होगा और इसी से वे वर्चस्वी और यशस्वी बनेंगे, उनकी रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा निखरेगी। संभवतः इसी से सशक्त भारत एवं विकसित भारत का सपना आकार ले सकेगा।

ग्रामीण छात्रों की पसंद विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की बजाय आर्ट्स विषय ही होना, शिक्षा के प्रति उपेक्षा एवं शिक्षकों की उदासीनता को ही दर्शा रहा है। समस्या गणित या भाषा नहीं है, ग्रामीण क्षेत्रों की पढ़ाई में यह पिछड़ापन अपने देश के लिए कोई नई बात नहीं। यह चुनौती बड़ी इसलिए है कि नवीन शिक्षा नीति घोषित होने के बावजूद स्कूली पढ़ाई की नियमित प्रक्रिया में इसका इलाज नहीं तलाशा गया है। जाहिर है, विशेष प्रयास करने पड़ेंगे, ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी अन्यथा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकॉनमी बनने की राह पर बढ़ रहे देश के लिये यह चुनौती एक अंधेरा ही है। इसके लिये शिक्षकों एवं छात्रों के रिश्ते को नये आकार में ढालने की अपेक्षा है। भारत जैसे देश में शिक्षा और उसके पढ़ाई के स्तर पर ऐसी कई पेचीदिगियां एवं चुनौतियां हैं। पढ़ाई का स्तर और पढ़ाई के ढंग की वजह का सीधा असर छात्रों के परीक्षा पर पड़ता है। ये भी हकीकत है कि 2014 में केंद्र में मोदी सरकार के आने के बाद से शिक्षा के क्षेत्र में आमूल चूल परिवर्तन की शुरूआत की गयी है, नयी शिक्षा नीति घोषित की गयी है, लेकिन अभी भी शिक्षा में कई क्रांतिकारी परिवर्तन की जरूरत है। भारत में परीक्षा का तनाव इतना घातक है कि इसके तनाव से छात्र खुदकुशी तक कर लेते हैं।

आर्थिक विकास के तेजी पकड़ते ही भारत में रिहायशी मकानों की बिक्री में उछाल आ गया है

भारत में किसी परिवार के पास रहने के लिए यदि अपनी छत है तो इसे उस परिवार की समृद्धि से जोड़कर देखा जाता है। आर्थिक समृद्धि के शुरूआती दौर में केवल अपनी छत होने को ही उस परिवार विशेष के लिए आर्थिक सफलता का एक पैमाना माना जाता है। परंतु, धीरे-धीरे वह परिवार आर्थिक तरक्की करते करते इस स्तर पर पहुंच जाता है कि उसे इस छोटे से मकान के स्थान पर सर्वसुविधा युक्त एक बड़े मकान की आवश्यकता महसूस होने लगती है। इस प्रकार का आर्थिक विकास किसी भी देश के लिए शुभ माना जा सकता है। हाल ही के समय में भारत में भी यह सब होता हुआ दिखाई दे रहा है। अभी हाल ही में दिल्ली के पास गुरुग्राम में एक सर्वसुविधा युक्त आवासीय प्रोजेक्ट की घोषणा की गई थी। इस आवासीय प्रोजेक्ट में 7,200 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाले 1113 फलैट्स मात्र 3 दिन में ही बिक गए थे। यह भारत की आर्थिक सम्पन्नता को दशार्ता है। वैसे भी भारत में मकान खरीदने को एक ड्रीम प्रोजेक्ट के रूप में देखा जाता है और इसे भावनात्मक अनुभव एवं वित्तीय सुरक्षा की गारंटी माना जाता है। इस दृष्टि से भारत में आवासीय निर्माण के लिए वर्ष 2023 एक अति सफल वर्ष साबित हुआ है और इसके आधार पर यह कहा जा रहा है कि वर्ष 2024 इससे भी अधिक बढ़िया वर्ष साबित होने जा रहा है।

विदेशी आक्रांताओं एवं अंग्रेजों द्वारा भारत को पिछले 1000 से अधिक वर्षों के दौरान लूटा-खसोटा गया है। अब जाकर भारत का पुनर्निर्माण काल प्रारम्भ हुआ है। अभी तक भारतीय नागरिकों का लक्ष्य अपने सर पर छत होना अधिक महत्वपूर्ण कार्य था परंतु अब इसे सर्वसुविधा युक्त आवास के रूप में भी विकसित किया जा रहा है। भारत को मिली राजनैतिक स्वतंत्रता के बाद के समय से विभिन्न सरकारों द्वारा देश में पब्लिक हाउसिंग प्रोजेक्ट प्रारम्भ किए गए थे। इन प्रोजेक्ट के माध्यम से विभिन्न सरकारों द्वारा नागरिकों के लिए घर बनाकर उपलब्ध कराए जाते रहे हैं। साथ ही, बाद के खंडकाल में सरकारों द्वारा देश में भूमि सुधार कार्यक्रम भी लागू किए गए ताकि खाली पड़ी जमीन को शहरों में रिहायशी इलाकों के तौर पर विकसित किया जा सके। इन भूमि सुधार कार्यक्रमों को लागू करने के बाद निजी क्षेत्र में भी रिहायशी मकानों को बनाने की अनुमति प्रदान की गई। इसके बाद से तो देश में सर्व सुविधा युक्त आवासीय प्रोजेक्ट की जैसे बाढ़ ही आ गई। इन विभिन्न प्रोजेक्ट के अंतर्गत निर्मित होने वाले सर्व सुविधा युक्त मकान हाथों हाथ बिकने भी लगे। अब तो देश में बड़े बड़े रिहायशी मकान के प्रोजेक्ट, सूचना प्रौद्योगिकी पार्क, शॉपिंग माल्स आदि भारी मात्रा में विकसित किए जा रहे हैं। अब तो अति महंगे एवं बड़े आकार के फ्लैट्स भी भारत में आसानी से हाथों हाथ बिकने लगे हैं। वर्ष 2024 आते आते भारत का रियल एस्टेट बाजार अब पूरे विश्व में सबसे तेज गति से आगे बढ़ता बाजार बन गया है। आज भारत के समस्त बड़े महानगरों में एक बात सामान्य-सी नजर आती है कि यहां बहुमंजिला इमारतों का निर्माण कार्य बहुत तेजी से चल रहा है। वर्ष 2023 में भारत का रियल एस्टेट बाजार लगभग 26,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर का था जो 2030 में बढ़कर एक लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का हो जाने वाला है और 2047 तक 5.8 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर का। वर्तमान में रियल एस्टेट बाजार भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 7 प्रतिशत का योगदान करता है एवं इस क्षेत्र में 5 करोड़ नागरिकों को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। रियल एस्टेट क्षेत्र के आगे बढ़ने से विनिर्माण क्षेत्र से जुड़े अन्य कई उद्योगों को भी बढ़ावा मिलता है। जैसे सीमेंट उद्योग, स्टील उद्योग, ग्लास उद्योग, आदि। एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2047 तक रियल एस्टेट बाजार का भारत के सकल घरेलू उत्पाद में योगदान 15 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। भारत में वर्ष 2022 में 3.27 लाख करोड़ रुपए की कीमत के मकान बेचे गए थे एवं वर्ष 2023 में 4.5 लाख करोड़ रुपए की कीमत के मकान बेचे गए। इस प्रकार वर्ष 2023 में इस क्षेत्र में 38 प्रतिशत की वृद्धि दर हासिल की गई है। इस क्षेत्र में मांग बहुत अधिक तेज बनी हुई है। भारत में रिहायशी मकानों की दृष्टि से सबसे बड़े 7 बाजार हैं - मुंबई, दिल्ली एनसीआर, बंगलुरु, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता, एवं पुणे।

यह भारत के सबसे बड़े महानगर भी माने जाते हैं। भारत में रिहायशी मकानों के बिक्री में इतनी अधिक वृद्धि दर इसलिए दर्ज हो रही है क्योंकि भारत में आर्थिक विकास ने तेज गति पकड़ ली है। गरीब वर्ग, मध्यम वर्ग बन रहा है तो मध्यम वर्ग अमीर वर्ग। इसलिए महंगे महंगे फ्लैट्स की मांग अधिक तेजी से बढ़ रही है। दूसरे, भारतीय रिजर्व बैंक ने भी ब्याज दरों को पिछले लम्बे समय से स्थिर रखा हुआ है। साथ ही, भारत में मुद्रा स्फीति की दर भी अब घटने लगी है। भारत के मध्यम वर्ग की आय बढ़ी है और वे रियल एस्टेट में अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। केंद्र सरकार भी नागरिकों को इस क्षेत्र में निवेश के लिए प्रोत्साहन दे रही है। आय कर की दरें कम की गई हैं। नए मकान खरीदने वालों को केंद्र सरकार की ओर से सब्सिडी दी जा रही है। स्कीम फोर अफोर्डबल हाउस लागू की गई है। परंतु, भारत में केवल अफोर्डबल मकान ही नहीं खरीदे जा रहे हैं बल्कि अब नागरिक सर्वसुविधा युक्त महंगे मकानों में भी निवेश कर रहे हैं। किसी मकान की कीमत 1.5 करोड़ रुपए से अधिक होने पर उसे सर्वसुविधा युक्त मकान की श्रेणी में गिना जाता है एवं मुंबई में 2.5 करोड़ रुपए से अधिक की कीमत वाले मकान को सर्व सुविधा युक्त श्रेणी के मकान में गिना जाता है। भारत में वर्ष 2023 में सर्वसुविधा युक्त मकानों की बिक्री 130 प्रतिशत बढ़ गई हैं। भारत में वर्ष 2022 में 3000 सर्वसुविधा युक्त मकानों की बिक्री हुई थी जबकि वर्ष 2023 में 6900 सर्वसुविधा युक्त मकानों की बिक्री हुई है। जिन रिहायशी मकानों की कीमत 40 करोड़ रुपए से अधिक होती है उन्हें अल्ट्रा सर्वसुविधा सम्पन्न रिहायशी मकान की श्रेणी में गिना जाता है। वर्ष 2023 में इन मकानों की बिक्री 200 प्रतिशत बढ़ गई है। देश के 7 महानगरों में लगभग 600 अल्ट्रा सर्वसुविधा सम्पन्न मकान भारत में बिके हैं। यह दशार्ता है कि भारत में अति समृद्ध नागरिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। भारत में करोड़पति (मिलिनायर) नागरिकों की जनसंख्या 69 प्रतिशत बढ़ गई है। अल्ट्रा हाई नेटवर्थ (3 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की आय) नागरिकों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। एक अनुमान के अनुसार भारत में अगले तीन वर्षों में अल्ट्रा हाई नेटवर्थ नागरिकों की संख्या 19000 होने जा रही है। इस श्रेणी के नागरिक अल्ट्रा सर्वसुविधा सम्पन्न मकान चाह रहे हैं। इसी प्रकार कार्यालय के लिए स्थान, मॉल के लिए स्थान, ई-कामर्स कम्पनियों को अपना स्टॉक रखने के लिए बहुत बड़े आकर के गोडाउन की आवश्यकता भी भारत में अब लगातार बढ़ रही है। इस तरह के निर्माण में विदेशी निवेशक भी अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। वर्ष 2023 के प्रथम 6 माह में विदेशी निवेशकों ने 400 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निजी निवेश भारत में किया है। इसमें से आधा यानी 200 करोड़ अमेरिकी डॉलर रियल एस्टेट के क्षेत्र में किया गया है। विदेशी निवेशक अब चीन में अपना निवेश घटाते हुए भारत में अपना निवेश बढ़ा रहे हैं। भारत में विदेशी निवेशकों को तेजी से विकास करती अर्थव्यवस्था मिल रही है, युवाओं की अधिक संख्या के चलते मांग अधिक मिलती है एवं स्थिर केंद्र सरकार के चलते आर्थिक सुधार कार्यक्रमों को लगातार आगे बढ़ाया जा रहा है।

तुलसीदास ने कराया जनसंचार की शक्ति का अनुभव : प्रो. ए.के. त्यागी

भारत की संकल्पना में हमेशा रहेगा पत्रकारिता का सिद्धांत : डॉ. राम प्रवेश राय

प्रखर वाराणसी। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग में भारतीय पत्रकारिता दिवस के अवसर पर 'भारत की संकल्पना एवं भारतीय पत्रकारिता ' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ महात्मा गाँधी और डॉ. भगवान दास के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विद्यापीठ के कुलपति प्रो. ए.के. त्यागी ने कहा भारतीय पत्रकारिता की बात करनी है तो भारत के स्वरूप को समझना बहुत जरूरी है, क्योंकि यहाँ एक-एक कोस पर बोली बदल जाती है। सूचना का आदान-प्रदान भाषाई आधार पर यूरोप के लिए आसान है, क्योंकि वहां भौगोलिक विषमताएं कम हैं। भाषा में विविधता कम है। वहां सूचना प्रसारित करने के लिए ज्यादा संसाधन की जरूरत नहीं है, परन्तु भारत में सूचना प्रसारित करना आसान नहीं है। यहाँ

विविधताएं बहुत हैं, भारतीय भाषाओं की लिपियाँ भिन्न-भिन्न हैं। उन्होंने सम्भावनाओं को लेकर कहा हमारे यहाँ चुनौतियाँ बहुत हैं,परन्तु इससे सम्भावनाएं भी बढ़ती हैं।भारत की सांस्कृतिक विरासत हर क्षेत्र की अलग है, इसलिए सूचनाओं का मानक बदलना पड़ता है।जनसंचार के बारे में उन्होंने कहा इसकी शक्ति का अनुभव हम तुलसीदास जी की लिखी मानस के द्वारा कर सकते हैं, जिन्होंने देश के कोने-कोने तक अपनी लिखी हुई बात पहुंचाई। आज देश में शायद ही कोई ऐसा हो जिसे मानस की दो-चार चौपाई याद न हो। यही जनसंचार की शक्ति है। इसका उपयोग कैसे करना है यह समझने से पहले भारत की संकल्पना को समझना होगा। भारतीय पत्रकारिता यूरोप जैसी नहीं है। भारत को पत्रकारिता में क्या चाहिए यह समझने की जरूरत है। इसी कड़ी में मुख्य वक्ता डॉ. राम प्रवेश राय ने कहा कि पहले बोलकर हम संचार करते थे। बाद में लिपि का विकास हुआ और ज्ञान परम्परा की शुरूआत हुई। लिखने से आगे बढ़े तो तकनीक का विकास हुआ और कैमरा आ गया। पूरा इको सिस्टम चेंज हो रहा है। उन्होंने कहा पूरे देश की समस्या पत्रकार की समस्या है, इसलिए दुनिया कहीं भी चली जाये, लेकिन भारत की संकल्पना एवं पत्रकारिता का सिद्धांत हमेशा रहेगा। कार्यक्रम की अगली कड़ी में प्रो. अनुराग कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि जब कारपोरेट जगत नहीं था तो सांस्कृतिक बहुलताओं और भाषाई स्तर पर पत्र-पत्रिकाओं ने ही युद्ध लड़ा था। आज आधुनिकीकरण में समाजिकता कहां है, यह भी देखना जरुरी है। उन्होंने कहा मै उन पत्रकारों को नमन करता हूँ जिन्होंने सुखद पत्रकारिता को समझने का अवसर दिया। कार्यक्रम का संचालन रमेश कुमार सिंह एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विनोद कुमार सिंह ने किया।

राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ प्रथमिक स्वर्ग की बैठक में दिसम्बर 2021 में गठित कमेटी को किया वैध घोषित

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। सोमवार को राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ उत्तर प्रदेश प्राथमिक संवर्ग जनपद गाजीपुर की मासिक बैठक माधव सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कालेज प्रकाश नगर गाजीपुर में संपन्न हुई जिसमे महासंघ की प्रदेश अध्यक्ष डॉ0 निर्मला यादव जी द्वारा निर्गत पत्र पर चर्चा की गयी जिसमें प्रदेश अध्यक्ष व महामंत्री प्राथमिक संवर्ग द्वारा जारी किये गए पत्र को अवैध घोषित करते हुए 26 दिसंबर 2021 को गठित जनपदीय कार्यकारिणी को वैध घोषित किया गया जिसके अनुसार 7 दिसंबर 2024 के बाद हुए सभी निर्वाचन अवैध / निरस्त किया गया है! बैठक में उपस्थित समस्त सदस्यों ने माननीया प्रदेश अध्यक्ष जी एवं प्रदेश अनुशासन समिति के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव लाया गया जिसे सभी सदस्यों ने ध्वनि मत से पास किया। बैठक मे सभी ब्लॉक पदाधिकारियों को संगठन की रीति नीति को ध्यान में रखते हुए मजबूत करने के बारे में चर्चा की गयी। बैठक मे संरक्षक डॉ. लहजु प्रसाद कुशवाहा मुख्य अतिथि , बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष डॉ. राजेश सिंह सूर्यवंशी व संचालन जिला महामंत्री राम अशीष शर्मा ने किया। बैठक में संगठन मंत्री डॉ0 प्रदीप कुमार, वरिष्ठ उपाध्यक्ष बिपिन बहादुर सिंह, अवधेश सिंह, हिमांशु अग्रवाल, संतोष प्रकाश, रमा त्रिपाठी, राजेश दुबे, शैलेंद्र राय, चंद्रकांत तिवारी, अरुण राय, आयुष सिंह, शिवा नन्द सहित समस्त ब्लॉक अध्यक्ष व महामंत्री उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

विकास खण्ड करंडा में रोजगार मेला 272 में 156 का हुआ अन्तिम राउंड के लिए चयन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजनान्तर्गत कौशल विकास मिशन, गाजीपुर एवं जिला सेवायोजन कार्यालय, गाजीपुर के संयुक्त तत्वाधान में खण्ड विकास परिसर, करण्डा गाजीपुर में एक दिवसीय रोजगार मेला का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागी कम्पनियॉ एडेक्को इण्डिया प्रा0लि0, वी0एस0डी0 टायर एण्ड ट्यूब रिपेंयर सर्विस, क्वैस कार्पोरेशन, जॉब सीकर्स स्टाप द्वारा डिक्सन, पैजेट, मिकुनी हेतु चयन सहित कुल 07 कम्पनियों द्वारा ट्रेनी, फील्ड आफीसर, मैकेनिक, इलेक्ट्रिशियन, फीटर, कम्प्यूटर आपरेटर, इलेक्ट्रानिक मैनूफक्चैरिंग, हेल्पर आदि पदों पर चयन किया गया। मेले में लगभग 272 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया, जिसमें से विभिन्न पदों पर कुल 156 अभ्यर्थियों का अन्तिम राउंड हेतु चयन किया गया।

भाजपा अध्यक्ष सुनील सिंह की अध्यक्षता में लगी गांव चलो आभियान की कार्यशाला

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। गांव चलो अभियान की एक दिवसीय कार्यशाला आज भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पर जिलाध्यक्ष सुनील सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिला प्रभारी राकेश त्रिवेदी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्र भक्ति भावना से प्रेरित होकर पुरे निस्वार्थ निष्ठा से पार्टी का कार्यकर्ता काम करता है। उन्होंने कहा कि हमारे राजनीति का मकसद सिर्फ सरकार बनाना नहीं बल्कि एक एक भारतीय का सीना और मस्तक विश्व के हर देश में हर जगह गर्व से ऊंचा हो भारतीय जनता पार्टी का यह उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि भारत अपना खोया वैभव प्राप्त करे हमे उसके लिए काम करना है। कार्यशाला को संबोधित करते हुए लोकसभा चंदौली, जौनपुर और गाजीपुर के क्लस्टर इंचार्ज उ प्र सरकार के मंत्री गिरीशचंद्र यादव ने कहा कि विदेशी ताकतें नहीं चाहती कि इस देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तिबारा प्रधानमंत्री बने। और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विश्व भर में देश कि प्रतिष्ठा और सम्मान की बेतहाशा वृद्धि हुई है।आज भारत भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता संगठन पंचनिष्ठा को स्वीकार कर समाज में लगातार समर्पित भाव से काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि देश के मजबुती और समाज के एक एक व्यक्ति के सुख और समृद्धी के लिए देश की और प्रदेश की सरकार काम कर रही है।और उन्होंने कहा कि आज जिन राज्यों में भाजपा और उसकी सरकार नहीं है वहां भी भाजपा कैसे स्थापित हो हमे उसके लिए अभी बहुत काम करना है ताकि हमारा देश विकसित भारत बन सके। उन्होंने कहा कि पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन कर तथा विभिन्न दायित्वों तथा नेतृत्व प्रदान कर भारतीय जनता पार्टी ने पिछड़ो दलितो को सम्मानित किया है। लोकसभा गाजीपुर के प्रभारी आर पी कुशवाहा ने कहा कि पार्टी का सिर्फ एक लक्ष्य है और वह है आगामी लोकसभा चुनाव में विजय प्राप्त करना ।और उन्होंने कहा कि आज के इस गांव चलो अभियान कार्यशाला का उद्देश्य है। पार्टी कार्यकर्ता गांव गांव जाकर प्रवास करें तथा जन कल्याण की योजनाओं से लोगो को अवगत कराए । उन्होंने कहा कि पिछले चुनाव के परिणाम से हमें सीख लेने की जरूरत है। जिलाध्यक्ष सुनील सिंह ने कार्यशाला विषय रखते हुए कहा कि संगठन क्षमता के वृद्धि, कुशलता एवं संचालन हेतु संगठन शीर्ष नेतृत्व द्वारा 4 से 11के बीच गांव चलो अभियान का आह्वान किया । तथा सबके प्रति धन्यवाद आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर नवनियुक्त लोकसभा प्रभारी आर पी कुशवाहा के जनपद में प्रथम आगमन तथा आगंतुक अतिथियों को पुष्प गुच्छ,अंग वस्त्र तथा स्मृति चिन्ह देकर स्वागत अभिनन्दन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ पार्टी महामनिषियो पं दीनदयाल उपाध्याय एवं डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर तथा वंदेमातरम गायन से हुआ। कार्यशाला में जिलापंचायत अध्यक्ष सपना सिंह, लोकसभा संयोजक कृष्णबिहारी राय, पुर्व जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह, रामतेज पांडेय, विजेन्द्र राय, विजय शंकर राय, पुर्व विधायक कालीचरण राजभर, सरिता अग्रवाल, जयप्रकाश गुप्ता, सीता सिंह, रवि प्रकाश, शोभनाथ यादव, ओमप्रकाश राय, दयाशंकर पांडेय, अवधेश राजभर, डा प्रदीप पाठक, वृजनन्दन सिंह, राजेश राजभर, रमेश सिंह पप्पू, रामराज बनवासी, रामनरेश कुशवाहा, वृजनन्दन सिंह, संकठा प्रसाद मिश्र, विनोद अग्रवाल, अखिलेश सिंह, जिला मीडिया प्रभारी शशिकान्त शर्मा, कार्तिक गुप्ता, आलोक शर्मा,अच्छेलाल गुप्ता, जितेन्द्र नाथ पाण्डेय, मयंक जायसवाल, साधना राय, विश्व प्रकाश अकेला, राजन प्रजापति, शनि चौरसिया, नीतीश दूबे, अविनाश सिंह सहित आदि अन्य लोग उपस्थित थे। कार्यशाला का संचालन महामंत्री प्रवीण सिंह ने किया। इससे पूर्व जिला कार्यालय पर दो अन्य बैठको में लोकसभा चुनाव से सम्बंधित विषयों पर लोकसभा प्रभारी, संयोजक, विस्तारक तथा लोकसभा चुनाव संचालन समिति की बैठक की बैठक जिलाध्यक्ष सुनील सिंह की अध्यक्षता में हुई। जिसको जिला प्रभारी राकेश त्रिवेदी, लोकसभा प्रभारी आर पी कुशवाहा, लोकसभा संयोजक कृष्ण बिहारी राय ने भी सम्बोधित किया।

बापू की पुण्यतिथि पर निकाली गई कुष्ठ जन जागरूकता रैली, मनाया लेप्रोसी डे

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। महात्मा गांधी की पुण्यतिथि 30 जनवरी को एंटी लैप्रोसी-डे के रूप में मनाया जाता है। इसके तहत जनपद में 30 से 13 फरवरी तक स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। इसको लेकर मंगलवार को एक जागरूकता रैली विकास भवन से होते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय तक गया। इस रैली को मुख्य विकास अधिकारी संतोष कुमार वैश्य ने हरी झंडी दिखलाकर रवाना किया। इस रैली के माध्यम से आमजन में कुष्ठ रोग के प्रति जन जागरूकता फैलाने का कार्य किया गया। कुष्ठ रोग व उससे ग्रसित मरीजों के बारे में भ्रांतियों को दूर किया जाएगा। इसके साथ ही कुष्ठ रोग के सामाजिक कलंक को मिटाने का भी प्रयास करने पर बल दिया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ देश दीपक पाल ने बताया की यह अभियान पिछले 7 सालों से लगातार चलाए जा रहा है। ताकि कुष्ठ रोग के प्रति लोग जागरुक हो सके और कुष्ठ रोगियों के प्रति जो भ्रांतियां फैली है उसके बारे में लोगों को जानकारी मिल सके। उन्होंने बताया कि रैली जो विकास भवन से निकाली गई थी उसमें स्कूली छात्र-छात्राओं के साथ ही टीचर और विभागीय कर्मचारी शामिल रहे। जिन्हें मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय पहुंचने पर कुष्ठ रोग के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही उन्हें जिला अधिकारी के द्वारा दिए गए संदेश के बारे में भी बताया गया। सभी से यह अपील किया गया कि वह अपने आसपास यदि कुष्ठ संभावित रोगी देखते हैं तो उसकी जानकारी स्वास्थ्य विभाग को दे ताकि उनका समय से इलाज हो सके। अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी और नोडल कुष्ठ रोग डॉ रामकुमार ने बताया कि इस दौरान सहयोगी पुरुषों व आशा कार्यकर्ता महिलाओं में देखते हैं कि किसी के चमड़ी में दाग के साथ शून्यता तो नहीं है, जिसमें ऐसा दिखता है उसे नजदीकी प्राथमिक, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर भेजते हैं। जहां कुष्ठ रोग की पुष्टि होने के बाद मल्टी ड्रग ट्रीटमेंट दिया जाएगा। अभियान का उद्देश्य जल्द से जल्द कुष्ठ रोग की शुरूआत में ही उसकी पुष्टि कराकर मरीज को दवा खिलाने की शुरूआत कर देना है जिससे मरीज को विकलांगता से बचाया जा सके। इस अभियान के तहत जनपद में घर-घर जाकर स्वास्थ्य विभाग की टीम कुष्ठ रोगियों की पहचान करेंगी। लक्षणों के आधार पर रोगियों की पहचान कर उनकी लाइन लिस्टिंग की जाएगी। जो कुष्ठ रोगी पहले से अपना उपचार करा रहे हैं उनका फॉलोअप किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कुष्ठ रोग से डरने की आवश्यकता नहीं है।

सामाजवादी पार्टी ने पीडीए पखवाड़ा के तहत जखनियां के गांवों में लगाया जन पंचायत

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मंगलवार को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अखिलेश यादव जी के आह्वान पर और प्रदेश अध्यक्ष माननीय नरेश उत्तम पटेल जी के निर्देश पर दिनांक 26 जनवरी से आरंभ पीडीए पखवाड़े के तहत जखनियां विधान सभा के हाजीपुर और विजहरी तथा सदर विधान सभा के बसन्तपट्टी, धरम्मरपुर और काजीटोला में जनपंचायत का आयोजन किया गया। हाजीपुर में आयोजित जनपंचायत को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष गोपाल यादव ने भाजपा सरकार की नीति और नियत पर सवाल उठाते हुए सभी को भाजपा की मजहबी फितरत और दिखावटी पिछड़ा प्रेम से बचने की हिदायत दिया और लोगों से उसके द्वारा फैलाये जा रहे भ्रम से बचने की भी सलाह दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा को भ्रम पैदा करने में महारत हासिल है। वह धर्म और भ्रम की ही राजनीति करती है। उन्होंने कहा कि लोकसभा 2 024 का चुनाव हमारे लिए चुनौती है।यह चुनाव इस बात का फैसला करेगा कि देश का संविधान, लोकतंत्र, सामाजिक न्याय और इस देश का धर्मनिरपेक्ष स्वरूप बचेगा कि नहीं। बसन्तपट्टी मे आयोजित जनपंचायत को संबोधित करते हुए सदर विधायक जै किशन साहू ने कहा कि भाजपा सरकार लोकतंत्र और संविधान से खिलवाड़ कर रही है। वह अम्बेडकर जी के संविधान को समाप्त कर आर एस एस के संविधान को लागू करना चाहती है।वह दलितों , पिछड़ों और अल्पसंख्यकों को संवैधानिक व्यवस्था से बाहर कर रही है।

दो मोटरसाइकिल की आमने सामने टक्कर में एक युवक की इलाज के दौरान मौत, दो घायल

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मरदह थाना क्षेत्र अंतर्गत महाहर धाम गेट के पास आमने-सामने दो मोटरसाइकिल की भिड़ंत हो गई। जिसमें मोटरसाइकिल सवार तीन लोग घायल हो गए। स्थानीय लोगों की मदद से 108 एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मरदह पर लाया गया जहां दो व्यक्तियों का प्राथमिक उपचार के बाद उनके परिजनों को सूचना दिया गया। वहीं गंभीर रूप से घायल उमेश राजभर उम्र 30 वर्ष पुत्र स्वर्गीय मुन्ना राजभर को मऊ जनपद सदर अस्पताल में प्राथमिक उपचार के दौरान मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार उमेश राजभर बिरनो थाना क्षेत्र के बद्धोपुर गांव का रहने वाला था। मृतक बद्धोपुर हनुमान मंदिर के पास किराने की दुकान चलाकर अपने परिवार का गृहस्ती चलता था। मृतक

दुकान की सामान लाने के लिए कासिमाबाद से लौट रहा था तभी महाहर धाम गेट के पास मोटरसाइकिल में आमने-सामने भिड़ंत हो गई। ग्रामीणों की मदद से उसकी 108 नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मरदह लाया गया जहां स्थिति गंभीर होने पर मऊ जनपद के लिए रेफर कर दिया गया। जहां प्राथमिक उपचार के दौरान उसकी मृत्यु हो गई । मृतक की शादी अभी 2 वर्ष पूर्व लक्ष्मी देवी के साथ हुआ था मृतक का एक पुत्र है जिसका नाम दिव्यांश बताया गया। उमेश राजभर परिवार का इकलौता कमाऊ सदस्य था उसके मृत्यु के बाद परिवार के लोगों का रो-रो कर बुरा हाल वही इस संबंध में मरदह थानाध्यक्ष ने बताया की सरायलखंसी पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

ग्रामीण गरीबों के सवालों पर लगातार झूठ बोल रही है मोदी-योगी की सरकार : भाकपा माले

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मनरेगा के तहत मजदूरों को 200 दिन काम व 600 मजदूरी दिए जाने, सभी ग्रामीण गरीबों को बसने के लिए 5 डिसमिल जमीन दिये जाने, जो गरीब जहां बसा है वहीं बसने का पट्टा दिए जाने, नया बास आवास नीति बनाये जाने, सरकारी सीलिंग बंजर परती जमीन को नामी कंपनियों को देने की नीति रद्द किए जाने, गरीबों को 200 यूनिट बिजली फ्री दिए जाने और बकाया बिजली बिल माफ किए जाने, माइक्रो फाइनेंस कंपनियों, स्वयं सहायता समूहों द्वारा ग्रामीण गरीबों को दिए गए सभी कर्ज माफ किए जाने तथा सभी वृद्धा, विधवा, विकलांगों को ?3000 मासिक पेंशन दिए जाने सहित तमाम सवालों पर भाजपा सरकार ने कोई काम नही किया बल्कि करोड़ों लोगों के गरीबी रेखा से ऊपर बोलकर ग्रामीण गरीबों के सवालों पर लगातार झूठ बोल रही है उक्त आरोप

भाकपा माले का देश व्यापी आह्वान के तहत जिला मुख्यालय पर

कामरेड सरजू पाण्डेय पार्क में एक दिवसीय धरना एवं सभा को मुख्य वक्ता के बतौर संबोधित करते हुए भाकपा माले केन्द्रीय कमेटी सदस्य कामरेड ईश्वरी प्रसाद कुशवाहा ने लगाया। कुशवाहा ने कहा कि डबल इंजन की सरकार चौतरफा फासीवादी हमला तेज कर रखी है, इसके लिए सबसे अधिक शक्ति ग्रामीण गरीबों से ही ले रही है और विडम्बना है कि सबसे अधिक कुठाराघात भी ग्रामीण गरीबों पर ही कर रही है ।उनका रोजगार व्यवसाय छीना जा रहा है, मजदूरी दर पहले से महंगाई दर के अनुपात मे घट गई है, गरीबों को बसाने व कृषि कार्य के लिए सरकारी जमीन देने की बजाय पीढ़ीयो से बसे ग्रामीण गरीबों को उजाड़ फेंक रही है, समूची ग्रामीण आबादी माइक्रो फाइनेंस कंपनियों के मकड़ जाल में फंसी पड़ी है कर्ज वसूली के उत्पीड़न से महिलाएं जान दे रही हैं ।उत्तर प्रदेश सरकार बिजली बिल मनमानी दर पर वसूली कर समूचे ग्रामीण गरीबों को गहन अन्धकार में धकेल रही है। विकलांग, विधवा, वृद्धा पेंशन रोककर अपराध कर रही है । उत्तर प्रदेश महिलाओं पर यौन हिंसा, हत्या,बलात्कार के मामले मे आज भी नम्बर वन है।

सभा को सम्बोधित करते हुए भाकपा माले जिला सचिव कामरेड शशीकांत कुशवाहा ने कहा कि भाजपा सरकार ग्रामीण गरीबों की इस स्थिति को उजागर न होने देने के लिए अमृत काल की स्वयंभू घोषणा करके गरीबों को खुशहाली, समृद्धि, आवास व अनाज से परिपूर्ण बताने की झूठ की आंधी चला रही है । धार्मिक उन्माद फैलाकर संविधान धर्मनिरपेक्षता एवं समाजवादी मूल्य के लिए खतरा उत्पन्न कर रही है। सामाजिक न्याय की तिलांजलि दे रही है। इसलिए ग्रामीण गरीबों के जीवन जीविका एवं बेहतरी के लिए , संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकार, गरिमामय जीवन की गारंटी के लिए संघर्ष को तेज करना होगा। सभा में प्रमुख रूप से कामरेड ईश्वरी प्रसाद कुशवाहा, शशिकांत कुशवाहा, योगेन्द्र भारती, राजेश बनवासी, रामप्रवेश कुशवाहा, मोती प्रधान, नन्द किशोर बिन्द, गुलाब सिंह, लालबहादुर बागी, चन्द्रावती बिन्द, मंजू गोंड, सतेन्द्र प्रजापति, आजाद यादव, श्यामप्यारी भारती, प्रमोद कुशवाहा आदि मौजूद रहे।

करुणा, प्रेम, अहिंसा के लिए गांधी का जीवन समर्पित था: प्रो. सतीश राय

प्रखर देवरिया। तहसील क्षेत्र के गोरया घाट मार्ग स्थित बाबा ब्रह्म जी शिक्षण संस्थान, मिश्रौली के प्रांगण में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर '30 जनवरी अहिंसा की हत्या' विचार गोष्ठी आयोजित कर तिरंगा ध्वजारोहण किया गया और उनके चित्र पर पुष्पार्चन कर श्रद्धांजलि दी गयी और राष्ट्र की एकता, धर्म निरपेक्षता व अखंडता का संकल्प लिया गया। आयोजित

गोष्ठी में इंडियन सोसाइटी ऑफ गांधी स्टडीज, पूर्व विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान एवं पूर्व निदेशक नेहरू स्टडीज सेंटर, महात्मा गांधी विद्यापीठ वाराणसी, राष्ट्रीय समन्वयक राजीव गांधी स्टडी सर्किल प्रो0 सतीश राय ने गांधी को महान व्यक्तित्व बताते हुए कहा कि करुणा, प्रेम, सत्य, अहिंसा के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। उन्होंने अहिंसक तरीके से साम्राज्य वादी ताकतों के खिलाफ आंदोलन किया। जो कुछ लोगों को मंजूर नहीं था और उनकी हत्या कर दी गयी। आज भी गांधी लोगों के दिलों में जिंदा हैं। बीएचयू के पूर्व प्रो0 आनंद दीपायन ने कहा कि गांधी ने प्रेम व मेलजोल को महत्व दिया। पूर्व मंत्री दद्दू प्रसाद ने कहा कि गांधी ने अहिंसा की ताकत से अंग्रेजों को भगाया। गांधी के पथ पर चलना होगा। पूर्व प्राचार्य संत बिनोवा पीजी कालेज देवरिया डॉ असीम सत्यदेव ने गांधी के विचारों को आत्मसात करने का आह्वान किया। इतिहासकार डॉ मंदाकिनी राय ने कहा कि गांधी उस गहन चेतना का रूप हैं जिनमें मानवीयता, चेतना और करुणा है। गांधी ने अपने कमियों को स्वीकारा। उन्होंने भौतिक सुख को त्यागा। हिंसा का विरोध किया और अहिंसा को अपनाया। हक के लिए गांधी के विचार आज भी प्रासंगिक है। गांधी के अहिंसा के हथियार से ही अपने हक की लड़ाई लड़ी जा सकती है। इसी क्रम में पूर्व विधायक मदन गोविन्द राव, राजनीतिक चिंतक डॉ बृजबिहारी, जन मुक्ति आंदोलन से जनार्दन शाही, डॉ चतुरानन ओझा, भूमि बचाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष गोबर्द्धन प्रसाद गोंड़, संजय अमेठिया, खुश मोहम्मद ने अपने विचार रखे।

बापू की प्रतिमा के सामने रामधुन गाकर कांग्रेस ने निकाली भारत जोड़ो न्याय यात्रा

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर मंगलवार को जिला एवं शहर कांग्रेस कमेटी ने संयुक्त रूप से प्रदेश उपाध्यक्ष राघवेंद्र प्रताप सिंह और प्रदेश सचिव फसाहत हुसैन बाबू की मौजूदगी में आमघाट कालोनी स्थित पार्क में बापू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कांग्रेस कार्यकताओं ने रामधुन गाया और श्रद्धांजलि अर्पित किया। इसके बाद कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा के समर्थन में गांधीवादी तरीके से तिरंगे एवं कांग्रेस के झंडे बैनर के साथ शहर की मुख्य सड़कों पर न्याय यात्रा निकाला, यात्रा मिश्रबाजार, महुआबाग, कचहरी होते हुए स्व. सरजू पांडे पार्क में एक सभा में बदल गई जहां वक्ताओं ने बापू को श्रद्धांजलि देते हुए बीजेपी सरकार में व्याप्त भ्रष्टाचार, अराजकता और गलत नीतियों का विरोध किया। प्रदेश उपाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह ने कहा कि आज बापू की हत्या करके सत्ता पर जिस विचारधारा के लोग

आसीन हैं उनके विरोध में राहुल जी की सामाजिक न्याय यात्रा को आपार जनसमर्थन मिल रहा है, नीतीश कुमार के सवाल पर उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार की प्रासंगिकता खत्म हो रही है, वे चट्टी चौराहे के नेता के रूप में जोकर की तरह घूम रहे हैं, वे पलटुराम हैं और अच्छा हुआ कि वे चुनाव से पहले ही गठबंधन से बाहर हो गए। प्रदेश सचिव फसाहत हुसैन ने कहा कि मजहबी बंटवारा करके जो भाजपा सरकार सत्ता पर काबिज है उसे हटाने के लिए हम सभी साथी एक होकर सड़क पर न्याय यात्रा के जरिए निकले हैं और जनता का साथ भी हमें मिल रहा है। वहीं जिलाध्यक्ष सुनील राम एवं शहर अध्यक्ष संदीप विश्वकर्मा ने बापू श्रद्धांजलि देते हुए बताया कि हमारे नेता राहुल जी की यात्रा के समर्थन में हमलोग भी गाजीपुर में यात्रा निकाले हैं जिसका समापन आज सरजू पांडे पार्क में किया गया है लेकिन घर घर जनसंपर्क चालू रहेगा, और आगामी लोकसभा में भाजपा की भ्रष्ट सरकार को हटाना ही मुख्य उद्देश्य है। पूर्व विधायक श्री अमिताभ अनिल दुबे एवं पूर्व विधायक पशुपतिनाथ राय ने संयुक्त रूप से कहा कि भाजपा सरकार निकम्मी है और बापू की हत्या कराने वाली विचारधारा से ग्रसित है इसे हटाकर देश में रामराज्य लाना ही प्रमुख उद्देश्य है। इस अवसर पर प्रमुख रूप से एआईसीसी सदस्य रविकांत राय पीसीसी सदस्य अरविंद किशोर राय, डॉक्टर मारकंडेय सिंह वरिष्ठ कांग्रेस नेता बटुक नारायण मिश्र, अजय सिंह एवं अजय कुमार श्रीवास्तव, ज्ञानेंद्र सिंह ,राघवेंद्र जी ,आशुतोष गुप्ता, मुसाफिर बिन्द, सुमेर कुशवाहा तथा चंद्रिका सिंह, हामिद अली, राजीव सिंह, राजेश गुप्ता,दिव्यांशु पांडे , रामानुज पांडे, माधव कृष्ण, देवनारायण सिंह, शशि भूषण राय, जितेंद्र बिन्द, सदानंद गुप्ता, देवनारायण सिंह, रूद्रेश निगम, मोहन चौहान ,शशिकांत श्रीवास्तव, श्याम नारायण सिंह कुशवाहा, सीमा विश्वकर्मा, विजय शंकर पांडे, कुंदन खरवार, धर्मेंद्र ,राकेश राय, अवधेश पांडे, गयासुद्दीन अंसारी ,संजय कुमार गुप्ता, आदिल अख्तर, रईस अहमद, झुन्ना शर्मा, सुशील कुमार सिंह , राजेश उपाध्याय, जयप्रकाश चौरसिया, बृजेश कुमार गौतम, जफर अहमद सिद्दीकी, चंद्रशेखर, राहुल कुशवाहा ,वीरेंद्र कुमार राय, सीताराम राय, अब्दुल हक, रतन तिवारी, ओमप्रकाश पासवान, शमशाद सादिक अहमद आदि सैकड़ो की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

विजय चौक पर हुई बीटिंग रिट्रीट सेरेमनी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली के विजय चौक पर सोमवार (29 जनवरी) को बीटिंग द रिट्रीट सेरेमनी के साथ गणतंत्र दिवस के चार दिन तक चलने वाले कार्यक्रमों का समापन हुआ। तीनों सेनाओं के साथ सीएपीएफ के बैंड ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु के सामने 31 क्लासिकल धुनें बजाईं। समारोह में पीएम मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, एनएसए अजीत डोभाल सहित अन्य केंद्रीय मंत्री और आम जनता मौजूद रही। विजय चौक की सभी प्रमुख इमारतों को रंग-बिरंगी लाइटिंग से सजाया गया था। तीनों सेनाओं के बैंड ने सेरेमनी की शुरुआत शंखनाद की धुन बजाकर की थी। समारोह के अंत में सभी बैंड मास्टर राष्ट्रपति के पास गए और बैंड वापस ले जाने की इजाजत मांगी। इसके बाद समारोह समाप्त किया गया।

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और पीएम रहे मौजूद

शंखनाद के बाद पाइप और ड्रम बैंड के जरिए वीर भारत, संगम दूर, देशों का सरताज भारत, भागीरथी और अर्जुन धुन बजाई गईं। सीएपीएफ बैंड भारत के जवान और विजय भारत का संगीत पेश किया। इंडियन एयरफोर्स के बैंड ने टाइगर हिल, रेजोइस इन रायसीना और स्वदेशी म्यूजिक बजाया।

बुलेट ट्रेन कॉरिडोर में भूकंपमापी सिस्मोमीटर लगेंगे

नई दिल्ली। मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर में भूकंप का पता लगाने के लिए 28 सिस्मोमीटर लगाए जाएंगे। ये सिस्मोमीटर बिजली सप्लाय करने वाले सब स्टेशनल के साथ जुड़े होंगे। भूकंप के झटकों का पता लगते ही सिस्टम की बिजली ऑटोमैटिक बंद हो जाएगी।

बिजली बंद होते ही बुलेट ट्रेन में इमरजेंसी ब्रेक लगेंगे और बुलेट ट्रेनें रुक जाएंगी। नेशनल हाई स्पीड रेल कॉर्पोरेशन ने सोमवार को बताया कि पैंसेंजर्स और इंफ्रास्ट्रक्चर की सुरक्षा करने के लिए जापानी शिंकानसेन तकनीक पर आधारित भूकंप जांच सिस्टम लगाया जाएगा। केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सिस्टम लगाए जाने की जानकारी दी।

मैं गारंटी देता हूं, 7 दिनों में लागू होगा सीएए

केंद्रीय मंत्री शांतनु ठाकुर का दावा

कोलकाता। केंद्रीय मंत्री शांतनु ठाकुर ने रविवार को कहा कि मैं गारंटी देता हूं कि देशभर में सात दिनों के अंदर नागरिक संशोधन अधिनियम (सीएए) लागू हो जाएगा। ठाकुर दक्षिण 24 परगना के काकद्वीप में एक रैली को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल ही नहीं, देशभर में अगले 7 दिनों के अंदर सीएए लागू हो जाएगा। ठाकुर बनगांव से भाजपा के सांसद हैं।

ममता बोलीं- ये उनकी राजनीति, हमने सबको नागरिकता दी: इसे लेकर बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि भाजपा अब सीएए का शोर मचा रही है। ये उनकी राजनीति है। हमने सभी को नागरिकता दी है और जो लोग बॉर्डर इलाकों में रह रहे हैं उन्हें सब कुछ दिया जा रहा है। वे राज्य के नागरिक हैं, इसलिए उन्हें वोट डालने का अधिकार मिला हुआ है।

2 फरवरी को राज्य सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपेगी धामी सरकार: वहीं, उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि सीएए को लेकर गठित की गई कमेटी 2 फरवरी को राज्य सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। इस ड्राफ्ट पर आगामी विधानसभा सत्र में विधेयक लाकर राज्य में समान नागरिक संहिता लागू की जाएगी।

शाह ने कहा था- सीएए को लागू होने से कोई नहीं रोक सकता

इससे पहले कोलकाता में पिछले साल दिसंबर में एक रैली के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने भी कहा था कि सीएए को लागू होने से कोई नहीं रोक सकता है। शाह ने घुसपैठ, भ्रष्टाचार, राजनीतिक हिंसा और तुष्टीकरण के मुद्दों पर ममता बनर्जी को घेरा था। उन्होंने लोगों से ममता सरकार को बंगाल से हटाने और 2026 विधानसभा चुनाव में भाजपा को चुनने का आग्रह किया था। शाह के बयान पर ममता ने कहा था- वे लोगों को विभाजित करना चाहते हैं। पहले, नागरिकता कार्ड जिला मजिस्ट्रेट की जिम्मेदारी थी, लेकिन अब केवल राजनीति के लिए छीन लिया गया है। वे इसे किसी को देना चाहते हैं और दूसरों को इससे वंचित करना चाहते हैं। यदि किसी समुदाय को नागरिकता मिल रही है तो दूसरे को भी मिलनी चाहिए।

2019 में लोस-रास से बिल पास हो चुका

11 दिसंबर 2019 को राज्यसभा में नागरिकता संशोधन विधेयक 2019 (सीएबी) के पक्ष में 125 और खिलाफ में 99 वोट पड़े थे। अगले दिन 12 दिसंबर 2019 को इसे राष्ट्रपति की मंजूरी मिल गई। देशभर में भारी विरोध के बीच बिल दोनों सदनों से पास होने के बाद कानून की शक्ल ले चुका था। इसे गृहमंत्री अमित शाह ने 9 दिसंबर को लोकसभा में पेश किया था।

जासूसी के आरोप में ईरान में चार लोगों को मृत्युदंड

तेहरान। ईरान ने अपने दुश्मन देश इजराइल की खुफिया एजेंसी के लिए काम करने वाले 4 दोषियों को मौत की सजा सुनाई है। ये 4 लोग इजराइल की खुफिया एजेंसी 'मोसाद' के लिए काम करने के दोषी पाए गए। इन 4 लोगों को मौत की सजा की जानकारी ईरान के रक्षा मंत्रालय ने दी ईरान ने रक्षा मंत्रालय से जुड़ी एक फैक्टरी को निशाना बनाने का षड्यंत्र रचने और इजराइल की खुफिया एजेंसी 'मोसाद' के लिए काम करने के दोषी चार लोगों को सोमवार को मौत की सजा दी।

चीन में लुप्त नस्ल की मवेशियों की सफल क्लोनिंग

बीजिंग। चीन ने दक्षिण पश्चिम जिजान्ग स्वायत्त क्षेत्र में पाई जाने वाली दो लुप्तप्राय नस्ल की मवेशियों झांगमु और एपीजियाजा का सफलतापूर्वक क्लोन तैयार कर लिया है। वैज्ञानिकों ने सोमवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रत्येक नस्ल के चार नर बछड़े हाल ही में चोंगकिंग नगर पालिका, युनयांग काउंटी में पैदा हुए हैं, जो जिजान्ग से मवेशियों की दुनिया की पहली सफल क्लोनिंग है।

मुस्लिम धर्मगुरु इलियासी के खिलाफ फतवा जारी

नई दिल्ली। राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने पर एक मुस्लिम धर्मगुरु के खिलाफ फतवा जारी किया गया है। यह धर्मगुरु हैं ऑल इंडिया इमाम ऑर्गनाइजेशन के चीफ डॉक्टर इमाम उमर अहमद इलियासी। डॉक्टर इलियासी ने 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन समारोह में हिस्सा लिया था। इमाम ने कहा कि यह फतवा तो रविवार को जारी किया गया है। लेकिन उन्हें राम मंदिर के कार्यक्रम के बाद से ही धमकियां दी जा रही हैं। इन धमकियों में जान से मारने की बात कही जा रही है और परिवार के खिलाफ अपशब्द भी कहे जा रहे हैं। डॉक्टर इलियासी ने बताया कि हालांकि 22 जनवरी की शाम से ही मेरे तमाम नंबरों पर अलग-अलग जगहों से धमकियां आने लगीं।

पुलिस प्रशिक्षण स्कूल में आग से 450 वाहन खाक

नई दिल्ली। दिल्ली के वजीराबाद स्थित पुलिस प्रशिक्षण स्कूल में देर रात भीषण आग लग गयी। आग लगने की जानकारी मिलने पर दमकल विभाग की आठ गाड़ियां तुरंत मौके पर पहुंचीं और बड़ी मशक्कत के बाद सुबह करीब 4:15 बजे आग पर काबू पाया गया। सूत्रों ने बताया कि करीब 200 चार पहिया और 250 दोपहिया वाहनों में आग लग गयी। अग्निशमन विभाग ने फिलहाल आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं है और स्थानीय पुलिस मामले की जांच कर रही है। घटना में किसी के हताहत होने की रिपोर्ट नहीं हैं।

आज का इतिहास

- 1530: मेवाड़ के राणा संग्राम सिंह का निधन।
- 1649: इंग्लैंड के सम्राट 'चार्ल्स प्रथम' का सिर कलम किया गया।
- 1790: पहली लाइफबोट को टायन नदी में उतारा गया।
- 1889: हिन्दी साहित्यकार और कामायनी जैसे काव्य संग्रह के रचयिता जयशंकर प्रसाद का जन्म।
- 1903: लॉर्ड कर्जन ने कलक्मता) के मेटकाफ हॉल में 'इंपीरियल लाइब्रेरी' का उद्घाटन किया।
- 1910: भारतीय राजनेता, वकील और पूर्व रक्षा मंत्री चिदंबरम सुब्रमण्यम का जन्म।
- 1911: 'कैनेडियन नेवल सर्विस' का नाम बदलकर 'रॉयल कैनेडियन नेवी'।
- 1913: प्रसिद्ध भारतीय महिला चित्रकार अमृता शेरगिल का जन्म।
- 1933: एडॉल्फ हिटलर ने जर्मनी के चांसलर के तौर पर शपथ ली।

भारतीय नौसेना की जांबाजी

सुमात्रा ने बंधक ईरानी जहाज एमवी इमान को समुद्री लुटेरों से बचाया

● **नई दिल्ली**

भारतीय नौसेना ने जांबाजी दिखाते हुए समुद्री लुटेरों द्वारा अपह्त किए गए ईरानी जहाज को लुटेरों से मुक्त करा लिया। भारत के जंगी जहाज आईएनएस सुमित्रा ने मछुआरों और 17 क्रू मेंबर्स को समुद्री डाकुओं से बचाया। जानकारी के अुनसार भारतीय नौसेना के जंगी जहाज आईएनएस सुमित्रा ने अरब सागर में कोच्चि से 700 समुद्री मील दूर पश्चिम में सोमाली समुद्री डाकुओं द्वारा अपह्त किए गए लोगों को बचा लिया है। इस ईरानी जहाज एमवी इमान में 17 क्रू मेंबर बैठे हुए थे, जिनका अपहरण समुद्री डाकुओं ने कर लिया था। जानकारी मिलते ही हरकत में आई भारतीय नौसेनाभारतीय रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने इस घटना का खुलासा करते हुए कहा कि देश के पूर्वी तट की ओर यानी अरब सागर के पास अदन की खाड़ी में तैनात आईएनएस सुमित्रा ने तत्काल रेसपॉन्ड किया है।

हूती हमलों के बीच समुद्री लुटेरों ने किया अपहरण

मिशन ने हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री डकैती रोधी और समुद्री सुरक्षा अभियानों पर भारतीय नौसेना के जहाजों को तैनात किया, जो समुद्र में सभी जहाजों और नाविकों की सुरक्षा के प्रति भारतीय नौसेना के संकल्प का प्रतीक है। ताजा हमला लाल सागर और अन्य महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों पर मालवाहक जहाजों पर ईरान समर्थित हूती विद्रोहियों द्वारा किए गए हमलों की श्रृंखला के बीच हुआ है।

जहाज में लगी आग को बुझाया

अदन की खाड़ी में एक दिन पहले 27 जनवरी को जहाज एमवी मारलिनलुआंडा अचानक आग के हवाले हो गया। चालक दल सभी उम्मीदें तोड़ चुके थे। मगर अदन की खाड़ी में मौजूद भारतीय नौसेना ने आपात परिस्थितियों में इतने तेजी से मोर्चा संभाला की जहाज में लगी आग को बुझा दिया। अदन की खाड़ी में अज्ञात मिसाइल हमले से जहाज में आग लग गई थी। जहाज के कप्तान ने कहा कि ष्मैं सभी उम्मीदें खो चुका थाष। भारतीय नौसेना देवदूत बनकर आ गई।

उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण खत्म करने की चल रही साजिश

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि उच्च शिक्षण संस्थानों में अनुसूचित जाति, जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग को नौकरियों में मिलने वाले आरक्षण को खत्म करने की साजिश चल रही है और कांग्रेस कभी ऐसा नहीं होने देगी।

श्री गांधी ने सोमवार को एक्स पर पोस्ट कर कहा कि यूजीसी के नए ड्राफ्ट में उच्च शिक्षा संस्थानों में एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग को मिलने वाले आरक्षण को ख़त्म करने की साजिश हो रही है। आज 45 केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में लगभग 7,000 आरक्षित पदों में से 3,000 रिक्त हैं और जिनमें सिर्फ 7.1 प्रतिशत दलित, 1.6 प्रतिशत आदिवासी और 4.5 प्रतिशत पिछड़े वर्ग के प्रोफेसर हैं। आरक्षण की समीक्षा तक की बात कर चुकी भाजपा आरएसएस अब ऐसे उच्च शिक्षा संस्थानों में से वंचित वर्ग के हिस्से की नौकरियां छीनना चाहती है।

बाबा रामदेव की मोम प्रतिकृति का अनावरण आज किया जाएगा

देहरादून/नई दिल्ली। भारत ही नहीं, बल्कि विश्व भर के जन-जन में योग और भारतीय संस्कृति का जागरण करने वाले योग गुरु स्वामी रामदेव की मोम की प्रतिकृति का प्रतिष्ठित मैडम तुसाद संग्रहालय न्यूयार्क मंगलवार को अनावरण करेगा। स्वामी रामदेव पहले भारतीय सन्यासी होंगे, जिनकी प्रतिकृति न्यूयार्क मैडम तुसाद संग्रहालय में स्थापित हो रही है। पतंजलि के प्रवक्ता एसके तिजारावाला ने सोमवार को बताया कि विश्व का सबसे बड़ा मोम आकर्षण 'मैडम तुसाद संग्रहालय न्यूयॉर्क' मंगलवार को योग ऋषि स्वामी रामदेव की उपस्थिति में उनके मोम के पुतले का अनावरण करेगा।

जॉर्डन में ड्रोन हमले में तीन अमेरिकी सैनिकों की मौत, कई घायल

वाशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा है कि शनिवार रात सीरिया की सीमा के पास पूर्वोत्तर जॉर्डन में तैनात अमेरिकी बलों को निशाना बनाकर किए गए ड्रोन हमले में तीन अमेरिकी सैनिक मारे गए और कई अन्य घायल हो गए। श्री बाइडेन ने रविवार की रात कहा कि उनका प्रशासन अभी भी हमले के बारे में तथ्य जुटा रहा है। उन्होंने इस हमले के लिए सीरिया और इराक में सक्रिय ईरान समर्थित आतंकवादी समूहों को जिम्मेदार ठहराया। उधर, अमेरिका के सेंट्रल कमांड ने पुष्टि की कि एकतरफा हमले वाले ड्रोन द्वारा किए गए हमले में घायल सैनिकों की संख्या 25 है। श्री बाइडेन ने कहा कि अमेरिका 'सभी जिम्मेदार लोगों को एक समय और अपनी पसंद के तरीके से जवाबदेह ठहराएगा।' उल्लेखनीय है कि सात अक्टूबर को इजरायल और हमास के बीच संघर्ष शुरू होने के बाद से सीरिया और इराक में अमेरिकी सैनिकों पर अक्सर हमले हो रहे हैं।

खड़गे बोले-2024 में मोदी जीते, तो फिर कभी नहीं होंगे चुनाव

भुवनेश्वर। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोमवार को भुवनेश्वर में कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) और भाजपा जहर की तरह हैं। इनसे हमेशा दूर रहें। खड़गे पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। खड़गे ने कहा- 2024 लोकसभा चुनाव लोकतंत्र को बचाने का आखिरी मौका होगा। अगर इस चुनाव में भाजपा जीती तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस देश में दोबारा चुनाव नहीं होने देंगे। वे एक तानाशाह की तरह इस पर रोक लगाएंगे। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जद-यू के रविवार को कांग्रेस छोड़कर राजग में लौटने पर खड़गे ने दावा किया कि इसका चुनाव पर कोई असर नहीं पड़ेगा। महागठबंधन छोड़ने वाला एक व्यक्ति हमें कमजोर नहीं करेगा। हम भाजपा को हराएंगे। खड़गे ने कहा, ओडिशा को जगन्नाथ जी का पुण्य क्षेत्र माना जाता है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जीवन का आखिरी कांग्रेस अधिवेशन सन् 1964 में यहीं किया था। पंडित नेहरू और बीजू पटनायक काफी अच्छे दोस्त थे। वह नेहरू की विचारधारा को मानते थे। लेकिन आज के पटनायक, भाजपा की विचारधारा को मानते हैं।

आरएसएस-भाजपा जहर की तरह हैं, इनसे दूर रहें

नरेंद्र मोदी की दोस्ती से नवीन पटनायक को क्या मिला। खड़गे ने कहा- डबल इंजन कई बार फेल हो जाता है और जब वह ठीक से काम नहीं करता तो पहला इंजन भी काम करना बंद कर देता है।

मायावती को आरपीआई अध्यक्ष बनाने का ऑफर

लखनऊ। बसपा प्रमुख मायावती को आरपीआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामदास अठावले ने पार्टी में शामिल होने का ऑफर दिया है। उन्होंने कहा, मायावती अगर आरपीआई में शामिल हो जाएं तो उनको पार्टी का अध्यक्ष बना देंगे। जिससे कि हम बाबा साहब की विचारधाराओं को लोगों तक पहुंचा सकें। इसलिए आरपीआई और बसपा का एक साथ होना बहुत जरूरी है। वहीं, नीतीश कुमार के एडीए में शामिल होने पर कहा- उनको तो जाने-आने की आदत है।

ज्ञानवापी केस में एएसआई से अपील शिवलिंग-वजूस्थल के सर्वे किए जाए

नई दिल्ली। वाराणसी की ज्ञानवापी मस्जिद मामले में हिंदू पक्ष ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है। इस याचिका में आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) के डायरेक्टर जनरल से अपील की गई है कि वे परिसर में मिले शिवलिंग का सर्वे करें, ताकि उसकी वास्तविकता का पता लगाया जा सके। याचिका में कहा गया है कि सर्वे करने के लिए शिवलिंग के आसपास की आर्टिफिशियल या मॉर्डन दीवार और फ्लोर को हटाया जाए।

हिंदू पक्ष की सुप्रीम कोर्ट में याचिका

बिना शिवलिंग को नुकसान पहुंचाए सील किए गए पूरे इलाके का वैज्ञानिक सर्वे किया जाए। इससे पहले, 19 मई 2023 को सुप्रीम कोर्ट ने ज्ञानवापी के सर्वे पर रोक लगा दी थी। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने याचिका में ज्ञानवापी परिसर में सीलबंद वजूखाना (स्नान जल टैंक) का सर्वे कराने की मांग करने की बात कही थी। उन्होंने दावा किया है कि 10 सीलबंद तहखानों में हिंदू मंदिर के सबूत और कलाकृतियां हैं।

25 जनवरी को एएसआई सर्वे की रिपोर्ट सार्वजनिक की गई

ज्ञानवापी की एएसआई सर्वे की रिपोर्ट 25 जनवरी को देर रात सार्वजनिक हुई थी। इस रिपोर्ट के मुताबिक, परिसर के अंदर भगवान विष्णु, गणेश और शिवलिंग की मूर्ति मिली हैं। पूरे परिसर को मंदिर के स्ट्रक्चर पर खड़ा बताते हुए 34 साक्ष्य का जिक्र किया गया है। मस्जिद परिसर के अंदर महामुक्ति मंडप नाम का एक शिलापट भी मिला है। एएसआई ने रिपोर्ट में लिखा कि ज्ञानवापी में एक बड़ा हिंदू मंदिर मौजूद था। 17वीं शताब्दी में जब औरंगजेब का शासन था। उस वक्त ज्ञानवापी स्ट्रक्चर को तोड़ा गया।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि विवाद में सुनवाई अप्रैल तक टली

नई दिल्ली, (आरएनन)। मथुरा की शाही ईदगाह मस्जिद में सर्वे पर रोक बरकरार रहेगी। सुप्रीम कोर्ट ने सर्वे पर अंतरिम रोक अप्रैल तक बढ़ा दी है। सुप्रीम कोर्ट अप्रैल के पहले हिस्से में सुनवाई करेगा। कोर्ट ने सभी पक्षों से लिखित जवाब दाखिल करने को कहा है। मथुरा में श्री कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह मस्जिद विवाद मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच ने सुनवाई अप्रैल के पहले हफ्ते तक सुनवाई टल गई है। शाही ईदगाह के कोर्ट कमिश्नर के सर्वे के हाईकोर्ट के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट की रोक जारी रहेगी। पिछली सुनवाई के दौरान, न्यायमूर्ति संजीव खन्ना की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि स्थानीय आयुक्त की नियुक्ति के लिए आवेदन बहुत अस्पष्ट है, आदेश को अगली तारीख तक लागू न करें। न्यायमूर्ति खन्ना ने कहा कि आयोग को क्रियान्वित न होने दें। अपने आवेदन की प्रार्थना को देखो। 'मुकदमे में दिए गए कथन के आलोक में एक आयोग नियुक्त करने की प्रार्थना बहुत अस्पष्ट है।

राम मंदिर: वीवीआईपी दर्शनार्थियों के लिए खोले जाएंगे तीन नए द्वार

अयोध्या। राम मंदिर में वीआईपी व वीवीआईपी दर्शनार्थियों के आने और जाने के लिए तीन अलग द्वारों का उपयोग किया जाएगा। ऐसे में जन्मभूमि पथ पर आम श्रद्धालुओं की आवाजाही में कोई व्यवधान नहीं होगा।

आने वाले दिनों में भाजपा शासित कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ वहां की पूरी कैबिनेट को यहां आना है। ऐसे में इस नई व्यवस्था को प्रभावी किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को राम मंदिर परिसर में वरिष्ठ अधिकारियों और रामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारियों के साथ बैठक कर कई दिशा-निर्देश दिए। सीएम का मुख्य फोकस देशभर से आ रहे आम रामभक्तों को आराध्य के सुगम दर्शन कराने पर रहा। इसीलिए वीआईपी और वीवीआईपी के प्रवेश और निकासी की अलग से व्यवस्था करने पर सहमति बनी।

भक्तों को रामलला के करीब से कराए जाएंगे दर्शन

कर्नाटक में हनुमान ध्वज को उतारने पर मचा बवाल

बेंगलुरु। मंड्या जिले के केरेगोडु गांव में एक राम मंदिर है जिसे रंग मंदिर भी कहा जाता है। पिछले कई सालों से उस मंदिर के सामने एक 108 फीट ऊंचा स्तंभ है जिसपर पर हनुमान ध्वज लहराता है। मगर बीते रविवार को जिला प्रशासन ने अधिकारी उस स्तंभ से हनुमान ध्वज को उतारने के लिए मंदिर के बाहर बने स्तंभ के पास पहुंचे। प्रशासन के इस कार्रवाई से गांव के लोग नाराज हो गए और इसका विरोध करने के लिए वहां पर भारी संख्या में पहुंच गए। प्रशासन ने नाराज लोगों की भीड़ की वहां से हटाने के लिए लोगों पर लाठी चार्ज किया और इसके बाद स्तंभ से हनुमान ध्वज हटाकर वहां तिरंगा फहरा दिया। प्रशासन की इस कार्रवाई के खिलाफ भाजपा और छ्ष्ठस् समेत हिंदू संगठन के सदस्य भी मौदान में उतर गए और विरोध प्रदर्शन किया।

मालदीव में प्रेसिडेंट के खिलाफ महाभियोग लाने की तैयारी

माले। मालदीव के चीन समर्थक राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जु की कुर्सी खतरे में पड़ सकती है। लोकल मीडिया आउटलेट 'द सन' की रिपोर्ट के मुताबिक- दो पार्टियां मुइज्जु के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाने की तैयारी कर रही हैं। मालदीव की संसद में कुल 87 सांसद हैं। इनमें से 34 महाभियोग लाने के लिए तैयार हैं। रविवार को संसद में एंट्री और मुइज्जु कैबिनेट के कुछ नामों को लेकर काफी बवाल और मारपीट हुई थी। इसके अगले दिन यानी सोमवार को महाभियोग प्रस्ताव लाने की बात सामने आई।

दो पार्टियां साथ

रिपोर्ट के मुताबिक- मुख्य विपक्षी दल मालदीवियन डेमोक्रेटिक पार्टी के पास संसद में बहुमत है। उसने महाभियोग के लिए जरूरी सांसदों का समर्थन लिखित तौर पर हासिल कर लिया है। इसके एक सांसद ने नाम न बताने की शर्त पर कहा- हम कुछ और सांसदों से बातचीत के बाद महाभियोग लाने की तारीख पर फैसला करेंगे। अब तक एमडीपी और डेमोक्रेटिक पार्टी के कुल 34 सांसद हमारे साथ हैं। रिपोर्ट के मुताबिक- विपक्ष की नाराजगी मुइज्जु के तानाशाही रवैये को लेकर बढ़ गई।

69वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स — रणबीर कपूर को बेस्ट एक्टर और आलिया भट्ट को मिला बेस्ट एक्ट्रेस का पुरस्कार

12वीं फेल को बेस्ट फिल्म और बेस्ट स्क्रीनप्ले का अवॉर्ड

● **नई दिल्ली**

रविवार रात 69वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स की अनाउंसमेंट हुई। एनिमल में निभाए किरदार के लिए रणबीर कपूर को बेस्ट एक्टर का अवॉर्ड मिला, जबकि आलिया भट्ट को रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के लिए बेस्ट एक्ट्रेस का फिल्मफेयर अवॉर्ड दिया गया। 12वीं फेल को बेस्ट फिल्म और बेस्ट स्क्रीनप्ले का अवॉर्ड मिला। साथ ही विधु विनोद चोपड़ा को इसी फिल्म के लिए बेस्ट डायरेक्टर का भी अवॉर्ड दिया गया।

शबाना आजमी ने रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के लिए बेस्ट सपोर्टिंग एक्ट्रेस का अवॉर्ड जीता। ओएमजी-2 को बेस्ट स्टोरी का अवॉर्ड दिया गया। इशिता मोइत्रा को रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के लिए बेस्ट डायलॉग का फिल्मफेयर अवॉर्ड मिला। इसके अलावा शिल्पा राव को पठान के गाने बेशरम रंग के लिए बेस्ट फीमेल प्लेबैक सिंगर का अवॉर्ड मिला। एनिमल का गाना अर्जन वैली गाने वाले भूपेंद्र बब्बल को बेस्ट प्लेबैक सिंगर मेल का अवॉर्ड मिला। सिनेमा में योगदान के लिए डायरेक्टर डेविड धवन को लाइफ टाइम अचीवमेंट पुरस्कार दिया गया।

- बेस्ट फिल्म- 12वीं फेल
- बेस्ट एक्टर- रणबीर कपूर (एनिमल)
- बेस्ट एक्ट्रेस- आलिया भट्ट (रॉकी और रानी की प्रेम कहानी)
- बेस्ट डायरेक्टर- विधु विनोद चोपड़ा (12वीं फेल)
- लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड- डेविड धवन (डायरेक्टर)
- बेस्ट डेब्यू एक्टर (मेल)- आदित्य रावल (फराज)
- बेस्ट डेब्यू एक्ट्रेस (फीमेल)- अलीजेह अग्निहोत्री (फर्रे)
- बेस्ट डेब्यू डायरेक्टर- तरूण डुडेजा (फिल्म- धक-धक)
- बेस्ट एक्ट्रेस इन सपोर्टिंग रोल- शबाना आजमी (रॉकी और रानी की प्रेम कहानी)
- बेस्ट एक्टर इन सपोर्टिंग रोल- विक्की कौशल (डंकी)
- बेस्ट एक्ट्रेस क्रिटिक्स- रानी मुखर्जी (मिसेज चटर्जी वर्सेज नॉर्वे) और शेफाली शाह (थ्री ऑफ अस)
- बेस्ट एक्टर क्रिटिक्स- विक्रांत मैसी (12वीं फेल)
- बेस्ट फिल्म क्रिटिक्स- जोरम

यूपी में स्मार्टमीटर लगाने का ठेका पोलारिस को

■ लखनऊ व अयोध्या-देवीपाटन में लगेंगे मीटर ■ दोनों ठेकों पर खर्च होंगे 5200 करोड़ रुपए

नई दिल्ली (भाषा)। पोलारिस स्मार्ट मीटरिंग को उत्तर प्रदेश में 5,200 करोड़ रुपये की दो स्मार्ट मीटर परियोजनाएं मिली हैं।

पोलारिस स्मार्ट मीटरिंग ने सोमवार को बयान में कहा, 'मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (एमवीवीएनएल) ने लखनऊ और अयोध्या/देवीपाटन के महत्वपूर्ण क्लस्टर में 51 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर लगाने का ठेका दिया है। इन स्मार्ट मीटर को कंपनी अगले 27 महीने में लगाने की तैयारी कर रही है।' कंपनी ने कहा कि समझौते के अनुसार, पोलारिस स्मार्ट मीटरिंग अगले 10 साल तक उपभोक्ताओं के लिए इन स्मार्ट मीटरों की आपूर्ति करेगी, इन्हें चालू करेगी, लगाएगी और इनका रखरखाव करेगी।

■ कंपनी को 27 माह में लगाने हैं मीटर
■ दस साल तक मीटर्स देगी यह कंपनी
■ 10 वर्ष तक इनका मेन्टेनेंस भी करेगी कंपनी
■ कंपनी को प. बंगाल व मणिपुर में भी मिले ठेके

ये स्मार्ट मीटर अत्याधुनिक तकनीक से लैस होंगे, जो प्रीपेड बिलिंग, वास्तविक समय में ऊर्जा निगरानी, सटीक मीटरिंग और बेहतर ग्रिड प्रबंधन क्षमताएं प्रदान करेंगे।

यह अनुबंध डिज़ाइन-उत्पादन-वित्तपोषण-परिचालन-स्वामित्व-हस्तांतरण (डीबीएफओओटी) समझौते के अंतर्गत आता है।

इस बीच, पोलारिस को पश्चिम बंगाल और मणिपुर से दोनों राज्यों में 23 लाख से अधिक स्मार्ट मीटर लगाने का 2,400 करोड़ रुपये से अधिक के आशय पत्र (एलओए) भी प्राप्त हुए हैं।

एनआईएसएम ने निदेशक पद के लिए आवेदन मांगे

नई दिल्ली (भाषा)।

सेबी की शैक्षणिक पहल नेशनल इंस्टिट्यूट आफ सिक्योरिटीज मार्केट (एनआईएसएम) ने निदेशक पद के लिए आवेदन आमंत्रित किए हैं। एनआईएसएम का निदेशक संस्थान का प्रधानाचार्य और सीईओ भी होता है। सेबी द्वारा संचालित एनआईएसएम सबसे बड़े वित्तीय बाजार प्रमाणन संस्थानों में से है।

सेबी की वेबसाइट पर उपलब्ध नोटिस के अनुसार, निदेशक की नियुक्ति अनुबंध या प्रतिनियुक्ति के आधार पर होगी। इस पद के लिए 18 फरवरी तक आवेदन दिए जा सकते हैं। चयनित उम्मीदवार को शुरुआत में तीन साल के लिए अनुबंध या प्रतिनियुक्ति पर नियुक्त किया जाएगा जिसे पांच साल तक बढ़ाया जा सकता है।

स्पाइसजेट को मिले 900 करोड़ रुपए

■ सुविधाओं में सुधार पर खर्च होगी यह रकम

नई दिल्ली (भाषा)। विमानन कंपनी स्पाइसजेट इस महीने 900 करोड़ रुपये के अधिक कोष के साथ अपने बेड़े के उन्नयन तथा लागत में कटौती के उपायों पर ध्यान केंद्रित करेगी। एयरलाइन द्वारा वरिष्ठ कर्मचारियों को सोमवार को भेजे एक आंतरिक पत्र के अनुसार, अब उसके पास 900 करोड़ रुपये से अधिक की पर्याप्त राशि है। इसमें सरकार से आपात क्रेडिट लाइन गारंटी योजना के तहत किस्त के रूप में प्राप्त 160 करोड़ रुपये भी शामिल हैं।

कई परेशानियों से घिरी कंपनी को अब तक ईसीएलजीएस के तहत करीब 1,000 करोड़ रुपये मिले हैं। मामले की जानकारी रखने वाले एक अधिकारी ने बताया कि हाल ही में कंपनी के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक अजय सिंह द्वारा एयरलाइन में निवेश करने के बाद यह नई किस्त जारी की गई। सिंह ने 500 करोड़ रुपये के निवेश की पिछले साल घोषणा की थी जिसमें से अभी तक 200 करोड़ रुपये का निवेश कर दिया है। अधिकारी ने बताया कि कि एयरलाइन ने तीन महीने में कुल 1,100 करोड़ रुपये से अधिक का कोष जुटाया है।

संक्षिप्त खबरें

मैक्स लाइफ का पेंशन प्लान

नई दिल्ली। मैक्स लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ने एक नॉन लिंक्ड, नॉन पार्टिसिपेटिंग इंडिविजुअल ग्रुप जनरल एन्युटी सेविंग्स प्लान स्मार्ट वेल्थ एन्युटी गारंटीड पेंशन प्लान लांच किया है। नई पीढ़ी के लिए तैयार पेंशन प्लान रिटायरमेंट प्लानिंग को नए सिरे से परिभाषित करेगा। इसमें इंडिविजुअल और ग्रुप्स की जरूरत के हिसाब से फ्लेक्सीबिलिटी, सिक्योरिटी और पर्सनलाइजेशन की सुविधा है। मैक्स लाइफ के मैनेजिंग डायरेक्टर एवं सीईओ प्रशांत त्रिपाठी ने कहा, 'तेजी से बदलते दौर में रिटायरमेंट के बाद वित्तीय रूप से तैयार होना भारत के बड़े वर्कफोर्स के लिए जरूरी हो गया है। स्मार्ट वेल्थ एन्युटी गारंटीड पेंशन प्लान ग्राहकों की बदलती जरूरतों के अनुरूप समाधान देगा।

उत्कर्ष बैंक ने किया करार

नई दिल्ली। प्रोबेशनरी ऑफिसर प्रोग्राम को लेकर उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक लिमिटेड और इंस्टीट्यूट आफ प्रोफेशनल बैंकिंग के बीच करार हुआ है। उत्कर्ष स्माल फाइनेंस बैंक लिमिटेड के एमडी और सीईओ गोविंद सिंह ने कहा कि बैंकिंग में करियर बनाने के इच्छुक युवा प्रतिभाओं को प्रोबेशनरी आफिसर प्रोग्राम में शामिल करने की एक पहल है। इंस्टीट्यूट आफ प्रोफेशनल बैंकिंग के साथ हमारी सहभागिता गतिशील बैंकरों को आकार देने और देश में बैंकिंग क्षेत्र के विकास में योगदान देने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

रिस्पांसिबिलिटी निवेश करेगी

मुंबई। स्विट्जरलैंड स्थित परिसंपत्ति प्रबंधक रिस्पॉन्सएबिलिटी इन्वेस्टमेंट्स एजी घरेलू कंपनी ब्लूस्मार्ट में 2.5 करोड़ अमेरिकी डालर तक का निवेश करेगी। संयुक्त बयान में सोमवार को कहा गया कि निवेश से ब्लूस्मार्ट को देशभर में अपने ईवी चार्जिंग बुनियादी ढांचे का विस्तार करने में मदद मिलेगी। अपनी 50 करोड़ अमेरिकी डालर की जलवायु परिवर्तन निवेश रणनीति के तहत रिस्पॉन्सएबिलिटी अपने निवेशकों की ओर से ब्लूस्मार्ट में 2.5 करोड़ अमेरिकी डालर तक का निवेश करेगी।'

अडाणी ग्रीन का लाभ बढ़ा

नई दिल्ली। अडाणी ग्रीन एनर्जी का चालू वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ 148% से अधिक बढ़कर 256 करोड़ रुपये रहा। कंपनी का पिछले वित्त वर्ष 2022-23 की इसी तिमाही में शुद्ध लाभ 103 करोड़ रुपये था। कंपनी ग्रीन ने बताया कि तीसरी तिमाही में कुल आय बढ़कर 2,675 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 2,256 करोड़ रुपये थी। कंपनी के सीईओ अमित सिंह ने कहा, 'हाल ही में घोषित इक्विटी तथा ऋण पूंजी वृद्धि के साथ हमने 2030 तक लक्षित 45 गीगावॉट क्षमता के पूंजी प्रबंधन ढांचा तैयार किया है।'(एजेंसी)

तीन साल में टॉप-3 में आ सकती है इकोनामी

नई दिल्ली(भाषा)।

वित्त मंत्रालय ने सोमवार को कहा कि अगले तीन साल में पांच लाख करोड़ डालर के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के साथ भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है और सतत सुधारों से यह वर्ष 2030 तक सात लाख करोड़ डालर का आंकड़ा भी छू लेगा। दस साल पहले भारत 1.9 लाख करोड़ डालर के जीडीपी के साथ दुनिया की 10वीं बड़ी अर्थव्यवस्था था।

■ वित्त मंत्रालय ने पेश की इकोनामी की सुनहरी तस्वीर
■ वर्ष 2027 में तीन लाख करोड़ पर पहुंचेगी अर्थव्यवस्था
■ वर्ष 2030 तक सात लाख करोड़ का स्तर पार कर लेगी

वित्त मंत्रालय ने अर्थव्यवस्था की जनवरी माह की समीक्षा रिपोर्ट में कहा है कि महामारी के असर और वृहद-आर्थिक असंतुलन एवं खंडित वित्तीय क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था की विरासत के बावजूद भारत वित्त वर्ष 2023-24 में 3.7 लाख करोड़ डालर की अनुमानित जीडीपी के साथ पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है। मंत्रालय ने कहा, '10 साल की यह यात्रा ठोस एवं क्रमिक दोनों तरह के कई सुधारों से गुजरी है। उन्होंने देश की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन सुधारों ने आर्थिक मजबूती भी दी है जिसकी देश को भावी अप्रत्याशित वैश्विक झटकों से निपटने के लिए जरूरत होगी।'

इसी के साथ मंत्रालय ने कहा कि अगले तीन वर्षों में भारत के पांच लाख करोड़ डालर के जीडीपी के साथ दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की उम्मीद है। समीक्षा रिपोर्ट के मुताबिक सरकार ने वर्ष 2047 तक 'विकसित देश' बनने का एक बड़ा लक्ष्य रखा है। सुधारों की यात्रा जारी रहने पर इस लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है।' समीक्षा रिपोर्ट कहती है, 'घरेलू मांग की ताकत ने पिछले तीन वर्षों में अर्थव्यवस्था को सात प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर दी है। वित्त वर्ष 2024-25 में वास्तविक जीडीपी वृद्धि सात प्रतिशत के करीब रहने की संभावना है। वर्ष 2030 तक वृद्धि दर के सात प्रतिशत से अधिक रहने की काफी गुंजाइश है।'

हालांकि, मंत्रालय ने समीक्षा में पाया कि हालिया एवं भावी संरचनात्मक सुधारों के बल पर भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर के लिए भू-राजनीतिक संघर्षों का बढ़ा जोखिम चिंता का सबब बन सकता है।

इसके मुताबिक मुद्रास्फीति अंतर और विनिमय दर के संबंध में उचित धारणाओं के अनुरूप भारत अगले छह-सात साल में (2030 तक) सात लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा कर सकता है।' मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन ने समीक्षा रिपोर्ट की भूमिका में कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था कोविड के बाद अपने पुनरुद्धार को कायम रखने के लिए संघर्ष कर रही है।

भारत की आर्थिक आकांक्षाओं के केंद्र में है अडाणी समूह

नई दिल्ली (भाषा)। अरबपति गौतम अडाणी की अगुवाई वाला समूह बुनियादी ढांचा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की वजह से भारत के वर्ष 2030 तक दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा के केंद्र में है। अमेरिकी वित्तीय सेवा कंपनी कैंटर फिट्जगेराल्ड एंड कंपनी ने यह टिप्पणी की है। विश्लेषक ब्रेट नोब्लॉक और थॉमस शिंस्के ने 28 जनवरी को लिखे एक नोट में अडाणी समूह की प्रमुख कंपनी अडाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड को अपने कवरेज में लाते हुए कहा है कि यह 50 प्रतिशत से अधिक का मुनाफा दे सकती है। विश्लेषक फर्म ने कहा, 'भारत अब दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश है और 2030 तक दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की महत्वाकांक्षा रखता है। उस मुकाम तक पहुंचने के लिए भारत को डिजिटल और भौतिक बुनियादी ढांचे दोनों में निवेश करने की आवश्यकता है।

रिलायंस में भारी लिवाली से सेंसेक्स की लंबी छलांग

■ सत्र की समाप्ति पर 1241 अंक की तेजी से 71942 पर हुआ बंद

■ निफ्टी 385 अंक उछलकर 21738 पर बंद ■ अंतरिम बजट पर निवेशकों का भरोसा बरकरार

मुंबई (भाषा)।

स्थानीय शेयर बाजार में सोमवार को तेजी लौटी और दोनों मानक सूचकांक में जोरदार उछाल आया। एशिया के अन्य बाजारों में तेजी के बीच रिलायंस इंडस्ट्रीज में भारी लिवाली के साथ बीएसई सेंसेक्स जहां 1,241 अंक मजबूत हुआ, वहीं नेशनल स्टाक एक्सचेंज का निफ्टी 21,700 अंक के आंकड़े को पार कर गया।

तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 1,240.90 अंक यानी 1.76 प्रतिशत की बढ़त के साथ 71,941.57 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान एक समय यह 1,309.55 अंक तक उछल गया था। निफ्टी भी 385 अंक यानी 1.80 प्रतिशत उछलकर 21,737.60 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में रिलांयस इंडस्ट्रीज का शेयर करीब सात प्रतिशत चढ गया। बाजार में तेजी में इसका सबसे ज्यादा योगदान रहा। इसके अलावा टाटा मोटर्स, पावर ग्रिड, लार्सन एंड टुब्रो, कोटक महिंद्रा बैंक, एनटीपीसी, टाइटन और अल्ट्राटेक सीमेंट भी प्रमुख रूप से लाभ में रहे।

दूसरी तरफ आईटीसी, इन्फोसिस, जेएसडब्ल्यू स्टील, टेक महिंद्रा और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज नुकसान में रहे। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के शोध प्रमुख विनोद नायर ने कहा, 'हाल की बिकवाली तथा एशिया के अन्य बाजारों में तेजी के बाद प्रमुख कंपनियों के शेयरों में लिवाली से घरेलू बाजार में तेजी लौटी। शेयरों के अधिक मूल्यांकन के बावजूद अंतरिम बजट को लेकर निवेशकों के बीच भरोसा बना हुआ है।'

उन्होंने कहा, 'वैश्विक स्तर पर अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की आगामी मौद्रिक नीति समीक्षा महत्वपूर्ण है।

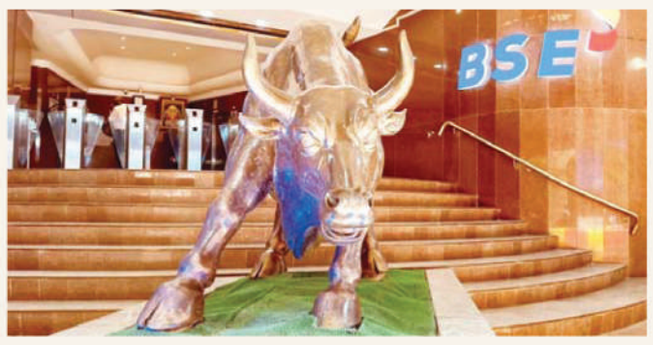

रिलायंस का शेयर 7% चढ़ा

रिलायंस इंडस्ट्रीज का शेयर सोमवार को करीब सात प्रतिशत चढ़ गया। इससे कंपनी का बाजार मूल्यांकन 19.59 लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गया। बीएसई पर लगातार तीसरे दिन तेजी के साथ रिलायंस का शेयर 6.86 प्रतिशत बढ़कर 2,896.15 रुपये पर बंद हुआ। दिन के दौरान यह 7.18 प्रतिशत की बढ़त के साथ 2,905 रुपये के सर्वकालिक उच्चस्तर पर पहुंच गया था। एनएसई पर यह 6.79 प्रतिशत उछलकर 2,890.10 रुपये पर पहुंच गया। दिन में कारोबार के दौरान यह 7.34 प्रतिशत बढ़कर 2,905 रुपये के रिकार्ड स्तर पर पहुंच गया था। दिन में बीएसई पर कंपनी के 8.24 लाख शेयरों और एनएसई पर 1.19 करोड़ से अधिक शेयरों का कारोबार हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन (एमकैप) बढ़कर 19,59,444.03 करोड़ हो गया।

निवेशकों की खूब कमाई हुई

रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयरों में भारी लिवाली और एशियाई बाजारों में तेजी के चलते बीएसई सेंसेक्स में करीब दो प्रतिशत के उछाल के साथ सोमवार को निवेशकों की संपत्ति छह लाख करोड़ रुपये बढ़ गई। बीएसई पर सूचीबद्ध कंपनियों का एमकैप 6,08,556 करोड़ बढ़कर 3,77,20,679 करोड़ हो गया।

इकोनामी जीवंत ऊर्जा से लबरेज, 'वाउ' जैसी स्थिति : बिड़ला

मुंबई (भाषा)।

जाने-माने उद्योगपति कुमार मंगलम बिड़ला ने सोमवार को कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था जीवंत ऊर्जा से लबरेज है और 'वाउ' जैसी स्थिति (शानदार स्थिति) में है। सोशल मीडिया पर चल रहे 'वायरल मीम लुकिंग लाइक ए वाउ' के आधार पर उन्होंने यह कहा है।

बिड़ला ने नए साल के संदेश में कहा है कि राष्ट्र इस समय आत्मविश्वास से सराबोर है और यह साफ दिख रहा है। 'मीम' उस क्षण की 'अद्वितीय प्रकृति' को उकेरता है।

बिड़ला ने कहा, 'जो वायरल मीम है, वह सही मायने में भारतीय अर्थव्यवस्था की जीवंत ऊर्जा को प्रतिबिंबित करता है और इस क्षण की अद्वितीय प्रकृति को दर्शाता है।' उन्होंने कहा कि भले ही दुनिया का बड़ा हिस्सा निराशावाद में डूबा हुआ है, भारत अटूट आशावाद के साथ आगे बढ़ रहा है। बिड़ला ने कहा, 'यह एक युवा देश और प्राचीन सभ्यता की गतिशीलता और ऊर्जा है जिसने अपनी आवाज तथा आधार पाया है।' यह साफ दिख रहा है कि देश आगे बढ़ रहा है। उन्होंने इसके लिए सरकार को श्रेय देते हुए कहा, 'भारत उम्मीद, गर्व और प्रत्याशा से भरा हुआ है।' उद्योगपति ने व्यापक स्तर पर जो उम्मीद की किरण दिख रही है, उसे मापने के लिए 'राष्ट्रीय आत्मविश्वास सूचकांक' बनाने की भी वकालत की।

विविध कारोबार से जुड़े आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन ने कहा कि 2023 में उनका बाजार पूंजीकरण 40 प्रतिशत बढ़कर 90 अरब डालर से अधिक हो गया। इसी वर्ष उनके विनिर्माण कारोबार का एकीकरण भी हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि समूह का उपभोक्ता कारोबार बदलाव वाले विकास के कगार पर है।

चीनी उत्पादन में कमी का अनुमान

■ 4% तक हो सकती है यह कमी ■ 3 करोड़ टन हो सकता है उत्पादन

नई दिल्ली (भाषा)।

देश में चीनी का उत्पादन 2023-24 सीजन (अक्टूबर-सितंबर) में सालाना आधार पर करीब चार प्रतिशत घटकर 3.16 करोड़ टन रहने का अनुमान है। चीनी व्यापार संगठन अखिल भारतीय चीनी व्यापार संघ (एआईएसटीए) ने सोमवार को अपना पहला उत्पादन अनुमान जारी करते हुए कहा कि 3.16 करोड़ टन के अनुमानित चीनी उत्पादन और 57 लाख टन के शुरुआती भंडार के साथ देश में चीनी की उपलब्धता 3.73 करोड़ टन होने की संभावना है। यह अनुमानित घरेलू खपत 2.9 करोड़ टन से अधिक है। एआईएसटीए के अनुसार 2023-24 सीजन में चीनी का अंतिम भंडार करीब 82 लाख टन होगा। अखिल भारतीय चीनी व्यापार संघ (एआईएसटीए) के चेयरमैन प्रफुल्ल विठलानी ने कहा कि पहला अनुमान इस्तेमाल किए गए गन्ने की मात्रा, अब तक प्राप्त उपज तथा वसूली दर, शेष खड़ी फसल तथा इथेनॉल के उत्पादन उत्पादन के लिए 'सुक्रोज' के विविधीकरण को ध्यान में रखते हुए लगाया गया है। उन्होंने कहा कि उत्पादन अनुमान में तीन प्रतिशत का अंतर हो सकता है।

वित्त वर्ष 2023-24 सीज़न में उत्तर प्रदेश में चीनी का उत्पादन 1.17 करोड़ टन से अधिक होने का अनुमान है। इसी अवधि में महाराष्ट्र में 96 लाख टन और कर्नाटक में 47 लाख टन उत्पादन का अनुमान है।

एमएफ कंपनियों ने एनएफओ से ₹63854 करोड़ जुटाए

नई दिल्ली (भाषा)।

परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियों (एएमसी) ने बाजार में तेजी के माहौल के बीच वर्ष 2023 में 212 नई फंड पेशकश (एनएफओ) से कुल 63,854 करोड़ रुपये जुटाए जो एक साल पहले की तुलना में थोड़ा अधिक है।

एएमसी ने वर्ष 2022 में 228 एनएफओ के जरिये 62,187 करोड़ रुपये जुटाए थे। एएमसी ने 2021 में एनएफओ के जरिये 99,704 करोड़ रुपये और 2020 में 53,703 करोड़ रुपये जुटाए थे। निवेश एवं शोध फर्म फायर्स रिसर्च ने एनएफओ के बारे में जारी अपनी रिपोर्ट में कहा, ''बदलते ग्राहक व्यवहार और उच्च जीवनस्तर की जरूरतों के साथ निवेशकों को दीर्घकालिक निवेश की अहमियत पता है।

ईवी की तुलना में हाईब्रिड वाहनों से कम उत्सर्जन

नई दिल्ली (भाषा)। हाइब्रिड वाहन भारत के 'शुद्ध शून्य कार्बन' अभियान के लिए मध्यम अवधि का व्यावहारिक समाधान है क्योंकि देश अंततः विद्युतीकरण की ओर बढ़ रहा है। एचएसबीसी ग्लोबल रिसर्च की एक रिपोर्ट में यह बात कही गई है। मौजूदा परिस्थितियों में हाइब्रिड कारों से कुल कार्बन उत्सर्जन इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की तुलना में कम है। रिपोर्ट में कहा गया, 'हाइब्रिड न केवल स्वामित्व की लागत के नजरिये से, बल्कि भारत के 'शुद्ध शून्य कार्बन' अभियान के लिए भी महत्वपूर्ण है।'

इसमें कहा गया कि ईवी की तुलना में हाइब्रिड गाड़ियां बहुत कम प्रदूषणकारी होती है। ईवी से कुल कार्बन उत्सर्जन यानी 'वेल टू व्हील' (डब्ल्यूटीडब्ल्यू) वर्तमान में 158 ग्राम/किलोमीटर है, जबकि डीजल के लिए 201 ग्राम/किमी, पेट्रोल के लिए 176 ग्राम/किमी और हाइब्रिड के लिए 133 ग्राम/किमी है। रिपोर्ट के अनुसार, इसका मतलब है कि हाइब्रिड डीजल, पेट्रोल और आनुपातिक ईवी की तुलना में क्रमशः 34 प्रतिशत, 25 प्रतिशत और 16 प्रतिशत कम प्रदूषणकारी है। रिपोर्ट कहती है कि दीर्घावधि में इलेक्ट्रिक वाहन तो तय ही है। 'हमारा मानना है कि भारत को एक भरोसेमंद और पूर्ण विद्युतीकरण की व्यावहारिक रूपरेखा के लिए अगले पांच से 10 साल में हाइब्रिड की स्वीकार्यता बढ़ानी होगी।'

महर्षि यूनिवर्सिटी में टैबलेट व स्मार्टफोन का वितरण

नई दिल्ली (वि.)। महर्षि यूनिवर्सिटी आफ़ इन्फार्मेशन टेक्नोलॉजी, उत्तर प्रदेश ने अपने लखनऊ परिसर में 'स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना' के तहत 'टैबलेट एवं स्मार्टफ़ोन वितरण' का कार्यक्रम आयोजन किया है। इस मौके पर कुलपति, प्रो. भानु प्रताप सिंह द्वारा स्वागत भाषण दिया गया।

महर्षि यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति ने डिजिटल क्रांति और डिजिटल सशक्तिकरण की अनिवार्य भूमिका पर जोर दिया। इस अवसर के एच.सी. गुप्ता (वरिष्ठ प्रबंधक-सिस्टम), नवीन श्रीवास्तव (वरिष्ठ सलाहकार), श्रीमती अर्तिका श्रीवास्तव (सलाहकार) और यूपीडेस्को से हेमंत त्रिवेदी (परियोजना समन्वयक) उपस्थित थे। महर्षि यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति, अजय प्रकाश श्रीवास्तव ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

एमएसएमई क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी होते देखना चाहता हूं : मित्तल

नई दिल्ली (भाषा)।

दूरसंचार सचिव नीरज मित्तल ने सोमवार को कहा कि छोटी, नवोन्वेषी कंपनियों के कुछ ''उत्कृष्ट'' उत्पाद बनाने के तथ्य पर गौर करते हुए वह एमएसएमई को न केवल सार्वजनिक क्षेत्र की निविदाओं के लिए बल्कि निजी क्षेत्र में भी प्रतिस्पर्धी होते देखना चाहते हैं।

दूरसंचार विभाग के शीर्ष अधिकारी मित्तल ने कहा कि सरकार पीएलआई योजना में सुधार करना चाहती है और नई, बेहतर योजना के लिए एमएसएमई से भी उनके विचार मांगे हैं। उन्होंने कहा कि दूरसंचार परिवेश को भारत में विकसित होना चाहिए क्योंकि यह उप-प्रणालियों को लाने और उन्हें एकत्र करने के लिए पर्याप्त नहीं है।'

सौर क्षेत्र में एक दशक का सर्वाधिक वित्तपोषण

■ दुनियाभर में इस क्षेत्र में 34 अरब डालर का निवेश ■ इस क्षेत्र में 2023 में दर्ज हुई 42 फीसद की वृद्धि

नई दिल्ली (भाषा)।

दुनिया भर में अनुकूल नीतियों और ऊर्जा सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करने से वैश्विक स्तर पर सौर क्षेत्र में कार्पोरेट वित्तपोषण 2023 में 42 प्रतिशत बढ़कर 34.3 अरब अमेरिकी डालर हो गया। एक रिपोर्ट में यह बात कही गई।

मेरकॉम कैपिटल की ओर से सोमवार को जारी एक रिपोर्ट के अनुसार, कुल कॉर्पोरेट वित्तपोषण में उद्यम पूंजी (वीसी) कोष, सार्वजनिक बाजार तथा ऋण वित्तपोषण शामिल हैं।

'मेरकॉम एनुअल एंड क्यू4 2023 सोलर फंडिंग' रिपोर्ट में कहा गया कि 2023 में जुटाई गई 34.3 अरब अमेरिकी डालर की राशि एक दशक में सर्वाधिक है। रिपोर्ट में कहा गया, 'सौर क्षेत्र में कुल कार्पोरेट वित्तपोषण 2023 में सालाना आधार पर 42 प्रतिशत बढ़ा। 160 सौदों में 34.3 अरब मिलियन अमेरिकी डालर जुटाए गए, जबकि 2022 में 175 सौदों में 24.1 अरब अमेरिकी डालर जुटाए गए थे।' मेरकॉम कैपिटल समूह के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) राज प्रभु ने कहा कि उच्च ब्याज दरों और चुनौतीपूर्ण बाजार स्थितियों के बावजूद इस क्षेत्र में वित्तपोषण एक दशक में सबसे अधिक रहा।

उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा मुद्रास्फीति न्यूनीकरण अधिनियम (अमेरिका का एक कानून), वैश्विक स्तर पर ऊर्जा सुरक्षा पर ध्यान देना और दुनिया भर में अनुकूल नीतियां निवेश को आकर्षित करती रहेंगी।

विश्वकप में डेब्यू करते ही सोनम की चांदी

महिला 25 मी. पिस्टल स्पर्धा में पांचवें स्थान पर रहीं सिमरनप्रीत

काहिरा, (एजेंसी)। सोनम मासकर ने आईएसएसएफ निशानेबाजी विश्व कप में डेब्यू करते हुए सोमवार को महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में रजत पदक जीता। सोनम ने आठ महिलाओं के फाइनल में 252.1 स्कोर किया।

वह जर्मनी की अन्ना जांस्सेन से 0.9 अंक पीछे रही। पोलैंड की अनेता स्टानकीविच को कांस्य पदक मिला। सोनम ने 633.1 और नैंसी ने 632.7 के स्कोर के साथ पांचवां और चौथा स्थान लेकर फाइनल में प्रवेश किया था। इससे पहले दिव्यांश सिंह पंवार ने विश्व रिकॉर्ड स्कोर के साथ पुरूष वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। एक अन्य स्पर्धा में पदार्पण कर रही सिमरनप्रीत कौर बरार महिला 25 मीटर पिस्टल स्पर्धा में पांचवें स्थान पर रहीं। पहली बार इस स्तर पर व्यक्तिगत स्पर्धा में हिस्सा ले रही सिमरनप्रीत क्वालीफिकेशन में 586 अंक के साथ शीर्ष पर रहीं थी। सिमरनप्रीत ने क्वालीफाइंग में जर्मनी की गत विश्व चैंपियन डोरीन वेनेकैंप और पूर्व ओलंपिक चैंपियन यूनान की अन्ना कोराकाकी जैसी निशानेबाजों को पछाड़ा। स्पर्धा में हिस्सा ले रही दो अन्य भारतीय रिदम सांगवान और मनु भाकर 582 और 580 अंक के साथ क्रमशः 9वें और 14वें स्थान पर रहते हुए आठ निशानेबाजों के फाइनल में जगह बनाने में नाकाम रहीं। डोरीन और अन्ना ने फाइनल में क्रमशः 39 और 37 अंक के साथ स्वर्ण और रजत पदक जीता। हंगरी की वेरोनिका ने कांस्य पदक हासिल किया। भारत सत्र के शुरुआती विश्वकप में तीन दिन की स्पर्धाओं के बाद दो स्वर्ण पदक और तीन रजत पदक के साथ शीर्ष पर चल रहा है।

ईस्ट बंगाल बना सुपर कप चैंपियन

भुवनेश्वर,(एजेंसी)। क्लेटन सिल्वा के निर्णायक गोल की बदौलत कोलकाता का मशहूर क्लब ईस्ट बंगाल रविवार को यहां रोमांचक फाइनल में ओडिशा एफसी पर 3-2 की जीत से कलिंगा सुपर कप चैंपियन बना। दोनों टीम को गोल करने के कई मौके मिले लेकिन नियमित समय में मुकाबला 2-2 से बराबर रहा। इसके बाद एक्स्ट्रा टाइम के पहले हाफ के अंत में भी दोनों बराबरी पर थीं। ब्रोजील के क्लेटन ने 111वें मिनट में ईस्ट बंगाल के लिए विजयी गोल दागा जिससे टीम के खिलाड़ी खुशी से झूमने लगे और प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों को सदमा लगा। क्लेटन ने ओडिशा के गोलकीपर की गलती का फायदा उठाते हुए महत्वपूर्ण मौके पर बायें पैर से शॉट लगाकर गोल किया। ओडिशा एफसी ने फिर बचे हुए समय में बराबरी हासिल करने की कोशिश की लेकिन ईस्ट बंगाल का डिफेंस दमदार रहा। विजेता ईस्ट बंगाल की टीम को अब एएफसी 2023-24 सत्र के प्रतिष्ठित एशियाई चैम्पियंस लीग 2 शुरूआती चरण में खेलने क लिए नामांकित किया जाएगा।

भारतीय मुक्केबाज मंदीप जांगड़ा ने जीता इंटरकांन्टिनेंटल खिताब

नई दिल्ली,(एजेंसी)। भारतीय मुक्केबाज मनदीप जांगड़ा ने वाशिंगटन के टॉप्पेनिश सिटी में गेरार्डो एसक्विवेल को हराकर अमेरिका स्थित नेशनल बॉक्सिंग एसोसिएशन (एनबीए) का इंटरकांन्टिनेंटल सुपर फेदरवेट खिताब जीता। अपने पेशेवर करियर में अब तक अपराजित रहने वाले 30 साल के जांगड़ा ओलंपिक के पूर्व रजत पदक विजेता रॉय जोन्स जूनियर के मार्गदर्शन में अभ्यास करते हैं। उन्हें अमेरिका के मुक्केबाज के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपने पिछले 75 किलोग्राम भार वर्ग को छोड़ कर कम भार वर्ग में उतरना पड़ा। जांगड़ा ने 2021 में पेशेवर मुक्केबाजी में पदार्पण किया था। एसक्विवेल को हराने से पहले जांगड़ा ने अपने छह मुकाबलों में से चार में नॉकआउट जीत दर्ज की है।

ब्रीफ न्यूज

अंडर-23 क्रिकेटरों के पास शराब मिलने की जांच कराएगा एससीए

नई दिल्ली,(एजेंसी)। सौराष्ट्र क्रिकेट संघ (एससीए) ने चंडीगढ़ से राजकोट वापस जाते हुए अपने अंडर-23 क्रिकेटरों के पास से शराब की बोतलें बरामद होने के बाद सोमवार को अनुशासनात्मक जांच शुरू करने का फैसला किया। एससीए सूत्रों के अनुसार यह घटना 25 जनवरी को सीके नायुडू ट्रॉफी में मेजबान चंडीगढ़ पर सौराष्ट्र की जीत के बाद हुई। क्रिकेटरों को जिस विमान में चढ़ना था उसके कार्गो क्षेत्र में बड़ी मात्रा में शराब पाई गई। बाद में चंडीगढ़ हवाईअड्डे पर अधिकारियों ने शराब जब्त कर ली। एससीए ने एक बयान में कहा, चंडीगढ़ में एक कथित घटना हुई है जिसे सौराष्ट्र क्रिकेट संघ के संज्ञान में लाया गया है। बयान के अनुसार, कथित घटना दुर्भाग्यपूर्ण और असहनीय है।

साबले, पारुल को अमेरिका में प्रशिक्षण की मिली मंजूरी

नई दिल्ली,(एजेंसी)। खेल मंत्रालय ने एशियाई खेलों के पदक विजेता लंबी दूरी के धावक अविनाश साबले और पारुल चौधरी के अमेरिका के कोलोराडो में प्रशिक्षण के अनुरोध को सोमवार को मंजूरी दे दी। सरकार ने इसके साथ ही पहलवानों अंशू मलिक और सरिता मोर को क्रमशः जापान और अमेरिका में प्रशिक्षण के लिए भी हामी भर दी। राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक साबले और पारूल कोच स्कॉट सिमंस की देख रेख में कोलोराडो स्प्रिंग्स में उच्च ऊंचाई वाले केंद्र में अभ्यास करेंगे।

19 मुक्केबाज स्ट्रैंड्जा मेमोरियल में लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली,(एजेंसी)। दो बार की विश्व चैंपियन निकहत जरीन और ओलंपिक कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन समेत 19 मुक्केबाज एक फरवरी से बुल्गारिया के सोफिया में शुरू होने वाले स्ट्रैंड्जा मेमोरियल मुक्कुबाजी टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। **भारतीय टीम- एलीट पुरुष:** बरुण सिंह शगोलशेम, अमित, सचिन, आकाश रमेश गोरखा, वंशज, रजत, आकाश, दीपक, अभिमन्यु लौरा, जुगनू, नवीन कुमार, सागर। **एलीट महिला:** निकहत जरीन, प्रीति, साक्षी, मनीषा, अरुंधति चौधरी, लवलीना बोरगोहेन।

रणजी ट्रॉफी: उप्र ने मुंबई को दो विकेट से हराया

मुंबई,(एजेंसी)। आर्यन जुयाल 76 रन और करण शर्मा नाबाद 67 रनों की अर्धशतकीय पारी की बदौलत उत्तर प्रदेश ने सोमवार ग्रुप बी के रोमांचक रणजी ट्रॉफी मुकाबले में 41 बार के चैंपियन मुंबई को दो विकेट से हरा दिया है। 195 रनों का पीछा करने उतरी उत्तर प्रदेश की शुरुआत खराब रही और उसने 16 के स्कोर पर अपने दो विकेट गंवा दिए थे। नियमित अंतराल पर विकेट गिरने के बाद आर्यन जुयाल एक छोर थामें मजबूती से खड़े रहे। जुयाल और करण ने तीसरे विकेट के लिए 104 रन की साझेदारी करके पारी को संभाला। वहीं करण शर्मा ने 67 रनों की की मदद से 69.5 ओवर में आठ विकेट पर 195 का स्कोर बनाते हुए दो विकेट से जीत दिला दी।

हैदराबाद टेस्ट में हार के बाद भारतीय क्रिकेट टीम को लगा बड़ा झटका

चोटिल राहुल और जडेजा दूसरे टेस्ट से बाहर

सरफराज खान, सौरभ कुमार और वॉशिंगटन सुंदर रिप्लेसमेंट के तौर पर स्क्वॉड में शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में मिली हार के बाद भारतीय टीम को बड़ा झटका लगा है। भारतीय टीम के ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा और विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल चोट के कारण दूसरे टेस्ट से बाहर हो गए हैं। बीसीसीआई ने इसकी जानकारी सोमवार को दी। दूसरे टेस्ट की शुरुआत 2 फरवरी से हो रही है। जडेजा को हैम्सट्रिंग इंजरी, जबकि राहुल को क्वाड्रिशेप्स इंजरी है।

बीसीसीआई ने बताया कि मेडिकल टीम दोनों की निगरानी कर रही है। इसी के साथ चयन समिति ने बतया की इन दोनों के रिप्लेसमेंट के तौर पर सरफराज खान, सौरभ कुमार और वॉशिंगटन सुंदर को भारतीय स्क्वॉड में शामिल किया गया है। सुंदर इंग्लैंड लायंस के खिलाफ भारत-ए टीम का हिस्सा थे। बीसीसीआई ने यह भी बताया कि आवेश खान भले ही भारतीय टीम का हिस्सा हों, लेकिन वह रणजी ट्रॉफी में अपनी मध्य प्रदेश टीम के साथ यात्रा करते रहेंगे और जरूरत पड़ने पर उन्हें स्क्वॉड में बुला लिया जाएगा।

जडेजा और राहुल ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट की पहली पारी में टीम इंडिया को संभालते हुए 87 रन की पारी खेली थी। हालांकि, इन पारियों के बावजूद टीम इंडिया पहला टेस्ट हार गई थी।पांच मैचों की सीरीज का दूसरा टेस्ट 2 फरवरी से विशाखापट्टनम में खेला जाएगा। इंग्लैंड ने सीरीज में 1-0 की बढ़त बना रखी है। भारत को हैदराबाद में 28 रन रन से हार झेलनी पड़ी थी। दिग्गज बल्लेबाज विराट कोहली ने निजी कारणों से शुरुआती टेस्ट से अपन नाम वापस ले लिया था।

भारतीय टीम

रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, यशस्वी जयसवाल, श्रेयस अय्यर, केएस भरत (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रविचंद्रन अश्विन, अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, मोहम्मद सिराज, मुकेश कुमार, जसप्रीत बुमराह (उपकप्तान), आवेश खान, रजत पाटीदार, सरफराज खान, वॉशिंगटन सुंदर, सौरभ कुमार। (टीम दूसरे टेस्ट के लिए)।

अनुभवी खिलाड़ियों के बिना कमजोर दिखेगी टीम

भारतीय टीम पहले ही पहला टेस्ट हारकर सीरीज में 0-1 से पिछड़ रही है। जडेजा, राहुल और विराट कोहली जैसे अनुभवी खिलाड़ियों के बिना यह टीम और भी कमजोर दिखेगी। कोहली ने पहले ही व्यक्तिगत कारणों से पहले दो टेस्ट से स्वयं को को अनुपलब्ध कर लिया था। राहुल की अनुपस्थिति में रजत पाटीदार टेस्ट में पर्दापण कर सकते हैं। वहीं जडेजा की जगह कुलदीप यादव या ऑलराउंड क्षमताओं के कारण सुंदर को जगह मिल सकती है। सुंदर ने चार टेस्ट मैचों में तीन अर्धशतकों के साथ 66 की औसत से रन बनाए हैं, और उनके नाम 50 की औसत से छह विकेट हैं। वहीं कुलदीप के नाम आठ टेस्ट में 21.55 की औसत से 34 विकेट हैं। उन्हें चटगांव में अपने आखिरी टेस्ट में आठ विकेट लेने पर प्लेयर ऑफ द मैच का खिताब से नवाजा गया था।

सरफराज खान को प्रथम श्रेणी डेब्यू के 9 साल बाद भारतीय टीम में मिली जगह

मुंबई के बल्लेबाज सरफराज खान ने दिसंबर 2014 में पहला प्रथम श्रेणी मैच खेला था। उसके नौ साल बाद उन्हें भारतीय टेस्ट टीम में जगह मिली। पिछले कुछ सालों में शानदारर प्रदर्शन के बाद भी उन्हें नजरअंदाज किया जा रहा था। जब भी टीम का चयन होता था और सरफराज नहीं रहते थे तो चयनकर्ताओं की आलोचना होती थी। सरफराज साल 2020 से निरंतर टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। सरफराज हाल के दिनों में लगातार भारत-ए के लिए खेल रहे हैं। उन्होंने दिसंबर में दक्षिण अफ्रीका ए के खिलाफ दो मैचों में 68 और 34 रन की पारी खेली थी। इस महीने इंग्लैंड लायंस के खिलाफ 96, चार, 55 और 161 रन बनाए हैं। सरफराज ने अब तक 45 प्रथम श्रेणी मैच खेल चुके हैं। इस दौरान 66 पारियों में उन्होंने 3912 रन बनाए हैं। सरफराज का औसत 69.85 है। उन्होंने 14 शतक और 11 अर्धशतक लगाए हैं। सरफराज के नाम एक तिहरा शतक भी है। उनका उच्चतम स्कोर नाबाद 301 रन है।

हैदराबाद टेस्ट में आचार संहिता उल्लंघन के लिए आईसीसी ने बुमराह को लगाई फटकार

भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को हैदराबाद टेस्ट के दौरान रन लेते समय इंग्लैंड के बल्लेबाज ओली पोप के रास्ते में आने और उसकी वजह से अनुचित शारीरिक संपर्क के कारण फटकार और एक डिमेरिट अंक लगाया गया है। बुमराह का अपराध आईसीसी आचार संहिता के तहत लेवल एक का अपराध है। उनके अनुशासन रिकॉर्ड में एक डिमेरिट अंक भी लगाया गया क्योंकि 24 महीने में यह उनका पहला अपराध है। बुमराह को अंतरराष्ट्रीय मैच के दौरान खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के लिये आईसीसी की आचार संहिता की धारा 2.12 के उल्लंघन का दोषी पाया गया। बुमराह ने सजा स्वीकार कर ली जिससे मामले की औपचारिक सुनवाई की जरूरत नहीं पड़ी। मैदानी अंपायरों पॉल रीफेल और क्रिस गाफानी, तीसरे अंपायर मराइस इरास्मस और चौथे अंपायर रोहन पंडित ने बुमराह पर आरोप लगाया था।

भारतीय पुरुष हॉकी टीम क्वार्टरफाइनल में पहुंची

हॉकी-5 एस विश्वकप: जमैका को 13-0 से रौंदा

मस्कट,(एजेंसी)। मनिंदर सिंह के चार गोल की मदद से भारतीय पुरुष हॉकी टीम सोमवार को एफआईएच हॉकी5एस पुरुष विश्वकप 2024 के अपने तीसरे और अंतिम पूल बी मैच में बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए जमैका को 13-0 से रौंदकर टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में पहुंच गई है।

मनिंदर ने दूसरे मिनट में दो गोल करने के बाद 28वें और 29वें मिनट में गोल दागे। ये चारों फील्ड गोल थे। इसके अलावा मनजीत (पांचवां और 24वां), राहील मोहम्मद (16वां और 27वां) और मनदीप मोर (23वां और 27वां) ने दो दो गोल किये जबकि उत्तम सिंह (पांचवां), पवन राजभर (नौवां) और गुरजोत सिंह (14वां) ने एक एक गोल किया। भारत ने पहले ही मिनट से आक्रामक हॉकी दिखाई और मनिंदर सिंह ने लगातार दो गोल दाग दिए। इसके बाद उत्तम और मनजीत के एक-एक गोल से पहले छह मिनट में स्कोर 4-0 हो गया। अच्छी बढत बनाने के बाद भी भारतीय खिलाड़ियों ने हमले बोलना बंद नहीं किया। पवन ओर गुरजोत ने गोल करके हाफटाइम तक स्कोर 6-0 कर दिया।

अंडर-19 वर्ल्डकप में सुपर-6 के मुकाबले तय

न्यूजीलैंड और नेपाल से होगी भारत की भिड़ंत

नई दिल्ली,(एजेंसी)। आईसीसी अंडर-19 वर्ल्डकप 2024 के सुपर-6 के मुकाबले तय हो गए हैं। सुपर-6 का आगाज 30 जनवरी से भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेले जाने वाले पहले मैच से होगा।

वहीं भारत दूसरे मैच में 02 फरवरी को नेपाल से भिडेंगा। ग्रुप स्टेज को पार कर 12 टीमें सुपर-6 में पहुंचने में कामयाब रही हैं। जिनमें भारत, पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, इंग्लैंड, बांग्लादेश, आयरलैंड, साउथ अफ्रीका, वेस्टइंडीज, श्रीलंका, जिम्बाब्वे और नेपाल शामिल हैं। वहीं चार टीमें अफगानिस्तान, नामीबिया, यूएसए और स्कॉटलैंड टूर्नामेंट से बाहर हो गई हैं। सुपर-6 में इन 12 टीमों को दो ग्रुप में बांटा गया है। ग्रुप स्टेज में जिन टीमों के बीच पहले मुकाबले खेले जा चुके हैं, वहीं अपने-अपने ग्रुप में सेम पोजिशन में रहने वाली टीमों के बीच सुपर-6 में मुकाबले नहीं खेले जाएंगे। दोनों ग्रुप की टॉप-3 टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वॉलीफाई करेगी। सुपर-6 में हर किसी टीम को इस तरह 2-2 मुकाबले ही खेलने को मिलेंगे, ऐसे में भारत का सामना न्यूजीलैंड और नेपाल से होगा। सभी मैच भारतीय समयानुसार 1.30 बजे शुरू होंगे।

डीन एल्गर ने कोहली संग पहली मुलाकात पर किया चौंकाने वाला खुलासा, बोले...

विराट ने पहले मुझ पर थूका फिर मांगी माफी

नई दिल्ली,(एजेंसी)। द. अफ्रीका के पूर्व कप्तान डीन एल्गर ने विराट कोहली के साथ हुई अपनी पहली मुलाकात को लेकर एक सनसनीखेज दावा किया है। एल्गर ने कहा कि जब वह 2015 में अपने पहले भारत दौरे पर आए थे, तब कोहली ने उनपर थूका था। उन्होंने कहा कि कोहली ने बाद में अपनी इस हकरत के लिए माफी मांगी थी।

बता दें कि एल्गर ने हाल ही में टेस्ट क्रिकेट से रिटायरमेंट लिया है। उन्होंने केपटाउन में भारत के खिलाफ अपना आखिरी टेस्ट खेला। उन्होंने 2012 में इंटरनेशनल डेब्यू किया और 86 टेस्ट में 5347 रन बनाए। एल्गर ने कहा, जब मैं बल्लेबाजी के लिए आया तो ऐसा लगा कि अश्विन और जड़ेजा के खिलाफ खुद को बचा रहा हूं और कोहली ने मेरे ऊपर थूक दिया। एल्गर ने दावा किया कि उन्होंने पलटवार करते हुए कोहली को गंदी गाली दी। मैंने कहा अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हें पूरी तरह से नेस्तनाबूद कर दूंगा। उन्होंने खुलासा किया कि कुछ साल बाद जब भारतीय टीम ने साउथ अफ्रीका का दौरा किया तो कोहली ने उनसे माफी मांगी। दो साल बाद साउथ अफ्रीका में उन्होंने मुझे फोन किया और पूछा कि क्या वह सीरीज के बाद ड्रिंक के लिए मेरे साथ चल सकते हैं। उन्होंने कहा कि वह अपनी हरकत के लिए माफी मांगना चाहते हैं। हमने 3 बजे तक ड्रिंक ली थी। यह तब की बात है जब वह ड्रिंक करता था। जाहिर है वह अब थोड़ा बदल गया है।

आंखों को बार बार छूने या रगड़ने से हो सकती हैं कई समस्याएं, एक्सपर्ट्स से जानिए इसके नुकसान

आंखें हमारे शरीर का सबसे सेंसिटिव हिस्सा माना जाता है। तो वहीं कुछ लोगों की आदत होती है कि वह हर समय आंखों को छूते रहते हैं और उनको रगड़ते रहते हैं। कई बार आंखों में खुजली होने पर हाथों से छू लेते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि ऐसा करने से आपकी आंखों को कई तरह का नुकसान हो सकता है। ऐसे में अगर आप भी बार-बार अपनी आंखों को छूते व रगड़ते हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि आंखों को बार-बार छूने या रगड़ने से क्या नुकसान हो सकते हैं।

कॉर्निया को हो सकता है नुकसान- आंखों को बार-बार रगड़ने से कॉर्निया को नुकसान पहुंचने की संभावना होती है। ऐसा करने पर कॉर्निया पर खरोंच भी आ सकती है। इससे आपको परमानेंट विजन प्रॉब्लम या स्कार टिशू के साथ अन्य कई समस्या हो सकती हैं। वहीं बार-बार आंखों को रगड़ने से आंखों में इंफेक्शन, एलर्जी या रेडनेस की समस्या हो सकती है। वहीं आंखों को रगड़ने पर अनचाहा दबाव पड़ने से वेगस नर्व भी एक्टिव हो सकती है। जो हार्ट की गति में भी कमी ला सकती है।

लाल हो सकती हैं आंखें- कई बार आंखों को तेज से रगड़ने पर उनकी कैपिलरी टूट सकती है। जिसकी वजह से आपकी आंखें लाल हो सकती हैं और आंखों में लाल थक्का बन सकता है। वहीं आंखों को ज्यादा रगड़ने से डार्क सर्कल्स भी हो जाते हैं। इसके कारण आंखों के आसपास की त्वचा का रंग डार्क हो जाता है।

सूजन की समस्या- आपको बता दें कि जो लोग दिनभर में कई बार आंखें रगड़ते हैं, उनको कंजक्टिवाइटिस नामक आंखों का रोग भी हो सकता है। क्योंकि आपके हाथ में कई सारे वायरस और बैक्टीरिया होते हैं। जो रगड़ने पर आंखों में चले जाते हैं। जिससे आंखों में सूजन हो सकती है और आंखें भी लाल हो सकती हैं। कंजक्टिवाइटिस की समस्या होने पर आंखों में दर्द हो सकता है और यह एक व्यक्ति से दूसरे में फैल सकता है। इसलिए आपको बार-बार आंखों को छूने व रगड़ने से बचना चाहिए। क्योंकि ऐसा करने पर आंख संबंधी कई समस्या हो सकती हैं। इससे आपको धुंधलापन हो सकता है और साथ ही अधिक लाइट के प्रति आंखें संवेदनशील भी हो सकती हैं।

29वां आईईएस डिजिआना इंटर प्रेस क्रिकेट

नगर निगम ने सेमीफाइनल में किया प्रवेश

भोपाल,(खेसं)। नगर निगम ने फॉल्कन को दो विकेट से हराकर 29वें आईईएस डिजिआना इंटर प्रेस क्रिकेट टूर्नामेंट 2024 के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। ओल्ड कैंपियन मैदान पर फाल्कन ने सात विकेट पर 165 रन बनाए।

इसमें शिवम चौबे ने 65 रनों की पारी खेली। वैभव कुमार ने 24 और अंकित ने 18 रन बनाए। नगर निगम की ओर से राजवीर वैद्य और फहाद हसन ने 2-2 विकेट लिए। जवाब में नगर निगम टीम ने 18.5 ओवर में आठ विकेट पर जरूरी रन बना लिए। इसमें बिट्टू ने 60 रनों की पारी खेली। रणवीर वैद्य ने 25 और रवि नरवारे ने 22 रन बनाए। फाल्कन की ओर से यतिश गुप्ता ने 3 तथा वैभव और हफीज ने 2-2 विकेट लिए। बिट्टू प्लेयर ऑफ द मैच चुने गए। इससे पहले खेले गए मैच में डिजिआना सात विकेट पर 82 रन बना सकी। मुकेश रावत ने 37 रन बनाए। जवाब में पीपुल्स ने जरूरी रन 10 ओवर में दो विकेट पर बना लिए। संजय शर्मा ने 35 रन बनाए। वह मानसरोवर प्लेयर ऑफ द मैच और मुकेश रावत आरएनटीयू वैल्यूएबल प्लेयर चुने गए। उन्हें बालभवन स्कूल के संचालक उमर अली और बीडीसीए के उपाध्यक्ष डॉ. सुशील सिंह ठाकुर ने पुरस्कृत किया।

खेलो इंडिया **महेश राठौर और नंदनी वर्मा ने कुश्ती में जीते कांस्य**

यूथ गेम्स में मप्र को मिले 2 पदक

भोपाल,(खेसं)। तमिलनाडू में आयोजित खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2023 में मध्यप्रदेश की ओर से कुश्ती बालक वर्ग में महेश राठौर ने 71 किग्रा. फ्री स्टाइल स्पर्धा में और बालिका वर्ग में नंदनी वर्मा ने 49 किग्रा. फ्री-स्टाइल स्पर्धा में 1-1 कांस्य पदक जीते।

मप्र 6 स्वर्ण, 9 रजत और 10 कांस्य सहित कुल 25 पदक जीतकर 12वें पायदान पर हैं। बालक वर्ग के फाइनल मुकाबला (71 किग्रा. फ्री स्टाईल) में मध्यप्रदेश के महेश राठौर और उत्तरप्रदेश के मुकुल के बीच खेला गया। जिसमें महेश ने अपने खेल प्रतिभा और कौशल का बेहतर प्रदर्शन कर उत्तर प्रदेश के खिलाड़ी मुकुल को अंक नही देने के लिए मजबूर कर दिया। अंततः महेश राठौर ने मुकुल को 1-10 के अंतराल से बुरी तरह परास्त कर कांस्य पदक अपने नाम किया। बालिका वर्ग कुश्ती (49 किग्रा. फ्री स्टाईल) में मध्यप्रदेश की नंदनी वर्मा ने बेहतर खेल प्रदर्शन करते हुए गुजरात की खिलाड़ी चौधरी उर्मिला को 4-2 से परास्त कर कांस्य पदक अर्जित किया। दोनो विजेता खिलाड़ियों को खेल मंत्री विश्वास कैलाश सारंग और संचालक खेल रवि कुमार गुप्ता ने प्रशंसा करते हुए अपनी बधाई दी हैं। खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2023 का आयोजन तमिलनाडु के विभिन्न शहर चैन्नई, कोयंबटूर, मदुरई एवं त्रिची में आयोजित किया जा रहा है। खेलो इंडिया यूथ गेम्स 2023 में कुल 26 विधाऐं खेली जाएगी, जिसमें से मप्र द्वारा कुल 20 विधाओ में 195 खिलाड़ी एवं 58 स्पोर्ट स्टाफ कुल 253 सदस्य प्रतिभागिता कर रहे हैं।

Entertainment News

मुनव्वर फारूकी ने जीता बिग बॉस का खिताब

लंबे इंतजार के बाद कलर्स टीवी की रियलिटी शो बिग बॉस सीजन 17 को उसका विनर मिल गया है। मुनव्वर फारूकी ने सीजन 17 की ट्रॉफी अपने नाम कर ली है। हालांकि अंकिता लोखंडे को शुरू से जीत का दावेदार माना जा रहा था, लेकिन कम वोट की वजह से अंकिता एलिमिनेट हो

गई। अभिषेक कुमार रनर अप रहे।

मुनव्वर फारूकी को मिले 50 लाख प्राइज मनी

सलमान खान के शो बिग बॉस सीजन 17 की ट्रॉफी मुनव्वर फारूकी के घर डोंगरी गई है। इसके साथ ही इनामी धनराशि के तौर पर मुनव्वर को 50 लाख रुपये और एक हुंडई क्रेटा कार मिली है। आपको बता दें कि मुनव्वर फारूकी एक स्टैंड-अप कॉमेडियन, यूट्यूबर और रैपर हैं। वो कंगना रनौत के रिएलिटी शो लॉक अप के विजेता भी रह चुके हैं।

फ्लाइट में भूलकर भी साथ नहीं ले जानी चाहिए ये चीजें, वरना बढ़ सकती है मुश्किल

हर किसी का फ्लाइट में सफर करने का सपना होता है। हांलाकि फ्लाइट का सफर बस या ट्रेन के मुकाबले थोड़ा महंगा जरूर होता है। वहीं फ्लाइट में सफर के दौरान आपको कई तरह के रूल्स भी फॉलो करने होते हैं। इस दौरान कदम-कदम पर चेकिंग होती है और कुछ गलत होने पर फौरन यात्री को रोक लिया जाता है। ऐसे में जो लोग फ्लाइट में सफर करते हैं, उनको इन सारे रूल्स के बारे में जानकारी होगी। लेकिन जो पहली बार सफर कर रहे हैं, उनको इन नियमों के बारे में जानकारी होनी चाहिए। आपको बता दें कि फ्लाइट में सफर करने के दौरान यात्री के पास मौजूद सामान की चेकिंग की जाती है। इनमें से कुछ सामान जो आप ले जा सकते हैं। तो वहीं कुछ सामान ऐसा भी होता है, जो आप अपने साफ फ्लाइट में लेकर नहीं जा सकते हैं। ऐसे में अगर आप भी पहली बार फ्लाइट में सफर करने जा रहे हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि फ्लाइट में सफर के दौरान आप किन चीजों को अपने साथ लेकर नहीं जा सकते हैं।

नुकीली चीज- फ्लाइट में सफर करने के दौरान साथ में ले जाने वाले कैबिन बैगेज में किसी तरह की नुकीली या फिर शॉर्प चीज नहीं रखनी चाहिए। इस दौरान आप नेल कटर, चाकू, कटर या फाइलर जैसा सामान लेकर नहीं जा सकते हैं। क्योंकि अगर आपके पास कोई नुकीली या फिर शॉर्प चीज होती है, तो चेकिंग के दौरान वह एयरपोर्ट ऑथोरिटी के पास जमा कर ली जाती है।

शराब या फिर तरल पदार्थ- बता दें कि आप फ्लाइट में दूध या अन्य लिक्विड आइटम आप 100 मिलीलीटर तक ही ले सकते हैं। वहीं अगर आप एक शहर से दूसरे शहर कोई अन्य लिक्विड आइटम या फिर शराब आदि लेकर सफर नहीं कर सकते हैं। दवाओं के अलावा आप अन्य किसी तरह का लिक्विड वाला पदार्थ नहीं रख सकते हैं।

लैपटॉप- अक्सर लोग फ्लाइट के सफर में लैपटॉप साथ लेकर जाते हैं। लेकिन आपको बता दें कि एक यात्री को सफर में सिर्फ एक ही लैपटॉप ले जाने की अनुमति होती है। हर एयरलाइन्स के अपने नियम होते हैं। तो ऐसे में सफर से पहले आप एयरलाइन्स की गाइडलाइन्स को अच्छे से पढ़ना न भूलें।

विस्फोटक चीजें- फ्लाइट में सफर करने के दौरान आप अपने बैग में गैस वाला सामान जैसे माचिस, लाइटर या अन्य विस्फोटक चीजें भूलकर भी न रखें। क्योंकि चेकिंग के दौरान इन सारे सामानों को निकाल लिया जाएगा। वहीं अन्य कोई गंभीर सामान मिलने पर आपको समस्या का भी सामना करना पड़ सकता है।

Bollywood Update

फिल्मफेयर अवार्ड के लिए फैंस के साथ-साथ सितारे भी बहुत एक्साइटेड रहते हैं। ऐसे में कई बड़े सितारों को रेड कार्पेट पर देखा गया। सभी का अंदाज बहुत कमाल का नजर आया। सारे स्टार्स खुश नजर आ रहे हैं। आइये जानते हैं फिल्मफेयर अवार्ड के लिए किस सितारे ने कैसा लुक लिया।

फिल्मफेयर में इन सितारों ने लगाया ग्लैमर का तड़का

सारा अली खान फिल्मफेयर अवार्ड में सारा अली खान को ब्लैक कलर के स्लीट ड्रेस में देखा गया। आउटफिट साथ एक्ट्रेस ने हाई बन किया है, जो बहुत खूबसूरत लग रहा है। साथ ही ड्रेस का शिमरी पार्ट लुक को बहुत कमाल का बना रहा है।

तृप्ति डिमरी

नेशनल क्रश तृप्ति डिमरी को भी फिल्मफेयर अवार्ड के रेड कार्पेट पर देखा गया। इस दौरान वो सिल्वर और ब्लैक कलर के आउटफिट में कहर ढाती दिखाई दीं।

करीना कपूर

बॉलीवुड एक्ट्रेस करीना कपूर हमेशा शानदार लुक में दिखाई देती हैं। अवार्ड नाइट में भी वो कमाल की साड़ी और ब्लाउज में कहर ढाती दिखीं।

मृणाल ठाकुर

मृणाल ठाकुर भी ग्लैमरस अंदाज में नजर आईं। उनका आउटफिट बहुत स्टाइलिश नजर आया, जो उनके लुक को और भी खास बना रहा था।

तेजस्वी प्रकाश

बिग बॉस विजेता और फैंस की फेवरेट नागिन तेजस्वी प्रकाश भी स्टाइलिश अवतार में दिखीं। फैंस को उनका यह लुक बहुत पसंद आया। बता दें कि फैशन गेम में तेजस्वी हमेशा आगे रहती हैं।

जरीन खान

ब्लैक और सिल्वर कलर की शिमरी ड्रेस में जरीना खान भी काफी खूबसूरत लुक में पहुंची। इस दौरान उनका हेयरस्टाइल भी काफी कमाल का दिखाई दिया।

विक्रांत मैसी

12वीं फेल फिल्म के बाद से विक्रांत फैंस के फेवरेट बन गए हैं। रेड कार्पेट पर उनका डैशिंग अंदाज देखने के लिए मिला। अभिनेता पोज देते वक्त खुश दिखाई दिए।

रणबीर और आलिया ने जीता बेस्ट एक्ट्रेस और एक्टर का अवॉर्ड

हर साल की तरह इस साल भी 69वें फिल्मफेयर अवॉर्ड 2024 का आगाज हुआ। इस रेड कार्पेट नाइट को गुजरात के गांधीनगर में आयोजित किया गया था। इसकी शुरुआत 27 जनवरी से हुई थी और 28 जनवरी को मुख्य श्रेणी में पुरस्कारों का वितरण हुआ। इस दौरान 12वीं फेल, एनिमल और रॉकी और रानी की प्रेम कहानी जैसी कई फिल्मों का बोलबाला रहा। 69वें फिल्मफेयर अवॉर्ड्स में बॉलीवुड की हिट जोड़ी रणबीर कपूर और आलिया भट्ट को बेस्ट एक्टर और बेस्ट एक्ट्रेस के अवॉर्ड से नवाजा गया। बतौर कपल ये दोनों के लिए ही खास पल रहा है। आलिया भट्ट को साल 2023 में रिलीज हुई फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के लिए बेस्ट एक्ट्रेस अवॉर्ड का मिला। बता दें कि शबाना आजमी को भी फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी के लिए फीमेल कैटेगरी में सपोर्टिंग एक्ट्रेस का अवॉर्ड मिला है। एक तरह जहां आलिया बेस्ट एक्ट्रेस बनीं तो वहीं पति रणबीर कपूर ने भी बाजी मारी। ब्लॉकबस्टर फिल्म एनिमल के लिए रणबीर कपूर को बेस्ट एक्टर अवॉर्ड मिला। बता दें, साल 2019 में भी इस कपल ने बेस्ट एक्टर और बेस्ट एक्ट्रेस का अवॉर्ड जीता था।

सूर्या संग बड़े पर्दे पर नजर आएंगी जाह्नवी

बॉलीवुड एक्ट्रेस जाह्नवी कपूर इन दिनों कई प्रोजेक्ट्स को लेकर सुर्खियों में बनी हुई हैं। जान्हवी जल्द ही कोराटाला शिवा द्वारा

निर्देशित साउथ सुपरस्टार जूनियर एनटीआर की देवरा से अपना पहला साउथ डेब्यू देने जा रही हैं, जिसका दमदार टीजर रिलीज होने के बाद दोनों स्टार्स के फैंस फिल्म को लेकर एक्साइटेड नजर आ रहे हैं। आपको बता दें कि इस फिल्म में जाह्नवी थंगम के किरदार में नजर आएंगी और सैफ अली खान फिल्म के मुख्य विलेन का किरदार निभाएंगे। हालांकि, किन्हीं कारणों के चलते फिल्म की रिलीज डेट को बढ़ा दिया गया है। पहले ये फिल्म अप्रैल, 2024 में रिलीज होने वाली थी, लेकिन अब फिल्म इस साल के आखिर में रिलीज हो सकती है। इसी बीत जान्हवी कपूर को लेकर एक और खबर सामने आ रही है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जान्हवी अब जल्द ही साउथ सुपरस्टार सूर्या के साथ बड़े पर्दे पर नजर आ सकती हैं। ये दोनों का साथ में पहला कोलेब्रेशन होने वाला है। दोनों राकेश ओमप्रकाश मेहरा के निर्देशन में बन रही एक पीरियड ड्रामा फिल्म कर्ण में नजर आ सकती है।

ऋतिक-दीपिका की फिल्म ने हॉलीवुड फिल्मों को दी मात

बॉलीवुड इंडस्ट्री की चर्चित फिल्म पठान के बाद निर्देशक सिद्धार्थ आनंद का जलवा एक बार फिर से दिखाई दे रहा है। सिद्धार्थ की नई फिल्म, ऋतिक रोशन एवं दीपिका पादुकोण स्टारर फाइटर एक बार फिर से धमाके कर रही है। पहले दिन उम्मीद से धीमी शुरुआत करने वाली फाइटर ने दूसरे दिन से ऐसी गति पकड़ी कि इसका वीकेंड कलेक्शन बहुत जबरदस्त हो गया। भारत में ऋतिक की फिल्म ने पहले वीकेंड में 120 करोड़ रुपये से अधिक कलेक्शन कर लिया है। आपको बता दें कि ऋतिक -दीपिका की फिल्म केवल भारत में ही कमाल नहीं कर रही, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी फिल्म ने एक बड़ा कमाल किया है।

अमिताभ बच्चन ने साउथ वर्सेस बॉलीवुड बहस पर तोड़ी चुप्पी

साल 2022 से ही बॉलीवुड और साउथ की फिल्मों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिल रही है। जहां साल 2022 में साउथ का जलवा रहा, तो वहीं 2023 में बॉलीवुड ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल दिया। साउथ और बॉलीवुड के बीच चल रही टक्कर पर अब अमिताभ बच्चन ने अपनी राय रखी है। अमिताभ बच्चन ने भी अब इसो लेकर आपनी राय रखी है। अमिताभ बच्चन ने साउथ और बॉलीवुड की फिल्मों को लेकर खुलकर बोला है। अमिताभ बच्चन के बयान के बाद एक बार फिर साउथ वर्सेस बॉलीवुड को लेकर बहस शुरू हो गई है। तो चलिए जानते हैं अमिताभ बच्चन ने इस मुद्दे पर क्या राय रखी है। अमिताभ बच्चन ने भी साउथ वर्सेस बॉलीवुड की बहस पर अपनी राय रखी है। अमिताभ बच्चन ने अभी हाल ही में पुणे में सिम्बायोसिस फिल्म फेस्टिवल में हिस्सा लिया। इस दौरान अमिताभ बच्चन सिनेमा को लेकर बात करते हुए दिखे। अमिताभ बच्चन ने कहा कि रीजनल सिनेमा काफी अच्छा कर रहा है, वो भी हमारी हिंदी फिल्मों की तरह मूवी बना रहे हैं। लेकिन वो सिर्फ ड्रेसिंग बदल रहे हैं, जिस से वो ज्यादा अच्छे दिख रहे हैं। इस दौरान अमिताभ बच्चन ने मलयालम और तमिल सिनेमा की तारीफ भी की। अमिताभ बच्चन ने आगे कहा कि हमारी सभी फिल्मों की स्टोरी में कही न कहीं दीवार, शक्ति और शोले है। बिग बी ने बॉलीवुड की अलोचना करने वालों को भी खरी-खोटी सुनाई। बिग बी ने कहा कि ये कहना गलत है कि उनकी फिल्में चल रही हैं, हमारी नहीं।

मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह समारोह में कुल 236 का हुआ विवाह, 4 मुस्लिम जोड़ो का हुआ निकाह

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत सामुहिक विवाह समारोह का आयोजन आरटीआई मैदान, नवीन स्टेडियम में आयोजित किया गया। शादी समारोह का शुभारम्भं मुख्य विकास अधिकारी संतोष कुमार वैश्य एवं अध्यक्ष नगर पालिका परिषद गाजीपुर सरिता अग्रवाल ने दीप प्रज्ज्वलित एवं मॉ सरवस्ती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया। सामुहिक विवाह योजना में जनपद के सभी विकास खण्डो, नगर पालिका व नगर पंचायत के कुल 236 जोड़ो का सामुहिक विवाह पूरे विधि विधान के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे 04 मुस्लिम जोड़ो का भी निकाह तथा 232 हिन्दू जोडों का विवाह सम्पन्न हुआ। नगर पालिका अध्यक्ष सरिता अग्रवाल एवं मुख्य विकास अधिकारी संतोष कुमार वैश्य ने नव विवाहित जोडो के खाते में ऑनलाईन माध्यम से बटन दबाकर 35-35 हजार रुपए की धनराशि वधुवो के खाते में हस्ताक्षरित किये तथा नव दाम्पत्य को विवाह प्रमाण पत्र एवं पौधरोपण हेतु फलदार वृक्ष

का पौध दिया गया। सामुहिक विवाह के अवसर पर उपस्थित समस्त जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने नव विवाहित वर-वधुओं को उनके वैवाहिक जीवन की मंगल कामना करते हुए शुभकामना दी। मुख्य अतिथि अध्यक्ष नगर पालिका परिषद गाजीपुर सरिता अग्रवाल ने नव विवाहित वर-वधुओ को आर्शिवचन देते हुए कहा कि नव विवाहित जोड़ो ने 7 फेरे लेकर एक साथ रहने का जो संकल्प लिया है उसे आजीवन निर्वहन करे। मुख्यमंत्री जी ने इस योजना के माध्यम से गरीब, मजदूर एवं असहाय परिवारो को इसका लाभ दिया है। उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द मोदी एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा है कि हर बिटियॉ का हाथ पीला करने का संकल्प मै लेता हूँ । हर मॉ बाप का सपना होता है कि उसकी बेटी का विवाह हो इस हेतु प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री जी ने उनके सपनो को पूरा करने के लिए सामूहिक विवाह को भव्यता प्रदान कर रहे है। उन्होने कहा कि समुहिक विवाह योजना के अन्तर्गत हर एक बेटियों को 35 हजार रुपए सरकार सीधे उनके खाते में देती है। इसके अलावा अन्य वैवाहिक सामाग्री भी प्रदान की जाती है। उन्होने कहा कि बेटी लक्ष्मी होती है। उन्होने कहा कि बेटियों के पढ़ाई, सुरक्षा, सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से बेटियों के जीवन को सशक्त बनाने का काम सरकार द्वारा किया जा रहा है। बेटियों के नौकरी के लिए सरकार तत्पर है। उन्होने कहा कि प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री आपके सम्पूर्ण विकास के लिए लगातार कार्य कर रहे है। मुख्य विकास अधिकारी ने नव विवाहित जोड़ो को बधाई दी तथा मुख्यमंत्री सामुहिक विवाह योजना की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि सामुहिक विवाह योजना कार्यक्रम महिलाओं के प्रति समाज में फैली कुरितियॉ को खत्म करने के लिए एक बहुत ही सार्थक प्रयास है। सामुहिक विवाह योजना महिला सशक्तिकरण एवं जिनके घरो मे बेटिया है उनके लिए बेहतर प्रमाण है कि बेटियां किसी के उपर बोझ नही है। इस अवसर पर सभी दाम्पत्य जोड़ो को पौधरोपण हेतु पौधे उपलव्ध कराये गये तथा प्रत्येक जोड़ो को अपने सालगीरह पर प्रत्येक वर्ष एक-एक पौध लगाने की अपील की गई। इस अवसर पर परियोजना निदेशक राजेश यादव, जिला विकास अधिकारी सुभाष सरोज, जिला समाज कल्याण अधिकारी राम नगीना यादव, जिला सूचना अधिकारी राकेश कुमार, एवं अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी एवं जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

भेलूपुर में बेकाबू ट्रैक्टर ने स्कूटी सवार नौजवान को रौंदा, दर्दनाक मौत

प्रखर वाराणसी। जिले के भेलूपुर थाना क्षेत्र के बड़ी पाटिया इलाके में मंगलवार की सुबह अनियंत्रित ट्रैक्टर की चपेट में आकर स्कूटी सवार युवक की मौत हो गई। हादसे के बाद ट्रैक्टर लेकर भाग रहे चालक को स्थानीय लोगों ने पीछा कर पकड़ लिया। चालक की जमकर पिटाई करने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस को सौंप दिया। मृतक की पहचान आयुष कुमार मोदनवाल (18) निवासी सिगरा थाना क्षेत्र के लल्लापुरा के रूप में हुई। घटनास्थल पर मौजूद लोगों का आरोप रहा कि ट्रैक्टर चालक जल्दीबाजी के कारण स्कूटी में टक्कर मारते हुए युवक को कुचल दिया। घटना के बाद मौके पर स्थानीय लोगों ने बड़ी पटिया बजरडिहा जाने वाले मार्ग को जाम कर दिया। सूचना पर मौके पर पहुंचे प्रभारी निरीक्षक भेलूपुर विजय कुमार शुक्ला ने सभी को समझा-बुझा कर जाम खत्म कराया। इसके बाद शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। घटना की सूचना मिलने पर मृतक के पिता राजेश कुमार मोदनवाल मौके पर पहुंचे। वह महमूरगंज इलाके में मिठाई की दुकान चलाते हैं। आयुष मंगलवार की सुबह स्कूटी से मिठाई पहुंचाने के लिए बजरडिहा जाने के लिए निकला था। घटना के बाद परिजनों में कोहराम मच गया। मृतक दो भाइयों में छोटा था। बड़ा भाई अनुज मोदनवाल, मां सीमा मोदनवाल का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ट्रैक्टर और चालक को कब्जे में लेकर आगे की कार्रवाई में जुटी है।

कार्यक्षेत्र को लेकर उत्पन्न समस्या से परेशान किन्नरों ने पुलिस अधीक्षक से लगाई न्याय की गुहार

प्रखर संतकबीरनगर। जिले में कार्यक्षेत्र को लेकर किन्नर निकिता पांडेय की टीम ने मंगलवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचकर एक गुट पर बाहरी होने के साथ धमकी और परेशान करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कार्रवाई न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। वहीं एसपी सत्यजीत गुप्ता को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। आपको बता दें किन्नर निकिता पांडेय द्वारा दी गई तहरीर में बताया कि हम लोग संतकबीर नगर जिले के निवासी हैं, जो जन्म से ही ट्रांसजेंडर हैं। लोगों की खुशियों में शरीक होकर बधाई मांगकर अपना जीविकोपार्जन करते हैं। लेकिन किरन कीन्नर उर्फ लक्ष्मण जो बरदहिया बाजार की निवासी हैं, वह नेपाल की रहने वाली हैं। बड़ी घटना की जताई आशंका उनके

द्वारा यहां के अन्य किन्नरों को सामाजिक तत्वों को लगाकर परेशान करती हैं और लगातार जान से मारने की धमकी दी जा रही है। किन्नर निकिता पांडेय और किन्नर खुशबू किन्नर का कहना है कि अगर ऐसे लोगों पर कार्रवाई नहीं हुई तो इसकी सारी जिम्मेदारी किरण और उनके शिष्यों की होगी। उनका आरोप है कि इन लोगों का एक आपराधिक इतिहास हैं, पुलिस इस पर कार्रवाई करें, नहीं तो किसी न किसी दिन कोई बड़ी घटना हो सकती है। इसी बात को ले कर हमलोग आज पुलिस अधीक्षक से न्याय की गोहार लगाने आए हैं और हमे पूरा उम्मीद ही नहीं विश्वास हैं की हमे न्याय मिलेगा। ज्ञापन देते समय निकिता पांडे,नैना राठौर,सिमरन, माही तथा दीपिका आदि किन्नर समाज के लोग मौजूद रहे।

निःशुल्क बैग पाकर खिले बच्चों के चेहरे

प्रखर वाराणसी। बच्चे भगवान का रूप होते हैं, उनके बीच आना एक सुखद अनुभूति प्रदान करता है, भविष्य में भी इन बच्चों की पढ़ाई एवं संसाधन के बीच सेतु बनना संस्था की प्राथमिकता होगी ' उक्त बातें रोटरी क्लब वाराणसी (वरुणा) की अध्यक्ष डा राजकिशोरी उपाध्याय ने संस्था द्वारा प्राथमिक विद्यालय दान्दूपुर हरहुआ में बच्चों को निःशुल्क बैग वितरण कार्यक्रम में कही 'कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही पूर्व विभागध्यक्ष संगीत, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी /आचार्य भरत मुनि सम्मान उ प्र तथा काशी की लता नाम से विख्यात प्रो0 डा मंगला कपूर ने अपने जीवन के संघर्ष को व्याख्यायत कर बच्चों विशेषकर बच्चियों को

शिक्षा एवं अपने जीवन में संघर्ष से मुकाम हासिल करने के लिए अभिप्रेरित किया ' कार्यक्रम की शुरूआत बच्चों द्वारा स्वागत गीत, सरस्वती वंदना तथा अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण, दीपदान से किया गया' सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा विद्यालयी व्यवस्था, हरियाली से खासा प्रभावित अतिथियों द्वारा प्रबंधन तथा शिक्षकों की भूरि भूरि प्रशंसा की गयी। कार्यक्रम में सर्व श्री डा पीयूष पाण्डेय, वरिष्ठ दंत चिकित्सक, इमरान जफर संस्था सचिव,प्रदीप सोनी, कैलाश कपूर, राज बहादुर सिंह, पूर्व प्रधान, नीतू सिंह, रंजना यादव, मधु सिंह, लीलावती, विभा सिंह, अनूप कुमार आदि ने विचार रखा । अतिथियों का स्वागत प्रधानाध्यापक व राज्य शिक्षक सम्मान '2019 से सम्मानित डॉ शैलेन्द्र बिक्रम सिंह स्मृति चिन्ह व अंगवस्त्र देकर किया।

कोहरे के कारण बैगनार व स्विफ्ट में हुई टक्कर, शिक्षिका समेत 8 घायल

प्रखर पिंडरा वाराणसी। वाराणसी जौनपुर मार्ग पर पिंडरा बाईपास स्थित कथौली कट के पास सामने से आ रही स्विफ्ट डिजायर कार व बैगनार कार की कोहरे के कारण जोरदार टक्कर हो गई। जिससे बैगनार में सवार पिंडरा ब्लॉक की चार शिक्षिकाएं गम्भीर रूप से हो गई। वही दूसरे कार में सवार एक महिला समेत 3 लोग घायल हो गए। घटना मंगलवार की सुबह पौने 10 बजे के लगभग की है। मौके पर पहुँचे स्थानीय नागरिक व पुलिस ने घायलों को एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। बताया जाता है कि वाराणसी शहर के विभिन्न स्थानों पर रहने वाली शिक्षिकाएं एक कार शेयरिंग कर प्रतिदिन आती जाती हैं। मंगलवार को भी पिंडरा स्थित प्राथमिक विद्यालय प्रथम की अध्यापिका अंजना सिंह 40 वर्ष, अनीता 36 वर्ष, कम्पोजिट विद्यालय बरवा की अध्यापिका स्नेहप्रभा सिंह 40 वर्ष, प्राथमिक विद्यालय सहमलपुर की समृद्धि सिंह 35 वर्ष घर से स्कूल आ रही थी। तभी कथौली कट के पास ज्यो ही पिंडरा बाजार की तरफ आगे बढ़ी तभी जौनपुर की तरफ से तेज गति से आ रही स्विफ्ट डिजायर ने टक्कर मारने के बाद पलट गई । उसके बाद कोहराम मच गया। आनन फानन में आसपास के लोग व फूलपुर पुलिस समीप स्थित जे जे अस्पताल ले गई। जहाँ सभी का प्राथमिक उपचार किया गया। जिसमें अंजना सिंह को सिर व कंधे पर गंभीर चोटें आईं। अन्य को हल्की चोट आई। सभी को प्राथमिक उपचार के बाद रेफर कर दिया गया। चिकित्सक डॉ दिनेश मिश्रा ने बताया कि सभी की हालत खतरे से बाहर है। वही स्विफ्ट कार में बच्चे के साथ बैठे दम्पत्ति घायल हो गए। पति अरविंद पाल 40 वर्ष तथा पत्नी सुदामा 37 वर्ष व पुत्र रबिश पाल 13 वर्ष को भी चोटें आईं। सुदामा का बायां पैर टूट गया। घटना के बाद दोनों कार

के ड्राइवर भाग निकले।शिक्षिकाओ के घायल होने की सूचना पर खण्ड शिक्षा अधिकारी देवीप्रसाद दुबे व अन्य शिक्षक मौके पर पहुचे। इंस्पेक्टर फूलपुर संजय मिश्रा ने हाइवे पर घटना के बाद लगे जाम व सड़क पर पलटी स्विफ्ट डिजायर को हटवाया। बताते है कि स्विफ्ट सवार रागडगंज पुलिस लाइन निवासी अंबेडकर नगर वाराणसी शहर में खरीददारी करने जा रहे थे। तभी घटना हुई।

ट्रैक्टर पलटने से 2 मजदूरों की मौत, 10 घायल

प्रखर चंदौली। नौगढ़ तहसील क्षेत्र के गोडटुटवा गांव के पास सोमवार की शाम औरवाटाड़ से वनतुलसी काटकर मजदूर वापस हिनौताघाट जाते समय अचानक टैक्टर पटल गई। जहां 2 लोगों की मौत हो गई। वही 10 लोग लहुलुहान होकर घायल हो गए। आनन फानन में घायलों को जिला संयुक्त चिकित्सालय चकिया लाया गया। जहां सीएमएस अजय सिंह गौतम की देखरेख में सभी चिकित्सको ने प्राथमिक उपचार करना शुरू किया। दो लोगों को चिकित्सको ने मृतक घोषित कर दिया। वही बाकी घायलों का इलाज खबर लिखने जाने तक चल रहा हैं। खबर लगते ही चकिया विधायक कैलाश आचार्य, चेयरमैन गौरव श्रीवास्तव, सीएमओ डॉ वाई के राय, एसडीएम नौगढ़ आलोक, चकिया एसडीएम कुंदन राज कूपर व सीओ नौगढ़ जिला संयुक्त चिकित्सालय पहुंचकर मृतक के परिजनों को ढांढस बंधाते हुए घायलों का हाल चाल जाना।मिली जानकारी के अनुसार हिनौताघाट व जमसौत के दर्जनों मजदूर वनतुलसी काटने टैक्टर से औरवाटाड़ की जंगल में गए हुए थें। वापस सोमवार की शाम घर जाते समय गोडटुटवा गांव के समीप अचानक टैक्टर पटल गया। जिसमें चीख पुकार के शुरू हो

गया। आनन फानन ने इसकी सूचना पुलिस को देते हुए सभी घायलों को जिला संयुक्त चिकित्सालय चकिया लाया गया। जहां चिकित्सकों ने घायलों का प्राथमिक उपचार करना शुरू किया।जहां चिकित्सकों ने बसंत पुत्र भोला निवासी जससोती 50 वर्ष व अजय कुमार पुत्र शिवा जी हिनौताघाट 26 वर्ष को मृतक घोषित किया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेते हुए आगे की कार्रवाई में जुट गई। घायल प्यारे 66 वर्ष, श्याम 40 वर्ष, छब्बी 55 वर्ष, रामदेय 50 वर्ष, छोटू 15 वर्ष निवासी जससोती, राम प्रकाश 55 वर्ष, आतिश 20 वर्ष, शिव प्रसाद 25 वर्ष, गोविंद 30 वर्ष, रामदेव 30 वर्ष घायल हुए। जिनका खबर लिखे जाने तक इलाज चल रहा हैं। हादसे की खबर लगते हुए चकिया विधायक कैलाश आचार्य, चेयरमैन गौरव श्रीवास्तव, सीएमओ डॉ वाई के राय, एसडीएम नौगढ़ आलोक, चकिया एसडीएम कुंदन राज कूपर व सीओ नौगढ़, व्यापारी नेता कैलाश जायसवाल, जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि डाक्टर कुंदन जिला संयुक्त चिकित्सालय पहुंचकर मृतक के परिजनों को ढांढस बंधाते हुए घायलों का हाल चाल जाना। विधायक ने जिलाधिकारी निखिल टी फूंडे से फोन पर वार्ता किया। विधायक ने कहा कि घर हिनौताघाट व जमसोती गांव में जाकर परिजनों से मिलूंगा।

जिले में स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान का शुभारम्भ

प्रखर कुशीनगर। कुष्ठ न कोई अभिशाप है और न ही पूर्व जन्मों का पाप। यह एक बीमारी है जिसकी समय से पहचान हो जाए तो इलाज संभव है । बीमारी की पहचान और इलाज में देरी से यह दिव्यांगता का रूप ले सकता है जिससे जीवन बोझ बन जाता है । उक्त बातें मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ सुरेश पटारिया ने स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान का शुभारम्भ करते हुए मंगलवार को कहीं । उन्होंने सीएमओ कार्यालय सभागार में महात्मा गांधी के चित्र पुष्पांजलि अर्पित तथा श्रद्धांजलि सभा भी की। वहीं पर डीएम का संदेश भी सुनाया। भेदभाव का अंत करे सम्मान को गले लगाए थीम के साथ जनपद के सभी स्वास्थ्य इकाइयों और सरकारी विभागों में जनजागरूकता की शपथ भी ली गयी । रोग से घृणा करें, रोगी से नहीं का संदेश दिया गया. शान्तनु इंटरमीडिएट कालेज रविंद्रनगर घूस के छात्रों

द्वारा रैली निकाल कर स्पर्श कुष्ठ जागरूकता अभियान एवं कुष्ठ पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया। यह अभियान 13 फरवरी 2024 तक चलेगा। जिला कुष्ठ अधिकारी डॉ. रामदास कुशवाहा ने कुष्ठ रोग को जनपद से समाप्त करने के लिए सभी लोगो से अपील की तथा कुष्ठ रोग के भ्रांतियों के बारे में बताया की समाज मे अभी भी कुछ लोगों को ये अंधविश्वास है कि वंशानुगत कारणों, अनैतिक आचरण, अशुद्ध रक्त, खान-पान की गलत आदतें जैसे सूखी मछली खाने, पूर्वपापकर्म आदि कारणों से कुष्ठ रोग होता है जो कि पूर्णतया गलत तथ्य है। इन सभी भ्रांतियों को मिटाने के लिए इस अभियान को चलाया जा रहा है जिला कुष्ठ परामर्शदाता डॉ. विनोद कुमार मिश्र ने बताया कि चमड़ी के रंग से हल्के रंग का सुन्न दाग धब्बा जिसमें पसीना न आता हो, कुष्ठ रोग हो सकता है । हाथ पैर के नसों में मोटापन, सूजन, झनझनाहट, तलवों में सुनापन, पूरी क्षमता से काम न कर पाना, चेहरा, शरीर व कान पर गांठ, हाथ, पैर और उंगुली में टेढ़ापन कुष्ठ रोग के लक्षण हैं। ऐसे लक्षण दिखने पर तुरंत आशा कार्यकर्ता और सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ) से सम्पर्क कर जांच व इलाज कराना चाहिए।

पासी बेलिसाई (पीबी) कुष्ठ रोग होने पर मरीज छह महीने की दवा में ठीक हो जाता है जबकि मल्टी बेसिलाई(एमबी) कुष्ठ रोग होने पर साल भर तक दवा चलती है । कुष्ठ का सम्पूर्ण इलाज सरकारी अस्पतालों में ही उपलब्ध है। शरीर में सुन्न दाग धब्बों की संख्या जब पांच या इससे कम होती है और नसों में कोई दिक्कत नहीं होती हैं तो ऐसे रोगी को पीबी कुष्ठ रोगी कहा जाता है जिसका इलाज छह माह में ही हो जाता है। अगर शरीर पर दाग धब्बों की संख्या पांच से अधिक है और नसें भी प्रभावित हुई हों तो यह मल्टी बेसिलाई एमबी कुष्ठ रोग होता है और इसका भी इलाज बारह महीने में हो जाता है।कुष्ठ रोग माइक्रो बैक्टीरियम लेप्रे नामक जीवाणु के कारण होता है । कुष्ठ रोगी से भेदभाव करने की बजाय उसे प्रेरित करें कि वह इलाज कराए ।

गांधी के मूल्यों को संजो कर रखने की जरूरत : प्रो. ए0 के0 त्यागी

प्रखर वाराणसी। महात्मा गांधी जी के दर्शन और विचारों को याद रखने की नहीं बल्कि अपने जीवन में आत्मसात करने की जरूरत है। मानवीय मूल्यों को कैसे संजो कर रखना है, जीवन में ये कैसा होना चाहिए, इसकी सीख महात्मा गांधी से लेने की जरुरत हैं। उक्त विचार मंगलवार को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के गांधी अध्ययन पीठ सभागार में महात्मा गांधी के पुण्यतिथि पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. ए० के० त्यागी ने व्यक्त किया। उन्होंने कहा यदि हम गांधी जी के दर्शन की बात करें तो ये सारी बातें आज भी प्रासंगिक है। जैसे-जैसे समय बढ़ता जा रहा है। इसके मूल्य और भी बढ़ते जा रहे है। कार्यक्रम का शुभारम्भ मानवीकीय संकाय के बापू कक्ष से प्रारम्भ से गांधी जी के प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पण एवं रामधुन के साथ हुआ। जहाँ पहली बार गांधी जी ने विश्राम किया था। इस कार्यक्रम की संयोजीका डॉ. निशा सिंह ने कहा कि बापू जीवन के संचार हैं। जिनके बिना आज भारतीय संस्कृति कि कल्पना अधूरी सी लगती है। गांधी सामजिक जीवन के एक देव हैं, जिनका स्मरण मात्र ही सांस्कृतिक बोध की तरफ ले जाती है। अगली कड़ी में प्रो. अनुराग कुमार ने कहा गांधी जीवन नहीं दर्शन हैं। इसलिए उनके विरोधी भी आज उनके विचारों के छात्रछाया में अपना जीवन जी रहे हैं। इसके बाद गांधी अध्ययन पीठ सभागार में मंचकला विभाग की तृप्ति, आस्था, अंजलि ने 'वैष्णव जन ते' की प्रस्तुति से अपनी स्वरांजली अर्पित की एवं हारमोनियम पर सोमेन्द्र आर्य ने साथ दिया। कार्यक्रम की अगली कड़ी में तनुश्री ने 'कौन ठगवा नगरीया' तो दिव्यांशी,समृद्धि, प्रिया ने 'पायो जी मैंने' भजन की प्रस्तुति दी। अंत में शिवम, श्रेया, मंजरी, हर्षलाल, हिमांशु, सोमेन्द्र ने प्रचलित रामधुन 'रघुपति राघव राजा राम' की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत में दो मिनट का मौन रखकर साबरमती के संत को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

संक्षिप्त खबरें

गरीबों में हुआ कंबल का वितरण

प्रखर पिंडरा वाराणसी। भीषण ठंड को देखते हुए मंगारी बाजार स्थित अति प्राचीन हनुमान मंदिर के परिसर में असहाय लोगों को कंबल का वितरण क्षेत्र पंचायत सदस्य श्याम मोहन गुप्ता बाबू के नेतृत्व में वाराणसी शहर के जाने-माने समाजसेवी व रक्तबीर कुलदीप कनौजिया के हाथों कुल 60 कंबल का वितरण किया गया। इस मौके पर राहुल सिंह पटेल भोला, शाहरुख हाशमी, जितेंद्र गुप्ता जीतू, अवगत उपाध्याय, योगेंद्र पटेल, निलेश जायसवाल, विजय मोदनवाल, छोटे गोड़, विशाल जायसवाल, विवेक सेठ सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

लोसोपा ने गांधी के पुण्यतिथि पर उनके आदर्शों को किया याद

प्रखर पिंडरा वाराणसी। लोकजन सोशलिस्ट पार्टी ने बाबतपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय पर आज महात्मा गांधी की पुण्यतिथि को शहीद दिवस के रूप में मनाते हुए उनके आदर्शों को याद किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ वीरेंद्र कुमार विश्वकर्मा ने गांधी जी के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर नमन करते हुए कहा महात्मा गांधी स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे देश के इस महान सपूत ने न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। बापू के आदर्श एक समृद्ध व करुणामय समाज का निर्माण करने के लिए प्रेरित करते हैं। महात्मा गांधी के सत्य अहिंसा और प्रेम के संदेश ने देश ही नहीं विदेश के लोगों को भी बहुत प्रेरित किया। शहीद दिवस हमें महात्मा गांधी के विचारों की भी याद दिलाता है। उनके विचार आज भी राष्ट्रीय एकता को दशार्ते हैं। उन्होंने बिना हथियार उठाये अंग्रेजों को भारत से बाहर खड़े दिया था उनके विचार ही उनकी आक्रमण और ढाल दोनों थे। उन्होंने पराई पीर को जानने और दूर करने का धर्म अपनाया था। महात्मा गांधी का जीवन आदर्श और विचार सदैव प्रासंगिक रहेंगे। इस मौके पर प्रमुख रूप से श्रीमती सुनीता राजभर मालती चौहान सविता विश्वकर्मा राधे श्याम राजभर मिथलेश पाल राजकुमार गुप्ता कैलाश विश्वकर्मा महेश पटेल गुलाब यादव बंटी सिंह राजू श्रीवास्तव प्रवीण मिश्रा उमेश विश्वकर्मा आदि सैकड़ो संख्या में लोग मौजूद रहे।

भाजपा विधायक व पूर्व मंत्री डॉ. नीलकंठ तिवारी ने किया गायक माही मृदुल के गीत मारो घर बिटिया भई का विमोचन

प्रखर पूर्वांचल वाराणसी। बेटियों को समर्पित गायक माही मृदुल के म्यूजिक एलबम बिल्वड बेटियां के चौथे गीत "मारो घर बिटिया भई" का विमोचन दक्षिणी शहर वाराणसी के विधायक व पूर्व मंत्री डॉ. नीलकंठ तिवारी ने किया` ये गाने माही मृदुल के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं।

ज्ञानवापी मस्जिद लिखा बोर्ड हटाकर ज्ञानवापी मंदिर करने की मांग को लेकर पर्यटन निदेशालय व मुख्यमंत्री को भेजा पत्र

प्रखर वाराणसी। गोदौलिया चौक मार्ग पर उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा लगाए गए ज्ञानवापी मस्जिद लिखा बोर्ड को एएसआई रिपोर्ट आने के बाद बोर्ड हटाकर ज्ञानवापी मंदिर लिखा बोर्ड लगाने की मांग को लेकर राष्ट्रीय हिन्दू दल संगठन ने उत्तर प्रदेश पर्यटन निदेशालय लखनऊ व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र भेजा है। रोशन पाण्डेय ने कहा कि काशी आने वाले भारी संख्या में श्रद्धालु पर्यटकों में मस्जिद लिखा इस बोर्ड से भ्रम की स्थिति पैदा हो रही है और एएसआई रिपोर्ट में ज्ञानवापी मंदिर होने की पुष्टि के बाद भी इस बोर्ड को नहीं हटाने से श्रधालुओं की धार्मिक भावना आहत होती है इस मौके पर राष्ट्रीय हिन्दू दल के प्रदेश अध्यक्ष बबलू अग्रहरी ने कहा कि जबतक मामला कोर्ट में है और कोर्ट अपना निर्णय नहीं दे देता तब तक इसे ज्ञानवापी मस्जिद कहना गलत है इसे अविलंब हटाएं जाएं।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट https://prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं